श्रावण मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 207, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 27 अगस्त 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

भारत के वैज्ञानिकों पर विश्व को नाजः मोदी

चांद पर लैंडर जहां उतरा, वह 'शिवशक्ति पॉइंट' कहलाएगा, 23 अगस्त को हर साल भारत नेशनल स्पेस डे मनाएगा

वैज्ञानिकों की खुशी का ठिकाना नहीं

बेंगलुरुः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार सुबह इसरो के कमांड सेंटर में चंद्रयान-3 टीम के वैज्ञानिकों से मिले। यहां उन्होंने 3 घोषणाएं कीं। पहली- 23 अगस्त को हर साल भारत नेशनल स्पेस डे मनाएगा। दूसरा- चांद पर लैंडर जिस जगह उतरा, वह जगह शिव-शक्ति पॉइंट कहलाएगी। तीसरी- चांद पर जिस जगह चंद्रयान-2 के पद चिन्ह हैं, उस पॉइंट का नाम 'तिरंगा' होगा। मोदी ने 45 मिनट के भाषण में कहा, 'मैं साउथ अफ्रीका में था, फिर ग्रीस के कार्यक्रम में चला गया, लेकिन मेरा मन पूरी तरह आपके साथ ही लगा हुआ था। मेरा मन कर रहा था आपको नमन करूं। लेकिन मैं भारत मेंङ्घ (रुंधे गले से) भारत में आते हीङ्घ जल्द से जल्द आपके दर्शन करना चाहता था।' मोदी बोले, 'मैं आपको सैल्यूट करना चाहता था। सैल्यूट आपके परिश्रम को.. सैल्यूट आपके धैर्य को.. सैल्यूट आपकी लगन को सैल्यूट आपकी जीवटता को... सैल्यूट आपके जज्बे को।' बाद में शनिवार दोपहर पीएम मोदी बेंगलुरु से दिल्ली पहुंचे। यहां उन्होंने पालम एयरपोर्ट पर एक जनसभा को संबोधित किया।

सुबह 7.30 बजे कमांड सेंटर पहुंचे, इसरो चीफ की पीठ थपथपाईः प्रधानमंत्री सुबह 7 बजकर 30 मिनट पर बेंगलुरु के इसरो के कमांड सेंटर पहुंचे। यहां वे चंद्रयान-3 की टीम के वैज्ञानिकों से मिले। इसरो कमांड सेंटर पर इसरो चीफ एस सोमनाथ ने पीएम मोदी को गुलदस्ता देकर स्वागत किया। पीएम ने सोमनाथ को गले लगाया और पीठ थपथपाई। उन्हें चंद्रयान 3 मिशन के सफल होने पर बधाई दी। इस दौरान उन्होंने टीम के सभी वैज्ञानिकों के साथ ग्रुप फोटो भी खिंचवाई।

चंद्रयान की सफल लैंडिंग परः आप देश को जिस ऊंचाई पर लेकर गए, ये कोई साधारण सफलता नहीं। अनंत अंतरिक्ष में भारत के वैज्ञानिक सामर्थ्य का शंखनाद है। इंडिया इज ऑन द मून, वी हैव अवर नेशनल प्राइड प्लेस्ड ऑन मून। हम वहां पहुंचे जहां कोई नहीं पहुंचा था। हमने वो किया जो पहले कभी किसी ने नहीं किया था। ये आज का भारत है निर्भीक भारत, जुझारू भारत। ये वो भारत है जो नया सोचता है नए तरीके से सोचता है। जो डॉर्क जोन में जाकर भी दुनिया में रोशनी की किरण फैला देता है।

वैज्ञानिकों की सराहना मेंः मेरी आंखों के सामने 23 अगस्त का वो दिन, वो एक-एक सेकेंड बार-बार घूम रहा, जब टचडाउन कन्फर्म हुआ। जिस तरह देश में लोग उछल पड़े वो दृश्य कौन भूल सकता है। वो पल अमर हो गया। वो पल इस सदी के प्रेरणादायक पलों में एक है। हर भारतीय को लग रहा था कि विजय उसकी अपनी है। ये सब मुमकिन बनाया है आप सब ने। देश के मेरे वैज्ञानिकों ने ये मुमकिन बनाया है। मैं आप सबका जितना गुणगान करूं वो कम है। मैं आपकी जितनी सराहना करूं वो कम है। विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर परः दुनिया को दिखाने का काम भारत ने किया है।

भारत की साइंटिफिक स्पिरिट परः आज पूरी दुनिया भारत की साइंटिफिक स्पिरिट का, हमारी टेक्नोलॉजी का, हमारे साइंटिफिक टेंपरामेंट का लोहा मान चुकी है। हमारा मिशन जिस क्षेत्र को एक्सप्लोर करेगा, उससे सभी देशों के लिए मून मिशन के नए रास्ते खुलेंगे। यह चांद के रहस्यों को खोलेगा।

नेविगेशन सिस्टम क्षेत्र के उप महाप्रबंधक एफबी सिंह ने कहा कि यह अद्भुत था। उन्होंने इसरो वैज्ञानिकों को बहुत प्रेरणा दी है। हमें उनके जैसे नेता की जरूरत है। इसरो के पास प्रतिभा की कोई कमी नहीं है और हमें एक ऐसे नेता की जरूरत है जो प्रेरणा दे सके। वर्तमान प्रधानमंत्री ऐसा कर रहे हैं और वह हमें अच्छा मार्गदर्शन दे रहे हैं।

अहमदाबाद में अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (रअउ) के निदेशक नीलेश एम. देसाई ने कहा कि ढट मोदी का भाषण बहुत प्रेरक था। प्रधानमंत्री ढट की घोषणाएं भी हम सभी के लिए प्रेरणादायक रहीं। उन्होंने 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस घोषित किया, यह हम जैसे अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के

लिए बहुत बड़ी बात है। जिस बिंदु पर चंद्रयान-3 लैंडर उतरा, उसे "शिव शक्ति" बिंदु के रूप में घोषित किया गया। इन घोषणाओं ने हम सभी को अंतरिक्ष क्षेत्र में देश के लिए काम करने के लिए खुद को फिर से समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सूर्य का अध्ययन करने के लिए हमने आदित्य-एल1 मिशन की योजना बनाई है और यह तैयार है। 2 सितंबर को इसके लॉन्च होने की संभावना है। वैज्ञानिक और प्रज्ञान रोवर की टीम की सदस्य रीमा घोष ने कहा कि यह अद्भुत था, उन्होंने (प्रधानमंत्री) हमारे सभी प्रयासों की सराहना की। मैं प्रज्ञान टीम में थी और मेरे लिए प्रज्ञान बच्चे की तरह है और वह चंद्रमा पर छोटे कदम रख रहा है, यह एक अद्भुत अनुभव है। जैसा कि उन्होंने (ढट) कहा कि आकाश की कोई सीमा नहीं है, हम और अधिक चुनौतीपूर्ण मिशन लेकर आएंगे। योजना में कई अन्य मिशन भी हैं जिसमें मंगल लैंडिंग मिशन, आदित्य-एल1 मिशन भी शामिल हैं, जिन्हें जल्द ही लॉन्च किया जाएगा।

इसरो वैज्ञानिक पद्मावती ने कहा कि उन्होंने (ढट मोदी) चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट को शिवशक्ति नाम दिया है और चंद्रयान-2 के लैंडिंग स्थल को 'तिरंगा' नाम दिया है। यह हमारे लिए बहुत उत्साहजनक है कि वह आज यहां आए और ऐसी प्रेरक बातें की। वास्तव में यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि वह हमारे प्रधानमंत्री हैं।

इसरो की वरिष्ठ वैज्ञानिक रेड्डी सरिता ने कहा कि हमें गर्व महसूस हो रहा है, यह हम सभी के लिए एक अच्छा अनुभव था।

काशी ज्ञान कर्तव्य और सत्य का खजानाः मोदी

वाराणसीः वाराणसी में शनिवार को जी-20 कल्चर वर्किंग ग्रुप की बैठक के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 मिनट का वीडियो संदेश दिया। इसमें उन्होंने कहा- मुझे खुशी है कि हम वाराणसी में मिल रहे हैं। जो मेरा संसदीय क्षेत्र है। काशी न केवल दुनिया का सबसे पुराना जिंदा शहर है। बल्कि सारनाथ जहां भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, वो यहां से दूर नहीं है। यह वास्तव में भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक राजधानी है। पीएम ने कहा, "4उ... कल्चर, क्रिएटिविटी, कॉमर्स और कॉरपोरेशन से दुनिया आगे बढ़ेगी। मुझे खुशी है कि आपके समूह ने 'कल्चर यूनाइट्स ऑल' अभियान शुरू किया है। यह 'वसुधैव कुटुंबकम'...'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की भावना को ही समाहित करता है।"

'काशी ज्ञान कर्तव्य और सत्य का खजाना': प्रधानमंत्री ने कहा, "मैं आपके द्वारा जी20 एक्शन प्लान को सॉलिड परिणामों के साथ शेप देने में निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका की भी सराहना करता हूं। यह हमें एक समावेशी और शांतिपूर्ण भविष्य के निर्माण के लिए सांस्कृतिक शक्ति का इस्तेमाल करने में सक्षम बनाएगा। काशी को ज्ञान, कर्तव्य और सत्य का खजाना माना जाता है। भारत का मंत्र है 'विरासत भी, विकास भी'।" बैठक में जी-20 कल्चरल वर्किंग ग्रुप के प्रस्तावों पर चर्चा की गई। इनमें मामूली संशोधनों के बाद 20 सूत्रीय दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए गए। सांस्कृतिक क्षेत्र को सम्मिलित करते हुए वैश्विक भागीदारी का दावा किया गया।

संस्कृति सिर्फ हमारी पहचान का हिस्सा नहींः केंद्रीय संस्कृति मंत्री जी.किशन रेड्डी ने एक ऐसे भविष्य की आशा व्यक्त की जहां संस्कृति सिर्फ हमारी पहचान का हिस्सा नहीं होगी। बल्कि विकास, सामाजिक समावेश और वैश्विक सद्भाव के लिए एक प्रेरक शक्ति होगी। चार प्राथमिकता वाले क्षेत्र समावेशी और टिकाऊ भविष्य के हमारे दृष्टिकोण की आधारशिला हैं। इनमें सभी की प्राथमिकता एक ऐसी दुनिया को दशार्ती है जो सांस्कृतिक रूप से विविध है। फिर भी एकीकृत है। एक ऐसी दुनिया जहां सांस्कृतिक विरासत अतीत का स्तंभ और भविष्य का मार्ग दोनों है।

त्रिची एयरपोर्ट पर 5.89 करोड़ का सोना जब्त

दिल्ली। कस्टम विभाग की टीम ने सोने की तस्करी के बड़े मामले का खुलासा करते हुए 5.89 करोड़ से ज्यादा का सोना जब्त किया है। इसे तस्करी करके त्रिची एयरपोर्ट पर लाया गया था। दिल्ली मुख्यालय से कस्टम के प्रवक्ता ने शनिवार को बताया कि यह कार्रवाई 23 अगस्त को की गई थी, जिसमें कस्टम की टीम ने 9 किलो 725 ग्राम गोल्ड बरामद किया है। सोने की कीमत 5 करोड़ 89 लाख 65 हजार 707 रुपये बताई जा रही है। इसी मामले में आगे की जांच के बाद कस्टम की टीम ने 6 लाख कैश तथा काफी संख्या में इलेक्ट्रॉनिक्स एविडेंस भी बरामद किया है।

ब्लू क्रांति की ओर बढ़ चुका है देशः परषोत्तम रुपाला

नई दिल्ली। केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन और डेयरी उद्योग मंत्री परषोत्तम रुपाला ने कहा है कि तटीय जल कृषि विधेयक नौ अगस्त को लोक सभा और राज्य सभा में पास हो गया। इसके परिणामस्वरूप अब तटीय जल कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियों में व्यापक सुधार होगा। इसके साथ साथ युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार मिलेगा।संसद टीवी के साथ संवाद कार्यक्रम में शनिवार को परषोत्तम रुपाला ने कहा कि देश का तटीय क्षेत्र आठ हजार किलोमीटर में फैला हुआ है और दो लाख किलोमीटर का इकॉनामिक जोन है। यहां पर तीन करोड़ से अधिक लोग तटीय जल कृषि से जुड़े हुए हैं। हालांकि पहले इस ओर किसी का ध्यान नहीं था लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मत्स्य, पशुपालन और डेयरी उद्योग को स्वतंत्र मंत्रालय का दर्जा देकर इस सेक्टर में कायाकल्प कर दिया। ऐसे में हालात सुधरने लगे और इन वर्षों में हालात काफी बदले हैं। आंकड़ों के अनुसार देश के कुल मछली उत्पादन में अंतदेर्शीय मछली और एक्वाकल्चर का योगदान 75 फीसदी है । वर्ष 1950 में अंतदेर्शीय मछली उत्पादन जहाँ दो लाख टन था और वर्ष 2014 तक यह बढ़कर 61 लाख टन हुआ, यह आंकड़ा 2022-23 में बढ़कर 131 लाख टन पर पहुंच गया है। अर्थात आजादी के समय से लेकर मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले तक इस क्षेत्र में जितना उत्पादन बढ़ा, उससे कहीं ज्यादा बढ़ोतरी पिछले नौ वर्षों में ही दर्ज हुई है। उन्होंने बताया कि तटीय जल कृषि विशेषकर मत्स्य उत्पादन पांच साल से लगातार आठ प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रहा है।

मेवात की ब्रजमंडल धार्मिक यात्रा 28 को फिर निकाली जाएगी

नई दिल्ली। हिंसक हमलों के कारण अधूरी रह गई मेवात की ब्रज मंडल धार्मिक यात्रा अब 28 अगस्त को फिर निकाली जाएगी। सहयोगी संस्था के रूप में विश्व हिंदू परिषद के नेता भी इसमें उपस्थित रहेंगे। 52 पाल के अध्यक्ष अरुण जैलदार ने आज यहां पत्रकारों को संबोधित करते हुए यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि जी 20 के महत्वपूर्ण आयोजन और मेवात में दंगाइयों पर पुलिस की सघन कार्यवाही को देखते हुए प्रशासन के साथ चर्चा करके हम इसके आकार-प्रकार पर विचार कर सकते हैं। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ सुरेंद्र कुमार जैन ने कहा कि इस बार की यात्रा का आयोजन मेवात के हिंदू समाज ने ही आग्रह पूर्वक करने का निश्चय किया है। इसलिए विश्व हिंदू परिषद मेवात से बाहर के हिंदू समाज को वहां न बुलाकर संपूर्ण प्रदेश के लिए एक कार्यक्रम की घोषणा कर रही है। उस दिन प्रदेश के हर प्रखंड में एक शिव मंदिर में दोपहर 11:00 सामूहिक जलाभिषेक का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा और वहां का हिंदू समाज इस कार्यक्रम में भाग लेगा।

इसरो का फोकस अब गगनयान पर

नई दिल्लीः चंद्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो गगनयान प्रोजेक्ट पर फोकस कर रहा है। अक्टूबर के पहले या दूसरे सप्ताह में इस मिशन के तहत एक स्पेसक्राफ्ट अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इसका मकसद यह तय करना है कि मानव मिशन के समय यह स्पेसक्राफ्ट उसी रूट से लौटे जिससे गया है। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने 26 अगस्त को एक निजी चैनल की कॉन्क्लेव में यह बात कही।

व्योममित्र इंसानों जैसी सारी एक्टिविटीज कर सकेगीः

जितेंद्र सिंह ने बताया कि स्पेसक्राफ्ट की टेस्टिंग सफल होने

के बाद महिला रोबोट व्योममित्र को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। व्योममित्र इंसानों जैसी सारी एक्टिविटीज कर सकेगी। उन्होंनेकहा- अगर सब कुछ ठीक रहा तो हम इससे आगे बढ़ेंगे और मानव मिशन भेजेंगे। उन्होंने कहा- अंतरिक्ष यात्रियों को वापस लाना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उन्हें भेजना।

ये है भारत का मिशन गगनयानः इसरो अपने पहले ह्यूमन स्पेस-फ्लाइट मिशन गगनयान के तहत साल के आखिरी में दो शुरूआती अंतरिक्ष मिशन भेजेगा। इसमें एक मिशन पूरी तरह से मानवरहित होगा। दूसरे मिशन में व्योममित्र नाम की एक महिला रोबोट भेजी जाएगी। शुरूआती मिशन का मकसद यह तय करना है कि गगनयान रॉकेट जिस मार्ग से जाए उसी मार्ग से सुरक्षित भी लौटे यानी इनके कामयाब होने के बाद ही 2024 में इंसानों को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। तीसरे मिशन की स्पेस फ्लाइट में दो इंसानों को भेजा जा सकेगा।

ये लोग 7 दिन तक अंतरिक्ष में रहेंगे। मिशन के लिए भारतीय वायुसेना के चार पायलट्स को रूस भेजकर स्पेस ट्रेनिंग सेंटर में ट्रेनिंग भी दी गई है। स्पेस में जाने वाले इन एस्ट्रोनॉट्स को गगनॉट्स कहा जाएगा। भारतीय वायुसेना के चार पायलट्स में एक ग्रुप कैप्टन हैं। बाकी तीन विंग कमांडर हैं, जिन्हें गगनयान मिशन के लिए तैयार किया जा रहा है।

गार्बेज फ्री सिटी बनाने के लिए निकायों में 30 तक होगा सेल्फ असेसमेंट

लखनऊः योगी सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता एवं गार्बेज फ्री सिटी बनाने का उद्देश्य प्राप्त करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक नगरीय निकाय में सेल्फ असेसमेंट की व्यवस्था को लागू करने का निर्णय लिया है। इसके अंतर्गत गार्बेज फ्री सिटी बनाने के लिए प्रत्येक नगरीय निकाय में 30 अगस्त तक सेल्फ असेसमेंट होगा। 4 सितंबर को इसकी समीक्षा होगी। नगरीय निकायों में अप्रैल 2023 में मॉक असेसमेंट आयोजित किया गया था, जिसने स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 के अंतर्गत गार्बेज फ्री सिटी के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को निरंतर बनाये रखने की आवश्यकता को रेखांकित किया था।

गूगल फॉर्म के माध्यम से किया जाएगा सेल्फ असेसमेंटः नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने बताया कि सेल्फ असेसमेंट डेडिकेटेड गूगल फार्म के माध्यम से किया जायेगा, जो गार्बेज फ्री सिटी के मूल्यांकन के प्रत्येक पैरामीटर के मानक को परिभाषित करेगा। यह फार्म नगरीय निकाय द्वारा भरा जायेगा। पूर्ण

सेल्फ असेसमेंट रिपोर्ट को जमा करने की अंतिम तिथि 30 अगस्त की शाम 5 बजे तक है। उन्होंने समस्त अधिशासी अधिकारियों से निर्धारित समय सीमा में इसे सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। चार सितंबर (सोमवार) को सुबह 11 बजे सेल्फ असेसमेंट की समीक्षा की जायेगी। सेल्फ असेसमेंट रिपोर्ट को सही ढंग से पूर्ण करने एवं निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत उसे जमा करने की कार्यवाही अनिवार्य रूप से सुनिश्चित की जाएगी।

यूपी सरकार द्वारा लिया गया प्रो एक्टिव स्टेपः प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने बताया कि नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत के इस उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सेल्फ असेसमेंट की व्यवस्था प्रारंभ करने हेतु प्रो एक्टिव स्टेप लिया गया है। इसका उद्देश्य नगरीय निकायों को सशक्त करना है, जिससे वह अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने में सक्रिय भागीदारी कर सके एवं उन क्षेत्रों की पहचान कर सकें, जिन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस" की घोषणा खुशी की बात : शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने चन्द्रयान-3 की सफलता के दिन 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में घोषित किया है। यह हम सब के लिए खुशी की बात है।शाह ने शनिवार को कहा कि 23 अगस्त भारत के लिए एक ऐतिहासिक दिन है, क्योंकि यह उसके चंद्र मिशन चंद्रयान 3 की उपलब्धि का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज इसे "राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस" के रूप में घोषित किया, ताकि इस मिशन के पीछे भारत के वैज्ञानिकों की सफलता की कहानी हर आने

वाली पीढ़ी तक पहुंचे। यह निर्णय भारतीय वैज्ञानिकों को "तिरंगे" के गौरव को ऊंचा रखते हुए अंतरिक्ष खोज के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। शाह ने कहा कि एक सच्चा नेता हर परिस्थिति में अपने लोगों के साथ खड़ा रहता है।

खबर संक्षेप

कांवरिया शिविर में तोड़फोड़ की पुलिस से शिकायत

झूंसी। थाने के निकट जीटी रोड पर कांवरियों के लिए बनाए गए शिविर में कुछ युवकों ने घुस कर वहा मौजूद लोगों से गालीगलौज करते हुए मारपीट की आरोप है कि अराजकतत्वों ने शिविर में रखे सामान भी तोड़ दिए। मामले की शिकायत पुलिस से की गई है। प्रयागराज सहयोगी कांवरिया महासंघ द्वारा 29 वर्षो से वाराणसी प्रयागराज मार्ग झूंसी पुलिया के पास कांवरियों की सुविधा के लिए शिविर लगाता चला आ रहा है। शुक्रवार की रात क्षेत्र के ही तीन युवक शिविर में घुस कर शिविर की देखरेख में लगे लोगो से गाली गलौज करने लगे और अंदर रखा सामान तोड़ने लगे। विरोध करने पर मारपीट भी की। मामले की लिखित शिकायत संस्था के कोषाध्यक्ष सुशील कौशल ने पुलिस से की है।

ट्रैक्टर से कुचलकर तीन बेटियों के पिता की हुई मौत, कोहराम

शुक्रवार देर रात्रि गंजरिया में हुआ हादसा, सुबह पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेजा शव

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के गंजरिया गांव में शुक्रवार की देर रात्रि 10:30 बजे के आसपास ट्रैक्टर से कुचलकर तीन बेटियों के पिता की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक घनश्याम सिंह (32) पुत्र धर्मराज सिंह निवासी भोगन थाना कोरांव बीती शुक्रवार की रात्रि 9:00 बजे के आसपास घर से कोरांव बाजार के लिए निकले थे। अभी भी वह कोरांव थाना क्षेत्र के गंजरिया गांव में पहुंचे थे कि कोरांव बाजार की ओर से आ रहे ट्रैक्टर ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी और ट्राली के पहिए के नीचे आ जाने से कुचलकर मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। मृतक दो भाइयों में बड़ा था। छोटे भाई पवन कुमार के द्वारा पुलिस को दी गई तहरीर में बताया गया है कि कोरांव बाजार जाते समय गंजरिया गांव में ट्रैक्टर से कुचलकर मौत हो गई है। मृतक की पत्नी पुष्पा देवी का ऑपरेशन हुआ है। जिनकी भी हालत दयनीय बताई जा रही है। मृतक तीन पुत्री का पिता था जिन में क्रमशः आभा सिंह (12) नव्या सिंह (10) दिव्या (8) हैं। हादसे को लेकर पारिवारीजनों का रो-रो पर बुरा हाल था। सुबह सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

कार चालक शिक्षक को आई झपकी कार लेकर ट्रैक्टर ट्राली में जा घुसा

गंभीर रूप से हुआ घायल, अस्पताल में भर्ती

करछना। कोहडार घाट मार्ग पर नरैना गांव के समीप सड़क के किनारेखड़े खाली ट्रैक्टर में शनिवार को कार अनियंत्रित होकर जा भिड़ी जिससे कार चालक शिक्षक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वही लोगों की ओर से पास के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। करछना थाना क्षेत्र के चनैनी गांव निवासी अमित कुमार शुक्ल पुत्र अधिवक्ता राकेश कुमार शुक्ल कोरांव के टीकर प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक हैं। और अपने निजी कार से प्रतिदिन विद्यालय के लिए आवा गमन करते हैं। शनिवार को विद्यालय से लौटते समय नरैना गांव के समीप सड़क के किनारे दाहिनी ओर खड़े एक ट्रैक्टर में कार अनियंत्रित होकर जा भिड़ी। जिससे कार चालक शिक्षक अमित कुमार शुक्ल गंभीर रूप से घायल हो गए। जिसे उन्हें पास एक निजी अस्पताल में जुटे लोगों की ओर से भर्ती कराया गया है। वहीं कार भी जहां क्षतिग्रस्त हो गई है। वहीं खड़े ट्रैक्टर में कुछ नुकसान हुआ है। इस बाबत घायल शिक्षक के पिता अधिवक्ता राकेश कुमार शुक्ल ने बताया कि अमित कुमार शुक्ल इन दिनों कुछ अस्वस्थ चल रहे हैं । और दवा के साथ स्कूल के लिए प्रतिदिन आते जाते हैं। उन्होंने बताया किविद्यालय से शनिवार दोपहर में कार से लौटते समय अमित कुमार शुक्ल को नीद की झपकी अचानक आ गई। और नरैना गांव के पास सड़क के किनारे दाहिनी ओर खड़े-खाली ट्रैक्टर में उनकी कार अनियंत्रित होकर जा भिड़ी। जिससे वे घायल हो गए। प्रत्यक्ष दर्शियों के मुताबिक कार तेज रफ्तार में भी रही।

माध्यमिक शिक्षक संघ की नई जिला कार्यकारिणी घोषित

करछना। उ० प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ (वित्तविहीन गुट) के प्रदेश अध्यक्ष/ शिक्षक विधायक मा. लाल बिहारी यादव की अनुमति से प्रयागराज संगठन के जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू ने प्रयागराज की जिला इकाई का पुनर्गठन कर दिया है। नव गठित जिला इकाई में 11 जिलाउपाध्यक्ष, 1 महासचिव तथा कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त 7 सचिव, 5 संगठन सचिव तथा 11 कार्यकारिणी सदस्य शामिल हैं। उपाध्यक्षगण में फूलचंद कन्नौजिया,बालेंद्र गौतम, प्रेमचंद, भुवाई लाल यादव, अमर बहादुर सिंह, सीबी यादव, अवधेश श्रीवास्तव, सुरेंद्र सिंह, रविकरण सिंह, कमलचंद, कौस्तुभ मणि पाण्डेय, महासचिव शिवमूरत सिंह पटेल (सोरांव), कोषाध्यक्ष बुधराम यादव, जिला मीडिया प्रभारी जेपी यादव, सीपी मिश्रा को जिला प्रवक्ता के साथ सचिवगण में गजराज सिंह, रामहित, कुंदन सिंह, दलवीर बिंद, भोलानाथ पाल, रामाश्रय पटेल, वीरेंद्र शैलेश, संगठन सचिव में दानबहादुर यादव, ज्ञानेंद्र कुशवाहा, अमित गौतम, राकेश कुमार पटेल, अमरचंद गुप्ता के साथ सीताशरण सिंह, गुलाब सिंह, कृष्ण विजय सिंह, एल. बी. यादव, गोविंद प्रसाद भूर्तिया विशेष आमंत्रित सदस्य बनाए गए हैं।

करछना के मेडरा में अंबेडकर प्रतिमा खंडित करने के आरोप में चार लोगों पर केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

गांव में तनाव को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने नयी प्रतिमा लगवा कर माहौल को शांत कराया

करछना। प्रयागराज थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मेडरा में शुक्रवार की गांव लगाई गई डॉ भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा को अराजकतत्वों द्वारा तोड़ कर खंडित कर दिया था जिसकी जानकारी सुबह होने पर गांव में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई पुलिस को जानकारी मिली तो मौके पर पहुंच कर मामले को शांत कराया और प्रशासन ने लोगों का गुस्सा शांत कराने को लेकर आनन फानन में खंडित प्रतिमा को हटवा दिया और उसके स्थान पर नयी प्रतिमा लगवा दिया, वही प्रतिमा खंडित करने के आरोप में गांव के प्रधान पुत्र शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने गांव के चार लोगों के खिलाफ पुलिस को तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत करा दिया, सूत्रों की मानें तो दो दिन पहले गांव में रास्ते को लेकर दो पक्षों में कहासुनी हुई थी जिसमें खेत के चारों तरफ बास बल्ली लगा कर खेत की फसल को पशुओं से बचाने के लिए लगाया गया था जिसमें ग्रामीणों ने एतराज जताया था,जिसकी शिकायत एक पंक्ष एसडीएम करछना एवं करछना पुलिस से किया था, हालांकि करछना पुलिस दोनो तरफ से शिकायत पर आरोप प्रत्यारोप के बीच जांच करने में जुटी है।

तमंचा से फायर करते युवक का वीडियो जमकर हो रहा वायरल

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा के घीनपुर मोहन का पूरा निवासी उक्त युवक से ग्रामीण खौफजदा

मऊआइमा। सोशल मीडिया पर एक युवक तमंचा से फायर करते हुए एक वीडियो डाला है। जो इस समय जमकर वायरल हो रहा है। उक्त युवक को फायर करते हुए देख कर ग्रामीण खौफजदा हैं।उक्त युवक गांव में चर्चा का विषय बन गया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्रामसभा घीनपुर निवासी एक युवक । बताया गया है कि 315 बोर का अवैध तमंचा लेकर फायर कर रहा है । उक्त वीडीओ सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। उक्त युवक की करतूतों को देख कर ग्रामीण खौफजदा हैं। बताया गया है कि उक्त युवक काफी चर्चित है। ग्रामीणों का आरोप है कि बहन बेटियों से छेडखानी, थोडी थोडी बात पर मार पीट ,तमंचा लहराना उसका पेशा बन गया है।जिससे ग्रामीणों में दहशत व्याप्त है। बताया गया है कि उक्त युवक कम उम्र क्षेत्र का नामी गुंडा बनना चाहता है। ग्रामीणों ने बताया है कि उक्त युवक के खिलाफ पूर्व इंस्पेक्टर सुरेश सिंह से लिखित शिकायत लोगों ने की थी तो वह फरार हो गया था। फिर नये इंस्पेक्टर के आने बाद अपनी गुंडागर्दी चमका रहा है। हालांकि इस बाबत एक शिक्षक ने लूटपाट मार पीट की लिखित शिकायत की है। परन्तु मऊआइमा पुलिस ने बताया कि घटना स्थल थाना रानीगंज प्रतापगढ़ का है। बहरहाल भले ही वह घटना रानीगंज क्षेत्र की रही हो। परन्तु ग्रामीणों ने बताया कि जिस जगह का वीडीओ फायरल हो रहा है। वह मऊआइमा के घीनपुर का है। उक्त युवक का वीडीओ देख कर हर कोई चर्चा करता हुआ नजर आ रहा है। खौफजदा ग्रामीणों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि वह अधिकारियों, थाने में शिकायत नहीं कर सकते चूंकि युवक बहुत दबंग है। हालांकि शासन प्रशासन से युवक के खिलाफ खख्त कार्यवाही की मांग ग्रामीणों ने की है।

सोरांव ब्लॉक के मीटिंग हॉल में उत्तर प्रदेश पंचायती राज कर्मचारी की हुई बैठक

देवराज गुट को जिताने के लिए कर्मचारियों ने भरी हुंकार

अखंड भारत संदेश

सोरांव। शनिवार को उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ प्रयागराज द्विवार्षिक चुनावी अधिवेशन में जिला अध्यक्ष पद के प्रत्याशी देवराज यादव ने अपने पूरे गुट के प्रत्याशियों में जिला अध्यक्ष पद हेतु स्वयं तथा महामंत्री पद हेतु श्री राम भारतीय, कोषाध्यक्ष पद हेतु शिवराम कुशवाहा, संप्रेक्षक पद हेतु अरविंद वर्मा तथा जिला संगठन मंत्री पद हेतु गिरीश कुमार कुशवाहा ने सोरांव ब्लाक के कर्मचारियों से अपने पक्ष में मतदान करने का समर्थन मांगा।इस कड़ी में सोरांव सभागार में सफाई कर्मचारियों की एक बैठक आहुति की गई। जिसमें संचालन का कार्य नरेश कुमार ने किया। तथा उपस्थित सभी प्रत्याशियों का सोरांव ब्लाक के कर्मचारियों ने माल्यार्पण कर स्वागत सम्मान किया। तथा चुनाव में देवराज गुट के सभी प्रत्याशियों को जिताने के लिए कटिबद्ध हुए। इस मौके पर जिला अध्यक्ष पद के उम्मीदवार देवराज यादव ने अपने संबोधन में उपस्थित सभी कर्मचारियों को निःशुल्क पे स्लिप दिलाने वह जल्द एरियर का भुगतान करवाने की बात कही। तथा सभी कर्मचारियों की सेवा हेतु हमेशा तत्पर रहने का भी वचन लिए। इस मौके पर सोरांव ब्लॉक के सभी सम्मानित कर्मचारी उपस्थित रहे। जिसमें ब्लॉक अध्यक्ष अनिल कुमार, फूलचंद, उमेश कुमार, मुकेश कुमार, रामराज, जीतलाल मौर्य, गीता देवी, प्रेमा देवी, अरुण कुमार, प्रेमचंद सहित सैकड़ो की संख्या में सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।

ग्राम पंचायत स्तरीय शिक्षा चौपाल का बृहद आयोजन

जारी। विकास खण्ड कौंधियारा में शिक्षा चौपाल का आयोजन खण्ड शिक्षा अधिकारी रमेश कुमार सिंह के नेतृत्व में ग्राम पंचायत पीड़ी में ग्राम प्रधान पुन्नू की अध्यक्षता और प्रबुद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता पीड़ी महाविद्यालय के अध्यक्ष नवीन कुमार शुक्ल के मुख्य आतिथ्य और विष्णु कांत शुक्ल पूर्व जिला पंचायत सदस्य के विशिष्ट अतिथ्य मे मां सरस्वती की प्रतिमा का माल्यार्पण एवं पूजन से शुभारम्भ हुआ। जिसके साक्षी ग्राम सभा के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, और सम्मानित अभिभावक रहे । कार्यक्रम का संचालन ए आर पी शत्रुघ्न प्रसाद शुक्ल के द्वारा किया गया। जिन्होंने शिक्षा चौपाल के औचित्य पर और निपुण के कार्ययोजना आदि पर चर्चा की, एआरपी विनोद कुमार मल्ल द्वारा दीक्षा/रीड एलांग तथा विनोद कुमार मल्ल ने डी बी टी पर विस्तृत रूप से सभी के समक्ष विचार साझा किया। शिक्षक संकुल सुनील कुमार के द्वारा गणित किट का प्रदर्शन, शिक्षक संकुल ममता कनौजिया और खुर्शीद के द्वारा कठपुतली के माध्यम से, शिक्षक संकुल राम बाबू और खुर्शीद के द्वारा नुक्कड़ नाटिका के माध्यम से अभिभावको को शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया। ग्राम सभा मे प्रा० वि पीड़ी के निपुण बच्चों को मुख्य अथिति और खंड शिक्षा अधिकारी के कर कमलों द्वारा शैक्षणिक सामग्री देकर सम्मानित किया गया। जिसके लिए विद्यालय के प्रधानाध्यापक शैलेन्द्र प्रताप सिंह और उनके समस्त शिक्षकों की सराहना की गयी। जिसके उपरांत ,ग्राम पंचायत के प्रधान, सदस्यगण और सक्रिय अभिभावकों द्वारा शासन के महत्वाकांक्षी योजना से विद्यालय के साथ हर कदम पर सहयोग देने का आश्वासन दिया गया। जिनका मुक्त कण्ठ से खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा सभी का आभार और कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गयी।उसके पूर्व ए आर पी शत्रुघ्न शुक्ल द्वारा सभी आगँतुकों को निपुण शपथ दिलाते हुए राष्ट्रगान के वाद समापन किया गया। कार्यक्रम में संकुल के सभी शिक्षक संकुल, प्रा शि संघ के ब्लॉक मंत्री हेमंत कुमार त्रिपाठी, वरिष्ठ शिक्षक उमेश पाण्डेय, लेखाकार दुर्गेश मिश्र और संकुल के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापक की सहभागिता रही।

कोरांव क्षेत्र में पशुओं को नहीं लगा लंपी बीमारी का टीका

बीमारी के प्रकोप में आकर पशुओं के मरने का सिलसिला है जारी, बड़ोखर एवं खीरी पशु चिकित्सालय में लटकता रहता है ताला, चिकित्सक रहते हैं नदारद

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। विकासखंड कोरांव में पशुओं को होने वाली बीमारी लंपी का इस वर्ष टीकाकरण होने से इस समय बीमारी के प्रकोप से पशुओं के मरने का सिलसिला शुरू हो गया है। शुक्रवार को इस बीमारी की चपेट में आकर बड़ोखर में जहां एक साथ तीन पशुओं की मौत हो गई, वहीं इसके पूर्व भी इस बीमारी की चपेट में आकर कई पशुओं की मौत हो चुकी है। पशु चिकित्सालय बड़ोखर एवं पशु चिकित्सालय खीरी में अक्सरतया ताला लटकता रहता है। यहां कार्यरत पशु चिकित्सा नियमित न तो बैठते हैं और न ही क्षेत्र में जाकर पशुओं के बीमारी की देखभाल करते हैं। जिससे पशुपालक अक्रोशित हैं। बड़ोखर में जहां पशुओं के मरने का सिलसिला जारी है, वही दर्जन भर पशु इस बीमारी के चपेट में हैं। राजाराम शुक्ला, रामअवध शुक्ला, रामकिशन, विजय शंकर अदीबलोगों ने बताया कि पिछले वर्ष पशुओं में होने वाली खतरनाक बीमारी लंपी का टीकाकरण समय से करा दिया गया था। जिससे पिछले वर्ष इस बीमारी का क्षेत्र में प्रकोप नहीं था। लेकिन इस वर्ष टीकाकरण न होने से पशु काल के गाल में समा रहे हैं। विकासखंड कोरांव में कुल 115 ग्राम पंचायतें किसी भी ग्राम पंचायत में इस बीमारी का टीकाकरण नहीं हुआ है। जिससे अधिकांशतः गांवो में पशु इस बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। शुरूआती दौर में पशुओं में होने वाली इस बीमारी के दौरान बड़े-बड़े चकत्ते निकलते हैं। जिसके बाद पूरे शरीर में सूजन आती है और फिर काल कलवित हो जाते हैं। ग्रामीणों ने बताया कि बड़ोखर और खीरी पशु चिकित्सालय पर चिकित्सक प्रतिदिन नहीं बैठते हैं। कभी-कभार अस्पताल आते भी हैं तो उन्हें क्षेत्र में भी नहीं निकलना है। किस क्षेत्र में कौन सी बीमारी है इससे भी उनका कोई वास्ता सरोकार नहीं रहता है। इस संदर्भ में पशु चिकित्साधिकारी कोरांव डॉ शालिकराम से बात की गई तो उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष क्षेत्र के सभी गांवो में लंपी बीमारी खुरपका मुहपका आदि का टीकाकरण कराया गया था। इस वर्ष सिर्फ खुरपका और मुंहपका का ही टीकाकरण हो पाया है। क्योंकि शासन स्तर से लंपी बीमारी का टीका उपलब्ध नहीं हो पाया। जब बीमारी का प्रकोप बढ़ने लगा तो कुछ टिके मंगवाकर जिन क्षेत्रों में बीमारी फैल रही थी वहां लगवाने का काम किया गया है।

न्यूज झरोखा

आचार्य हरिकृष्ण यमुनापार का विकास करने के लिए प्रतिबद्ध : पंकज

मेजा। आचार्य हरि कृष्ण शुक्ला (गुरु जी) ने शनिवार को अपनी टीम के साथ भ्रमण करते हुए करछना तहसील में भारतीय जनता पार्टी के बूथ अध्यक्ष तथा बूथ प्रभारी की मीटिंग में शामिल हुए । इस सभा में करछना क्षेत्र के सभी बूथ अध्यक्ष तथा बूथ प्रभारी उपस्थित रहे ' सभा का संचालन जिलाध्यक्ष यमुनापार विभव नाथ भारतीय ने किया।सभा में लगभग सौ से अधिक लोग शामिल हुए ' मीटिंग में उपस्थित जिलाध्यक्ष ने गुरू जी का स्वागत किया।इस दौरान पंकज द्विवेदी श्याम मिश्रा (मंडल अध्यक्ष) ने गुरू जी का विशेष रूप से मीटिंग में शामिल होने के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस तरह गुरु जी ने लालापुर के मनकामेश्वर मंदिर का स्वरूप बदल दिया है उसी प्रकार अब यमुनापार का प्रतिनिधित्व करके यहां का विकास करने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से के डी शुक्ला (प्राचार्य), पवन शुक्ला राम भवन द्विवेदी (जिला समिति सदस्य भाजपा) पंकज द्विवेदी (मंडल अध्यक्ष भाजपा) , श्याम मिश्रा (जिला संयोजक)आदि लोग उपस्थित रहे।

चरक चिकित्सा सम्मान से सम्मानित हुए डॉ आशुतोष

सहसों। क्षेत्र के उमरीमय टटिहरा गांव निवासी डॉक्टर आशुतोष कुमार मिश्रा को चिकित्सा क्षेत्र में किए गए सराहनीय कार्य के लिए विश्व आयुर्वेद मिशन द्वारा चरक जयंती के अवसर पर अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ जीएस तोमर ने चरक चिकित्सा सम्मान अवार्ड से सम्मानित किया। डॉ आशुतोष मिश्रा वर्तमान समय में प्रतापगढ़ जनपद में जिला होम्योपैथिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। उनके सम्मान प्राप्त होने से क्षेत्रीय लोगों में हर्ष व्याप्त है। उनके पिता डॉ अरुण कुमार मिश्रा सेवानिवृत प्रोफेसर ने कहा कि मानव सेवा करना सभी का परम कर्तव्य है। जब भी अवसर मिले हर व्यक्ति को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। इस अवसर पर हर्ष व्यक्त करने वालों में प्रधान प्रतिनिधि प्रदीप यादव, मदन मोहन मिश्रा, योगेंद्र प्रसाद मिश्रा, द्वारिका नाथ पांडे, राधेश्याम मिश्रा, विजय मिश्रा, जय कृष्ण पांडे आदि रहे।

जन चौपाल लगाकर विधायक ने सुनी लोगों की समस्या

जसरा। क्षेत्र के तातारगंज गांव में स्थानीय विधायक ने जन चौपाल लगाकर लोगों की समस्याओं को सुन अधिकारियों को निर्देश दिया। शुक्रवार को स्थानीय विधायक डॉक्टर वाचस्पति ने तातारगंज गांव में जाकर लोगों की समस्या सुनकर समाधान कर रहे हैं। स्थानीय ग्रामीण गांव की नाली, खड़ंजा और बिजली की समस्या की जानकारी विधायक को दी । आयोजक राजाबाबू पाठक ने आये हुए लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष जसरा जगत नारायण शुक्ला,आलोक पाठक,राधेश्याम पाठक,भोलानाथ पांडेय, कृष्णा प्रसाद, बृजकिशोर दुबे, कमला कान्त दुबे, रमाशंकर पांडेय, मुन्ना सिंह गहलोत, ब्रह्म दत्त पाठक,रामदयाल सिंह,अशोक पाठक, गब्बर सिंह,सूरज प्रजापति, आदि रहे।

थाना समाधान दिवस के रजिस्टर पर नहीं चढ़ाई जाती शिकायतें

शिकायतकर्ता ने लगाया आरोप, कहा शिकायतें आती है 50 तो दर्ज होती है पांच

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। कोरांव थाना समाधान दिवस हो या तहसील संपूर्ण समाधान दिवस सरकार ने भले ही इन दिवसों पर आने वाले फरियादियों की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए हों लेकिन असल में ये दिवस महज औपचारिकता बनकर रह गए हैं। तहसील संपूर्ण समाधान दिवस में तो शिकायतें घटाई और बढ़ाई नहीं जाती हैं। लेकिन थाना समाधान दिवसों में 50 फरियादी अगर शिकायत करते हैं तो पांच की ही शिकायत थाना समाधान दिवस के रजिस्टर पर दर्ज की जाती है। जिससे एक ही शिकायतकर्ता बार-बार थाना समाधान दिवसों में शिकायत करने के लिए विवश रहते हैं। जिससे उनका निस्तारण नहीं हो पता है। शनिवार को थाना कोरांव में एसडीएम अविनाश सिंह यादव नायब तहसीलदार विनोद सिंह की अध्यक्षता में समाधान दिवस आयोजित हुआ। जहां तकरीबन तीन दर्जन से अधिक फरियादियों ने अपनी शिकायतें दर्ज कराई। जिसमें थाना समाधान दिवस के रजिस्टर में महज 10 शिकायतें ही अंकित की गई हैं। पूछने पर बताया गया कि महज 10 फरियादियों ने शिकायतें दर्ज कराई हैं 10 शिकायतों में तीन में राजस्व टीम भेज कर निस्तारण कर देने की ही बात बताई गई। शेष पुलिस से संबंधित शिकायतों को निस्तारण के लिए निर्देशित किया गया। नगर पंचायत कोरांव के सुभाष नगर मोहल्ले के रहने वाले नागेंद्र कुमार मौर्य ने बताया कि मैं खुद अपनी शिकायत दर्ज कराया। जिसके बाद समाधान दिवस के रजिस्टर पर चढ़वाने के लिए भी गया लेकिन बहानेबाजी कर टरका दिया गया। मेरी शिकायत को समाधान दिवस के रजिस्टर पर नहीं चढ़ाया गया। इसी तरह तमाम फरियादियों द्वारा की जाने वाली शिकायतें रजिस्टर पर अंकित नहीं की जाती हैं जिससे उनका समाधान व निस्तारण भी नहीं हो पाता है।

गयादीन विश्वकर्मा इं. कॉलेज की कराटे की टीम प्रतियोगिता में हुई विजयी

मेजा। गयादीन विश्वकर्मा इंटर कॉलेज की कराटे टीम ने गंगा पार के सोराव तहसील अंतर्गत श्रीमती जगपति देवी इंटर कॉलेज मे आयोजित नेशनल स्कूल गेम्स कराटे प्रतियोगिता में करछना की गयादीन विश्वकर्मा इंटर कॉलेज की कराटे टीम मे प्रथम स्थान प्राप्त कर क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। उल्लेखनीय है कि नेशनल स्कूल गेम्स 23 - 24 अंतर्गत उक्त विद्यालय के उड़ाई सान, लखनीपुर, व सोराव मे आयोजित कराटे प्रतियोगिता में गयादीन विश्वकर्मा इंटर कॉलेज के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का जौहर दिखाते हुए प्रतिद्वंदी टीमो को कड़ी टक्कर के बीच शिकस्त देते हुए अपने विद्यालय का नाम रोशन किया है। अपने विद्यालय के साथ साथ मेजा व करछना का नाम रोशन किया है। गयादीन विश्वकर्मा इंटर कॉलेज के छात्रों द्वारा प्रतियोगिता के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं जनपद स्तरीय प्रतियोगिता मे चयनित होने पर विद्यालय के प्रबन्धक तीर्थराज विश्वकर्मा ने अपने खिलाडी छात्रों के साथ साथ टीम के कोच अरुण सोनकर को बधाई देते हुए कहा कि गयादीन विश्वकर्मा इंटर कॉलेज की कराटे टीम ने प्रतियोगिता मे विजय हासिल कर जहां विद्यालय का नाम रोशन किया है वही करछना क्षेत्र की एक बड़ी उपलब्धि है।

वोटर चेतना महा अभियान के तहत भाजपा मंडल जसरा की बैठक सम्पन्न

जसरा। शुक्रवार को जसरा ब्लॉक सभागार में कार्यकताओं को संबोधित करते हुए भाजपा जिला उपाध्यक्ष संतोष त्रिपाठी ने कहा की एक एक कार्यकर्ता पार्टी के महत्वपूर्ण है भाजपा को हमेशा ही कार्यकताओं की पार्टी कहा जाता है। बता दें कि वोटर चेतना महाअभियान के अंतर्गत शनिवार को जिले भर में पार्टी की बैठक हुई जिसमें नए वोटर बनाने के लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने कार्यकताओं को लगाया है। कार्यक्रम में मौजूद जिला पंचायत सदस्य सुरेंद्र सिंह पटेल ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला ने किया व संचालन मंडल महामंत्री भूपेंद्र पाठक ने किया कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों एवम् कार्यकताओं का मंडल महामंत्री नीरज केसरवानी ने अभिनंदन किया। प्रमुख रूप से राजा बाबू पाठक, प्रीतम चंद केसरवानी, हजारीलाल पटेल, बच्चा मालवीय, सुरेश मिश्रा, किसान मोर्चा अध्यक्ष अभिषेक शुक्ला, अर्जुन विश्वकर्मा, रामसागर दुबे, संदीप द्विवेदी, दीपचंद गुप्ता, सुबोध जायसवाल, वरिष्ठ पत्रकार आलोक त्रिपाठी, आकाश केसरवानी, वीरेंद्र पाठक, राकेश पाठक, अशोक तिवारी, अश्वनी दुबे, रवि साहू, कमला द्विवेदी, अमित पासी सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

विशाल रक्तदान शिविर आज

झूंसी। अंदावा स्थित अपना ब्लड बैंक में आज विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। यह आयोजन बीएल चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा आयोजित जा रहा है। जानकारी देते हुए संस्था के निखिल श्रीवास्तव ने बताया कि शिविर का शुभारंभ रविवार को 9 बजे होगा और सभी रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया जाएगा।

दो सप्ताह बाद दर्ज हुई रिपोर्ट

झूंसी। प्रापर्टी डीलर पर हमले के दो हफ्ते बाद गुरुवार की रात पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कर ली। 12 अगस्त की रात थाने के पीछे से गुजर रहे प्रॉपर्टी डीलर अतीक अहमद के ऊपर बाइक सवार युवकों ने पिस्टल से फायर किया था। एसीपी आईपीएस चिराग जैन के आदेश पर हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है। कोहना निवासी अतीक अहमद प्रापर्टी डीलिंग का काम करते है। 12 अगस्त की रात वह बाइक से अपने घर की ओर जा रहे थे। थाने के पीछे पहुंचे थे तभी बाइक से पहुंचे दो युवकों ने अतीक को मारने की नीयत से उनपर फायर कर दिया था। जिसमें वह बालबाल बच गए। मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की गई पर झूंसी पुलिस जांच के नाम पर मामले को टरका रही थी।

सम्पूर्ण समाधान दिवस : थरवई फाफामऊ एवं सोरांव थाने में जिलाधिकारी ने सुनी जनता की समस्याएं

अखंड भारत संदेश

प्राप्त शिकायतों के निस्तारण हेतु तत्काल राजस्व एवं पुलिस टीम का गठन कर मौके पर किया रवाना

जनता की शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही या उदासीनता कत्तई क्षम्य नहीं-जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने सम्पूर्ण समाधान दिवस पर थाना थरवई, फाफामऊ एवं सोरांव पहुंचकर जनता की समस्याओं को सुना। जिलाधिकारी ने थाना थरवई में जनता की समस्याओं को सुनते हुए प्राप्त सभी शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण ढंग से समय से निस्तारण करने के निर्देश दिए है। इसी क्रम में जिलाधिकारी ने थाना फाफामऊ पहुंचकर जनता की समस्याओं को सुना। सुनवाई के लिए कुल 04 शिकायतें आयीं, जिनमें सभी शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी के समक्ष सोरांव थाने में कुल 8 शिकायतें आयीं, जिनमें से 4 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी ने समाधान दिवस में आयी शिकायतों के समाधान के लिए राजस्व विभाग व पुलिस विभाग की टीम को तत्काल मौके पर रवाना किया तथा शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनता की शिकायतों में लापरवाही या उदासीनता कत्तई क्षम्य नहीं होगी। इस अवसर पर डीसीपी गंगापार अभिषेक भारती, एसडीएम फूलपुर सौरभ भट्ट, एसडीएम सोरांव गणेश कनौजिया, एसीपी सहित सभी सम्बंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे।

समस्याओं के निस्तारण में हो पारदर्शिता : तहसीलदार

मेजा। अगस्त माह के चौथे शनिवार को मेजा में समाधान दिवस तहसीलदार मेजा की अध्यक्षता में आयोजित हुई।तहसीलदार नीलम उपाध्याय ने फरियादियों के शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए सबंधित को निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया।उन्होंने कहा कि सभी शिकायतों को पारदर्शिता के आधार पर निस्तारण किया जाना सुनिश्चित किया जाए।तहसीलदार नीलम ने प्रभारी निरीक्षक को जमीन संबंधित मामलों में लेखपाल के साथ पुलिस टीम गठित कर समस्याओं के निस्तारण के लिए निर्देशित किया। इस दौरान जमीन व अन्य विवादित मामलों के 14 शिकायतें मिली।जिसमें एक का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक मेजा राजेशउपाध्याय,लेखपाल और राजस्व कर्मी मौजूद रहे।

छतवा गंगा घाट पर शवदाहगृह बनवाने हेतु भाजपा नेता ने विधान परिषद सदस्य को लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

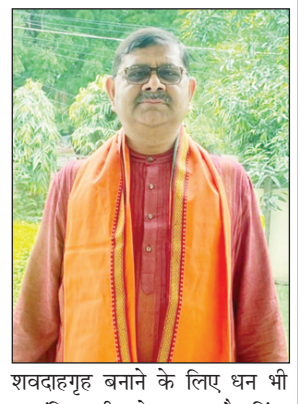

मेजा। धन आवंटित होने के बावजूद भी छतवा गंगा घाट पर शवदाहगृह न बनने से दूर दराज से शव आने वाले शव अंत्येष्टि करने वाले लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हैं। वरिष्ट भाजपा नेता प्रेम शंकर सिंह ने विधान परिषद सदस्य डा के पी श्रीवास्तव को पुनः पत्र देकर अतिशिग्रह शवदाहगृह बनवाने की मांग किया है।उल्लेखनीय है कि उरूवा विकास खण्ड के गंगा किनारे स्थित छतवा गांव में कई पीढ़ियों से शव के अंत्येष्टि की जाती रही हैं शव का दाह संस्कार करने वाले लोगों की विकट समस्या को देखते हुए समाज सेवी तथा वरिष्ट भाजपा नेता प्रेम शंकर सिंह ने इस बाबत पूर्व में मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज को पत्र लिखा था जिस पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा गंभीरता पूर्वक प्रकरण को संज्ञान में भी लिया गया था। इस सम्बंध में श्री सिंह के अनुसार छतवा गंगा घाट पर शवदाहगृह बनाने के लिए धन भी आवंटित भी हो चुका है किंतु संबधित अधिकारियो कर्मचारियो की घोर लापरवाही के चलते आज तक शवदाहगृह का निर्माण नही हो पाया है। जिससे बरसात के दिनों मे दूर दराज से शव का दाह संस्कार करने के लिए आने वाले लोगों के समक्ष काफी दिक्कते उत्पन्न हो गई है। श्री सिंह ने बीते 25अगस्त को पुनः इस सम्बंध में विधान परिषद सदस्य डा के पी श्रीवास्तव को पत्र देकर छतवा गंगा घाट पर अतिशीघ्र शवदाहगृह बनवाने की मांग किया है।

स्वकर-निर्धारण कैम्प की प्रगति व आगामी कैम्प की नगर निगम ने दी सूचना

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज द्वारा 25 अगस्त 2023 से वार्ड वार स्वकर निर्धारण कैम्पों में गृहकर दाताओं द्वारा अपने भवन के स्वकर निर्धारण कार्यवाही प्रगति पर है। विगत दिनों में समाचार पत्रों में दी गयी सूची के अनुसार शनिवार को कमशः वार्ड 28 चकनिरातुल जोन 5 नैनी, बालसन चौराहे के पास, तिनकोनिया पार्क, वार्ड 15 विश्वविद्यालय क्षेत्र एवं दुगार्पूजा पार्क वार्ड 16 सोहबतियाबाग जोन 4 अल्लापुर, संगम प्लाजा लोकपुर नैनी वार्ड 52, चकभटाई जोन 5 नैनी, इलाहाबाद डिग्री काले पानी की टंकी के पास, वार्ड 28 चक निरातुल जोन 1 खुल्दाबाद, इस प्रकार कुल चार स्थानों पर कैम्प लगाये गये थे जिसमें कुल 159 भवन स्वामियों द्वारा स्वकर-प्रपत्र भर कर प्राप्त कराया गया। उपस्थित सभी भवन स्वामियों को 3 दिवस के अन्दर उनके जोन पर बिल प्राप्त करते हुए भुगतान करने हेतु सूचित करने को कहा गया । उपरोक्त लगाये गये कैम्पों में अन्य भवन स्वामियों जिनके भवन मे कर की वृद्वि नही हुई है ऐसे 29 कर दाताओं द्वारा कुल रू0 2,35,554-00 जमा किया गया है। आगामी लगने वाले कैम्प के सम्बन्ध में मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पी0के0द्विवेदी द्वारा अवगत कराया गया कि दिनांक 28 अगस्त 2023 को वार्ड 56 बेनीगंज, भावापरु पानी की टंकी, वार्ड 37 कटरा, वार्ड 34 मेहदौरी, महार्षि पतंजली जल संस्थान में, वार्ड 18 बाद्यम्बरी हाउसिंग, रामलीला पार्क लेबर चौराहा, अलोपीबाग वार्ड 23, रामलीला पार्क अलोपीबाग अल्लापुर जोन, वार्ड 33 काजीपुर फोर्ड स्कूल के सामने नैनी, क्षेत्र में स्वकर-निर्धारण कैम्प लगाया जायेगा।

नगर आयुक्त व जोनल अधिकारी के नेतृत्व में खुल्दाबाद चौराहे से मछली मंडी चौराहे तक सब्जी विक्रेताओं को किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शहर दुकान दस्तक अभियान के अंतर्गत शनिवार को सायं नगर आयुक्त प्रयागराज के कुशल मार्ग दर्शन में एवं जोनल अधिकारी के नेतृत्व में खुल्दाबाद चौराहे से मछली मंडी चौराहे तक सभी दुकानदारों सब्जी विक्रेता एवं फल विक्रेताओं को अपने-अपने दुकान के सामने दो डस्टबिन हरा एवं नीला रखे जाने, कूड़ा इधर-उधर नहीं फैलाये जाने , प्रतिबंधित पॉलीथिन का प्रयोग न करें के सम्बन्ध में जागरूक किया गया। नगर आयुक्त महोदय द्वारा सिविल लाइन्स, कटरा, प्रयागराज जंक्शन क्षेत्र में जोनल अधिकारीयों के नेतृत्व में चलाये जा रहे अभियान का भी औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त द्वारा शहर दुकान दस्तक अभियान के अंतर्गत रूट चार्ट के अनुसार समस्त व्यवसायीक क्षेत्रों में कचरा कलेक्शन एवं जनजागरूकता का कार्य सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश सम्बंधित जोनल अधिकारी को दिये गए। शहर दुकान दस्तक अभियान के अंतर्गत व्यावसायिक एवं सार्वजानिक क्षेत्र में उच्च कोटि की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने एवं अभियान के प्रभावी अनुश्रवण हेतु श्रीमती रत्नप्रिया, अपर नगर आयुक्त के नेतृत्व में जोनवार टीम का गठन निम्नानुसार किया गया है। जोन सं 1 डॉ0 विजय अमृत राज,पशुधन अधिकारी। जोन सं 2 डॉ0 अभिषेक सिंह, नगर स्वास्थ्य अधिकारी। जोन सं 3 सतीश कुमार, मुख्य अभियन्ता। जोन सं 4 अम्बरीश कुमार बिन्द, अपर नगर आयुक्त। जोन सं 5 उत्तम कुमार वर्मा, पर्यावरण अभियन्ता। जोन सं 6 अरविन्द कुमार राय, अपर नगर आयुक्त। जोन सं 7 सुश्री दीपशिखा पाण्डेय, सहायक नगर आयुक्त। जोन सं 8 अखिलेश त्रिपाठी, सहायक नगर आयुक्त/जोनल अधिकारी उक्त गठित टीम द्वारा प्रतिदिन प्रत्येक नागरिक/दुकानदार/व्यवसायिक प्रतिष्ठान को कचरा प्रबन्धन, कचरा निर्धारित डस्टबिन में ही डालें के सम्बन्ध में जागरूक कराये जाने के साथ साथ रात्रिकालीन सफाई व्यवस्था की मानिटरिंग की जा रही है।

जागरूकता अभियान के तहत दुकानदारों को दो डस्टबिन रखने के लिए किया जागरूक

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज के नेतृत्व में द्वारा चलाये जा रहे हर दुकान दस्तक अभियान के अंतर्गत जोन कार्यालय 3 ओल्ड कटरा क्षेत्र में निगम की टीम सृष्टि एवं लायस साथ में लोगों को दो डस्टबिन के लिए जागरूक किया गया एवं उनको संदेश दिया गया की आप को दो डस्टबिन रखना अनिवार्य है। इसी के साथ ही चॉदपुर सलोरी में पार्षद राजू शुक्ला द्वारा इस अभियान के तहत लोगों को जागरूक करते हुए अपने-अपने दुकानों के सामने दो डस्टबिन रखने के लिए आग्रह किया गया। अपर नगर आयुक्त, सहायक नगर आयुक्त जोनल अधिकारी, नगर स्वास्थ्य अधिकारी तथा डोर-टू-डोर की टीम द्वारा कटरा मम्फोर्डगंज क्षेत्र में कमर्शियल मार्केट में 2-2 डस्टबिन रखने के लिए दुकानदारों को प्रोत्साहित करते हुए जानकारी दी गयी साथ ही सभी से आग्रह किया गया कि एक सप्ताह के अन्दर अपने-अपने दुकानों के सामने डस्टबिन रखना सुनिश्चित करें। अधिकांश विक्रेताओ द्वारा ट्विन डस्टबिन रखने का आश्वासन दिया गया। टीम सृस्टि, ऊँ स्वच्छता तथा नीलकंठ का सहियोग प्राप्त हुआ।जोन 2 गऊघाट प्रयागराज रेलवे जंक्शन, तथा जोन 2 काटजू मार्ग पर जोनल अधिकारी महोदय के नेतृत्व में फुटपाथ पर ठेले, रेडी ,विक्रेताओ को दो डस्टबिन रखने हेतु प्रेरित किया गया, प्रतिबंधित पॉलीथिन के प्रयोग न करने, हेतु जागरूक किया गया, दस्तक अभियान के अंतर्गत करैलाबाग आजद नगर के लोगों को तथा बाजारों में डस्टबीन रखने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही डीटीडीसी के अंतर्गत वार्ड कोहना में नकारात्मक सूची के नागरिकों को कूड़ा देने हेतु प्रेरित किया गया।जोन कार्यलय 1 खुल्दाबाद चुनाव वार्ड 93 सुल्तानपुर भावा में डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन का कार्य करवाते हुए जोनल अधिकारी महोदय क्षेत्रीय पार्षद जी समद अब्दुल द्वारा घर-घर जन जागरूकता अभियान चलाया गया जनता से अपील किया गया अपने घर में दो डस्टबिन रखें कूड़ा अलग-अलग करके नगर निगम की गाड़ी को दें।

गुरुकुल मांटेसरी स्कूल में खेलों का महाकुंभ शुरू

अखंड भारत संदेश

एडीजी जोन, विधालय के चेयरमैन, प्रधानाचार्या ने बच्चों को किया प्रोत्साहित

प्रयागराज। संगम नगरी प्रयागराज में पीएम नरेन्द्र मोदी के खेलो इंडिया मुहिम के तहत दो दिवसीय खेल मिनी महाकुंभ आज से आयोजित किया जा रहा है। फाफामऊ इलाके में स्थित गुरुकुल मांटेसरी स्कूल शांतिपुरम में आयोजित हो रहे खेलों के मिनी महाकुंभ का शुभारंभ एडीजी जोन प्रयागराज भानु भाष्कर ने किया। उद्घाटन के मौके पर बच्चों ने देशभक्ति गीतों पर योग का बेहतरीन प्रदर्शन किया। प्रयागराज रीजनल स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में मंडल के चार जिलों प्रयागराज, प्रतापगढ़, फतेहपुर और कौशांबी के करीब 1700 छात्र-छात्राएं शामिल हुए। नेशनल स्पोर्ट्स प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन यानि एनएसपीओ के अंतर्गत स्टेयर्स फाउंडेशन प्रयागराज खेलों के इस मिनी महाकुंभ का आयोजन कर रहा है। इस चैंपियनशिप के अंतर्गत 11 खेलों की प्रतिस्पधाएं आयोजित की गयी है। इसमें खो खो,कबड्डी,चेस, राइफल शूटिंग, बाक्सिंग, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, टेबल टेनिस, योगा , रोप स्किपिंग, कराटे की प्रतियोगिताएं शामिल हैं। इसमें चार आयु वर्ग अंडर 7, अंडर 11, अंडर 14 और अंडर 17 आयु वर्ग के छात्र छात्राएं इन खेलों में प्रतिभाग कर रहे हैं। इन खेलों का आयोजन भारत सरकार की लोकप्रिय थीम स्पोर्ट फॉर एक्सीलेंस और स्टेयर्स फाउंडेशन का प्रोग्राम एक भारत एक लक्ष्य की सोच को आगे बढ़ाते हुए किया जा रहा है। स्टेयर्स फाउंडेशन में रीजनल स्टेयर्स स्पोर्ट चैंपियनशिप 2023 का आयोजन कई मायनों में खास है। क्योंकि यहां पर प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों को स्टेट लेवल और उसके बाद नेशनल स्तर पर खेलों में प्रतिभाग करने का मौका मिलेगा। चैंपियनशिप में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को रविवार को समापन के मौके पर पुरस्कृत और सम्मानित भी किया जाएगा। गुरुकुल मोंटेसरी स्कूल के चेयरमैन पूर्व डीआईजी कृपा शंकर सिंह के मुताबिक बच्चों में अकादमिक के साथ खेलकूद की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए यह आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्कूल के बच्चों ने स्टेट लेवल तक की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया है लेकिन ऐसी प्रतियोगिताओं से निखरने वाली प्रतिभाएं निश्चित तौर पर देश का नाम रोशन करेंगी। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत विधालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अमिता मिश्रा ने किया। उन्होंने कहा कि ऐसी खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से छात्र - छात्राओं की प्रतिभाएं निखरती है और उनको आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। प्रधानाचार्या श्रीमती अमिता मिश्रा ने बताया कि पुरस्कार का वितरण रविवार शाम चार बजे से होगा। प्रतियोगिता के दौरान महारिषी यूनिवर्सिटी के निदेशक रितेश गुप्ता,एनओआईएस के डायरेक्टर पियूष कुमार, डायरेक्टर वीरेन्द्र सिंह, अपर निदेशक रितिज विक्रम सिंह, वंदना सिंह सहित अन्य लोग थे। संचालन डिविजनल वार्डन रिजर्व रौनक गुप्ता ने किया।उक्त अवसर पर चीफ वार्डन अनिल कुमार, डिप्टी कंट्रोलर नरेंद्र शर्मा, वरिष्ठ सहा उप नियंत्रक राकेश तिवारी, एल के अहेरवार, महेंद्र सक्सेना, राजीव भनोट,कृष्ण कुमार तिवारी, रामजी पाण्डेय आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में

बाइक स्कूटी में टक्कर दो घायल, दो माह में दर्जनों हुए सड़क हादसे के शिकार

झूंसी। कांवरियों की सुरक्षा के मद्देनजर वाराणसी प्रयागराज मार्ग को दो महीने के लिए वनवे किया गया है। 2 महीने पूरे होने में अभी कुछ दिन बाकी है इन दो महीनो में दर्जनों लोग सड़क हादसे का शिकार हुए। शनिवार की दोपहर बाद कांवरियों के लिए आरक्षित लेने पर झूंसी पुलिस बूथ के निकट एक स्कूटी व बाइक में आमने-सामने से टक्कर हो गई जिसमें स्कूटी सवार रजनीश को हल्की चोटें आई वहीं बाइक सवार सूर्य प्रकाश को गंभीर चोटें जिसे एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सोमवार की रात शास्त्री ब्रिज पर कांवरियों की हीं लेन में एक स्कूटी और बाइक में जोरदार टक्कर हुई थी जिसमें तीन लोगों को छोटे आई थी बाइक सवार की हालत नाजुक थी जिसका इलाज अभी भी शहर के निजी अस्पताल में चल रहा है। 3 अगस्त को भी झूंसी अनवर मार्केट के सामने दो बाइको में आमने सामने से भिड़ंत हो गई थी। जिसमें हंडिया निवासी पिंटू यादव, रवि व सहसो के संदीप को गंभीर चोटें आई थी। एक दूधिए ने बाइक से एक कांवरिए को भी टक्कर मार दी थी। जिससे उसके हाथ में फैक्चर हो गया था।

घर-घर जाकर युवाओं का नाम वोटरलिस्ट में जोड़वाने का कार्य करवाएंगे भाजपाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कार्यकताओं के मेहनत लगन और जनता-जनार्दन के एक-एक वोट की शक्ति का परिणाम है कि केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार है। जो अनगिनत जनकल्याणकारी योजनाओं से जनता-जनार्दन गरीबों किसानों मजदूरों, व्यापारियों युवाओं का दिल जीत चुकी है उक्त बातें शनिवार को लेड़ियारी मंडल बघोल बहरियां मंदिर में 'वोटर चेतना महाअभियान' बैठक के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज यमुनापार के जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी ने मंडल मतदाता सूची प्रमुख, सह-प्रमुखो,शक्ति केंद्र प्रभारियों, संयोजकों एवं बूथ अध्यक्षों के बैठक को सम्बोधित करते हुए कही। दिलीप कुमार चतुवेर्दी ने आगे कहा आपके वोट की शक्ति ने जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बनाया तो जम्मू-कश्मीर से धारा 370 व 35ए हटाकर तिरंगा लहरा दिया। और आज देश के वैज्ञानिको ने चन्द्रमा पर चन्द्रयांन-3 पहुंचाकर तिरंगे की शान विश्व पटल पर लहरा दिया यह आपके वोट के शक्ति से बनी कड़े निर्णय लेने वाले सरकार का ही परिणाम है। इस लिए निर्वाचन मतदाता पुनरीक्षण कार्य में लगकर 1 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूरा कर रहे युवाओं के घर-घर जाकर मतदाता सूची में फार्म भरकर नाम जुड़वाएंगें व मृतको के नाम विलोपित कराएंगे तो 2024 में पुनः मोदी सरकार बनकर हैट्रिक लगाएगी। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष लेड़ियारी श्यामबाबू केशरी ने करते हुए स्वागत अभिनन्दन किया। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष अशोक पाण्डेय,मंडल प्रभारी सरदार पतिविंदर सिंह, प्रवीण मिश्रा,भूषणदत्त शुक्ला, रितेश पटेल,नीरज केसरवानी, सदानंद मिश्र, विवेकानंद कुशवाहा आदि के साथ अभियान में लगे कार्यकर्त्ता उपस्थित रहें।

आईपीएस अधिकारियों ने सिविल डिफेंस के कार्यों को सराहा, प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

क्यूआरटी की तरह प्रशासन को सहयोग करते है नागरिक सुरक्षा के वार्डेनः आईपीएस नीतू काडियान

सिविल डिफेंस की निष्काम सेवा सराहनीयः आईपीएस चिराग जैन

प्रयागराज। सिविल डिफेंस के वार्डेन को संबोधित करते हुए आईपीएस नीतू काडियान ने कहा की नागरिक सुरक्षा कोर के वार्डेन क्यूआरटी की तरह प्रशासन को सहयोग करते है जो प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि अल्प सूचना पर बिना देरी के सिविल डिफेंस के वार्डेन प्रशासन का सहयोग करते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं इनकी जितनी भी सराहना की जाए वह कम है।आईपीएस नीतू काडियान चौक डिविजन द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उक्त विचार व्यक्त किए। उक्त अवसर पर कार्यक्रम में वार्डेन को संबोधित करते हुए आईपीएस चिराग जैन ने कहा कि प्रयागराज सिविल डिफेंस की निष्काम सेवाएं अनुकरणीय है। नगर में हर आपात सेवाओं में सिविल डिफेंस के वार्डेन प्रशासन व पुलिस प्रशासन को सहयोग कर रहे है। उन्होंने कहा कि पुलिस लाइन की परेड हो, चाहे तिरंगा यात्रा हो या धार्मिक पर्वो पर सिविल डिफेंस के वार्डेन एक सजग पहरी के रूप में दायित्वों का निर्वहन करते है। उक्त अवसर पर आईपीएस नीतू काडियान एवं आईपीएस चिराग जैन ने वार्डेन को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का आयोजन व संचालन डिविजनल वार्डन रिजर्व रौनक गुप्ता ने किया।उक्त अवसर पर चीफ वार्डेन अनिल कुमार, डिप्टी कंट्रोलर नरेंद्र शर्मा, वरिष्ठ सहा उप नियंत्रक राकेश तिवारी, एल के अहेरवार, महेंद्र सक्सेना, राजीव भनोट,कृष्ण कुमार तिवारी, रामजी पाण्डेय आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में

संगमनगरी में जल ज्ञान यात्रा बनी स्कूली बच्चों के लिये यादगार

अखंड भारत संदेश

- जल जीवन मिशन के तहत पीने के स्वच्छ पानी की गांव-गांव, घर-घर तक पहुंचने की प्रक्रिया को स्कूली बच्चों ने करीब से जाना
- हर घर जल योजना से लाभान्वित ग्रामीणों से बच्चों ने की बातचीत, योजना से मिले लाभों को समझा, शैक्षिक भ्रमण में लिया भाग
- नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग की ओर से प्रयागराज में आयोजित हुई 'जल ज्ञान यात्रा'
- स्कूली बच्चों ने मानिकपुर स्थित ओएचटी, प्रयोगशाला, एसटीपी को भी देखा
- नल से स्वच्छ पेयजल पीकर बोले छात्र, आरओ से भी स्वच्छ है पानी
- सोलर पैनल और अशुद्ध जल को स्वच्छ करने की पूरी प्रक्रिया को बड़ी उत्सुकता से समझा

प्रयागराज। संगमनगरी में विकास की नई गाथा लिख रही पीएम मोदी की महत्वाकांक्षी जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना को सरकारी स्कूल के बच्चों ने करीब से जाना। पहली बार प्रयागराज में आयोजित जल ज्ञान यात्रा में गांव - गांव, घर -घर तक पहुंच रहे स्वच्छ पेयजल की प्रक्रिया को स्कूली बच्चों ने समझा। पानी पहुंचाने के लिये तैयार किये गए संसाधनों को देखा। पीने के स्वच्छ पानी से लाभार्थियों को मिल रहे लाभ की जानकारी मिलने पर वो आश्चर्यचकित रह गये। इन बच्चों के लिए जल ज्ञान यात्रा यादगार बन गई। प्रयागराज के प्राथमिक विद्यालय के स्कूली बच्चों को जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना से जुड़ी जानकारियां इस शैक्षिक भ्रमण के दौरान दी गई। नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग की ओर से आयोजित 'जल ज्ञान यात्रा' में छात्र-छात्राओं ने उत्सुकता के साथ भाग लिया। हाथों में जल संरक्षण से जुड़े स्लोगन लिए बच्चे मानिकपुर ग्राम पंचायत पर बने ओएचटी पर पहुंचे। जहां उनको नल से स्वच्छ पेयजल पहुंचाने की पूरी प्रक्रिया को समझाया गया। शनिवार को तहसीलदार अंकाक्षा मिश्रा, जिला समन्वयक अश्विनी कुमार श्रीवास्तव ने जल ज्ञान यात्रा को हरी झंडी दिखाकर उसका शुभारंभ किया। विभाग के अधिकारियों और कर्मचरियों ने एक-एक कर बच्चों को परियोजना, पाइप वॉटर सप्लाई स्कीम की जानकारी दी। जल संरक्षण, जल प्रबंधन, जल संचयन के बारे में बताया। प्रयागराज के 10 प्राथमिक स्कूल के 100 छात्र-छात्राएं व 20 अध्यापक जल जीवन मिशन की परियोजनाओं के शैक्षिक भ्रमण का हिस्सा बने।

भावी पीढ़ी बनी मिशन में सारथी

राज्य सरकार की अनूठी पहल पर देश में पहली बार भावी पीढ़ी को जल जीवन मिशन की परियोजनाओं का सहभागी बनाने के लिए उत्तर प्रदेश में "जल ज्ञान यात्रा" का शुभारंभ किया गया है। इस यात्रा में छात्र-छात्राओं के सहभागी बनने से वो मिशन के प्रति लोगों को जागरूक करने में सारथी बनेंगें। बच्चों को यहां भूजल उपचार, ग्रे वॉटर का उपचार, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट और अन्य संबंधित मुद्दों की जानकारी दी गई।

नल से स्वच्छ पेयजल पीकर बोले छात्र आरओ से भी स्वच्छ है पानी

जल ज्ञान यात्रा के दौरान बच्चों ने नल कनेक्शन प्राप्त करने वाले ग्रामीण परिवारों से बातचीत कर उनके सुखद अनुभवों को जाना। एफटीके प्रशिक्षित महिलाओं और तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवाओं से भी बातचीत की। यहां उन्होंने नल की टोंटी खोल स्वच्छ पेयजल पीकर बोले की ये तो आरओ से भी साफ पानी है।जल ज्ञान यात्रा में प्रतिभाग लेकर मुझे बहुत अच्छ लगा। यहां आकर मुझे जल जीवन मिशन से जुड़ी अहम जानकारियां मिली जैसे जल को कैसे स्वच्छ किया जाता है, घरों तक कैसे पानी पहुंचता है।

सुकन्या समृद्धि योजना से खुला खाता से संवरेगा बेटियों का भविष्यः प्रवर डाक अधीक्षक

महिला अस्पताल में वेलकम बिटिया अभियान का एलांयस क्लब ने किया विस्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राष्ट्रीय महिला समानता दिवस के अवसर पर मेडिकल कॉलेज से संबद्ध जिला महिला चिकित्सालय में एलायंस क्लब इंटरनेशनल के डायरेक्टर रोशन लाल उमरवैश्य के नेतृत्व में वेलकम बिटिया अभियान के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उक्त कार्यक्रम के तहत जिला महिला अस्पताल में आज के दिन जन्मी बेटियों की मां को सम्मानित करते हुए क्लब ने अभियान को विस्तार रुप दिया। जिसमें सुकन्या समृद्धि योजना के तहत क्लब की ओर से आज जन्मी 14 बेटियों का प्रधान डाकघर में खाता खुलवाया उनके भविष्य को संवारने में कदम बढ़ाया। आयोजित कार्यक्रम के बतौर मुख्य अतिथि प्रधान डाकघर के प्रवर डाक अधीक्षक संजय कुमार वर्मा रहे,जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएमएस रीना प्रसाद ने किया।

वेलकम बिटिया अभियान के आयोजक क्लब की इंटरनेशनल डायरेक्टर समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि क्लब ने विगत 4 वर्ष पहले से वेलकम बिटिया अभियान की शुरूआत की थी। उसी के तहत आज शनिवार को ह्लवेलकम बिटियाह्व अभियान का विस्तार करते हुए क्लब के पदाधिकारियों ने जिला अस्पताल में आज जन्मीं 14 बेटियों की माता का सम्मान कर बेटियों का भविष्य सुनहरा रहे इसके लिए सुकन्या समृद्धि योजना के तहत खाता खुलवाने का कार्य किया है। इन सभी 14 बेटियों के खाते की धनराशि क्लब की ओर से अदाएगी की गई। समाजसेवी ने कहा कि यह अभियान अब निरंतर जारी रहेगा। क्लब यथासंभव जन्म लेने वाली बेटियों का अधिक से अधिक खाता खुलवाकर उनके भविष्य को सवारने का प्रयास करता रहेगा।

जिला महिला में महिला को प्रमाण पत्र देते अधिकारी।

इस दौरान उन्होंने प्रवर डाक अधीक्षक से प्रत्येक माह कैंप लगवाने का अनुरोध की। जिससे उक्त योजना का लाभ बेटियों को मिल सके। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि मौजूद प्रवर अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने कहा कि क्लब के सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आज 14 खाते जन्मी बेटियों के नाम खुलवाकर एवं उनकी माता को सम्मानित क्लब ने अति सराहनीय कार्य करते हुए अन्य लोगों के लिए प्रेरणादायक साबित हुआ है।

उन्होंने कहां की क्लब के डायरेक्टर रोशन लाल उमरवैश्य से प्रेरणा लेते हुए अन्य लोगों को भी मुहिम में शामिल होना चाहिए, जिससे बेटी और बेटा में कोई भी कभी भेद ना समझे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही महिला अस्पताल की सीएमएस रीना प्रसाद ने क्लब के अभियान में पूरा सहयोग करने का आश्वासन देते हुए कहा कि क्लब के इस कार्य से जहां बेटियों का भविष्य संवरेगा वही उनकी माता को भी संबल प्रदान होगा। इतना ही नहीं परिवार कभी बेटियों को बोझ ना समझे क्योंकि आज बेटियां बेटों से कम नहीं है। अंत में सभी के प्रति क्लब की नार्थ जोन की एडवाइजर पूनम गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से अमरीश कुमार वर्मा, सुरेंद्र कुमार, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा, आदर्श कुमार, अजीत, विवेक कुमार, पूनम गुप्ता, सपना गुप्ता, सुनीता तिवारी, अशोक कुमारी, अनामिका केसरवानी, पिंकी गुप्ता, रेखा उमरवैश्य, अंजू तिवारी सहित तमाम लोग शामिल रहे।

शिव के साथ शनिदेव का पूजन कर मांगा आशीष

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पौराणिक शिव धाम बाबा घुइसरनाथ धाम में सावन माह बीतने में कुछ ही दिन शेष है। यहां जलाभिषेक को लेकर श्रद्धालुओं की भारी भीड उमड रही है। शनिवार को श्रद्धालुओं ने घुइसरनाथ धाम पहुंचकर बाबा को जलाभिषेक किया। गर्भ गृह की परिक्रमा व शिव मंत्र जाप करके सुख समृद्धि का आशीर्वाद मांगा। वहीं शनिवार होने से लोगों ने यहां स्थित शिव मंदिर में भी जाकर शनिदेव की मूर्ति पर तेल व काला तिल, पुष्प अर्पित कर कृपा बनाये रखने की कामना किया। इधर धाम परिसर में लगे मेले में लोग बच्चों के साथ चाट जलेबी व झूले का आनन्द उठाते दिखे। वहीं महिलाएं श्रृंगार की दुकानों पर खरीददारी करने में मशगूल देखी गयी।

थाना समाधान दिवस में अफसरों ने सुनीं समस्याएं, दो का कराया निस्तारण

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली में शनिवार को आयोजित थाना समाधान दिवस पर एएसपी पश्चिमी रोहित मिश्र ने कोतवाली प्रभारी आईपीएस प्रशिक्षु अमृत जैन व सीओ रामसूरत सोनकर के साथ फरियादियों की समस्याओं पर सुनवाई किया। सुनवाई के दौरान कुल बीस शिकायतें आयीं। जिनमे से अफसरो ने दो शिकायतो का मौके पर निस्तारण कराया। वहीं एएसपी ने मातहतो से शांति सुरक्षा व अपराध की रोकथाम के बाबत पूरी मुस्तैदी से कार्य करने के कडे निर्देश दिये। थाना समाधान दिवस का संयोजन कोतवाल प्रशासनिक अवन कुमार दीक्षित ने किया।

मारपीट व गालीगलौज तथा धमकी को लेकर चार पर केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट गालीगलौज व धमकी की घटना को लेकर चार आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के मधुकरपुर गांव की गीता देवी पत्नी छोटे लाल ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि रंजिश को लेकर बीती सात अगस्त को सुबह साढे नौ बजे गांव के संजय वर्मा पुत्र भोला नाथ, अमित वर्मा पुत्र बडेलाल, कडेदीन वर्मा पुत्र छंगू व बालेन्द्र पुत्र शारदा ने एक राय होकर उसे तथा उसके पुत्र को गाली देते हुए मारापीटा व जानलेवा धमकी भी दी। पुलिस ने जांच के बाद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

लूट की घटना में चार अज्ञात बदमाशों के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने तमंचा सटाकर पीडित से पांच हजार दो सौ की नकदी व मोबाइल लूट लेने की घटना को लेकर अज्ञात चार बदमाशों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के प्रताप रूद्रपुर गांव निवासी राकेश सिंह पुत्र विजय पाल सिंह के अनुसार चैबीस अगस्त को रात्रि सवा ग्यारह बजे वह बाइक से घर जा रहा था। रामपुर बावली चैराहा के समीप नहर पटरी पर दो बाइक पर चार अज्ञात लोग पहुंचे और धक्का देकर उसे बाइक से गिरा दिया। आरोप है कि बदमाशों ने उसके सिर पर तमंचा सटा दिया और जेब मे रखा पांच हजार दो सौ रुपए की नकदी व मोबाइल छीन लिया। इसके बाद बदमाश जान से मारने की धमकी देते चले गये। घटना की जांच के बाद पुलिस ने चार अज्ञात बाइक सवार बदमाशों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

दुष्कर्म के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में थाना रानीगंज के उ0नि0 योगेश कुमार चतुवेर्दी मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त/विवेचना के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 122/2023 धारा 376, 506 भादवि से संबंधित वांछित अभियुक्त शैलेश कुमार गौतम पुत्र सन्तलाल नि0ग्राम बांसी थाना फतनपुर जनपद प्रतापगढ़ को थाना क्षेत्र रानीगंज के प्रेमनगर चैराहा के पास से गिरफ्तार किया गया।

अवैध गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद के थाना जेठवारा से उ0नि0 सुमित सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र जेठवारा के पूरनपुर खास गेट के पास से एक व्यक्ति अंकुल तिवारी उर्फ लोखड़ी पुत्र अशोक कुमार तिवारी निवासी ग्राम श्रीकान्त का पुरवा थाना जेठवारा जनपद प्रतापगढ़ को एक किलो 170 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना जेठवारा में मु0अ0सं0 192/23 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

सपाईयों ने साइकिल यात्रा निकालकर पार्टी के एजेंडे को जन-जन पहुंचाया

शहर में घूमते हुए रानीगंज होते हुए पट्टी पहुंची साइकिल यात्रा

साइकिल यात्रा को हरी झण्डी दिखाते हुए एसपी सिंह पटेल।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सपाईयों की साइकिल यात्रा को समाजवादी पार्टी कार्यालय मीरा भवन पर पूर्व विधान परिषद सदस्य एसपी सिंह पटेल ने झंडा दिखाकर रवाना किया। साइकिल यात्रा अंबेडकर चैराहा पर पहुंचकर बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए राजपाल चैराहा से सदर चैराहा से चैक घंटाघर होते हुए रवाना हुई।

इस दौरान भंगवा चुंगी पर शहीद भगत सिंह प्रतिमा पर माल्यार्पण कर ट्रेजरी चैराहा लोहिया पार्क पंहुचा और डॉक्टर राम मनोहर लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कटरा मेदनीगंज होते हुए रानीगंज विधानसभा में पहुंची। यहां रानीगंज से उड़ैयाडीह होते हुए पट्टी विधानसभा में पहुंचकर रात्रि विश्राम करेगी और कल सुबह अमेठी के लिए रवाना होगी। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के नेतागण साइकिल यात्रा का जगह-जगह स्वागत करते हुए जलपान कराया। इस साइकिल यात्रा में जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, रानीगंज विधायक डॉ आरके वर्मा, गुलफाम खान, संतोष यादव, आशुतोष पाण्डेय, वासिक खान, इरफान खान, पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष मनीष पाल, शान्ति सिंह, राजू यादव, साजिद अली, संजीव पटेल, सफात अहमद, जावेद खान, सुनील यादव, विशाल मौर्या, विनोद यादव, जियाउल इसहाक, समीम खान, निसार अहमद, साबिर अली, मानवेन्द्र वर्मा, राजकुमार प्रजापति, धनंजय यादव, डॉ0 राम बहादुर पटेल, अहमद अली, अब्दुल हई, सुरेश यादव, डॉ0 एजाज, रईस अहमद, शमीम प्रमुख, जुनैद खान, संजय यादव, अतुल यादव, आदि लोग मौजूद रहे।

साइकिल यात्रा का उद्देश्य देश बचाओ-देश बनाओः अभिषेक यादव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी कार्यालय मीराभवन पर समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक यादव व पूर्व विधान परिषद सदस्य एसपी सिंह पटेल ने सामूहिक रूप से प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए कहा कि 9 अगस्त से लगातार साइकिल यात्रा चल रही है, जिसका उद्देश्य देश बचाओ-देश बनाओ है यह साइकिल यात्रा भारत देश के करोड़ों गरीब, दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक, मुस्लिम, छात्र, किसान, नौजवान और कामगारों के नेता अखिलेश यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी पार्टी की नीतियों विचारों एवं कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य को लेकर भाजपा द्वारा शोषित प्रताड़ित और भयाक्रांत (पी०डी०ए०) पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक मुस्लिम के दर्द को बांटते हुए सत्ता के विकल्प के रूप में समाजवादी विचारधारा एवं समाजवादी सरकार की नीतियों को नौजवान, जनता के सामने रखते हुए जातिगत जनगणना की मांग एवं आरक्षण में हो रहे छेड़छाड़ किसानों के शोषण के मुद्दे को प्रमुखता से रखते हुए समाजवादी नौजवानों का क्रांतिकारी जत्था लगातार इलाहाबाद, बांदा, फतेहपुर, रायबरेली, प्रतापगढ़ अमेठी से होकर लखनऊ तक साइकिल यात्रा चलेगी। साइकिल यात्रा उपरोक्त जनपदों के समाजवादी पार्टी कार्यालय एवं सभी विधान सभाओं तहसीलों में पहुंच रही है। जिसमें समाजवादी पार्टी का प्रशिक्षण पर्चा वितरण, संगोष्ठी, नुक्कड़ सभा, वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता के बारे में लोगों को बताया जा रहा है।

रानी लक्ष्मीबाई आत्म प्रशिक्षण में 45 लोगों ने लिया प्रशिक्षण

किक स्ट्राइक पंच का कराया गया अभ्यास

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानी लक्ष्मीबाई आत्म प्रशिक्षण में आज तृतीय सत्र के समापन दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह द्वारा किया गया। साथ ही साथ प्रशिक्षक द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण को देखा।

प्रशिक्षक द्वारा किक स्ट्राइक पंच का अभ्यास कराया जा रहा है। प्रशिक्षक द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षण दिया जा रहा है इसमें सभी 45 लोगों द्वारा प्रशिक्षण लिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण 6 दिवस का पूर्णतया आवासी होता है। प्रशिक्षण में क्लोज स्ट्रांग पैरेलल स्ट्रांग वॉकिंग स्ट्रांग फॉरवर्ड स्ट्रांग बैक स्ट्रांग तथा लोअर ब्लॉक अपर ब्लॉक मिडल ब्लॉक आउटर मिडिल ब्लॉक सिंगल निक हैंड ब्लॉक आइज अटैक स्नेक अटैक नोज अटैक बॉटम हाइट स्ट्राइक फाइट स्ट्राइक तथा लोअर पंच मिडिल पंच फ्रंट किक साइड किक का प्रशिक्षण दिया जा रहा है व सभी प्रतिभागियो की ऑन लाइन परीक्षा ली गई जिसमें सभी प्रतिभागी पास हुए। जिसके बाद सभी प्रतिभागियों को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किया गया यहां से सभी प्रतिभागी प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने-अपने विद्यालयों में जाकर बालिकाओं को आत्मरक्षा की प्रशिक्षण देंगे।जिला व्यायाम शिक्षक राम कुमार सिंह ने बताया कि चतुर्थ सत्र का प्रशिक्षण 11सितम्बर से 19 सितम्बर के बीच बाबा बेलाखरनाथ, पट्टी, आसपुर देवसरा व जो भी किसी कारण से पहले दूसरे व तीसरे सत्र में ज्वाइन नहीं कर पाए है। चतुर्थ सत्र में प्रतिभाग कर ले अन्यथा की स्थिति में स्वयं जिम्मेदार होंगे। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे जिला स्काउट मास्टर सुशील कुमार सिंह जिला व्यायाम शिक्षिका मंजू सिंह ब्लॉक व्यायाम शिक्षक कौशलेंद्र सिंह ब्लॉक व्यायाम शिक्षक शैलेश सिंह ब्लाक व्यायाम शिक्षक खुर्सीद अली व ब्लॉक व्यायाम शिक्षक रामसुख प्रजापति व नगर क्षेत्र सदर शिवगढ़ मांधाता लक्ष्मणपुर के खेल अनुदेशकों द्वारा प्रशिक्षण लिया गया। प्रशिक्षक के रूप में अरविंद कुमार सिंह आदित्य बाजपेई वह कैमरामैन संजय कुमार थे। यह प्रशिक्षण ग्राम विकास संस्थान अफीम कोठी प्रतापगढ़ में मंजू देवी प्राचार्य की देखरेख में हुआ।

रानी लक्ष्मीबाई आत्म प्रशिक्षण के दौरान मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

ब्लाक परिसर में सामुदायिक शौचालय बनकर तैयार

वर्षो बाद मांधाता ब्लॉक में बुनियादी सुविधा को अशफाक अहमद किया बहाल

अखंड भारत संदेश

ब्लाक परिसर में बनकर तैयार सामुदायिक शौचालय।

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। मानधाता ब्लाक के सृजन को वर्षो बीत गए। कई ब्लाक प्रमुख आए और कुर्सी की शोभा बढाकर चलते बने, लेकिन ब्लाक परिसर मे सामुदायिक शौचालय जैसी बुनियादी समस्या पर किसी ने दिलचस्पी नही दिखाई।

ब्लाक परिसर मे दूर दराज से प्रतिदिन सैकड़ो लोगो का आना जाना होता है। सामुदायिक शौचालय न होने से लोगो को परेशानी का सामना करना पड़ता था पिछले कई वर्षो से समाज के लोग जिम्मेदार लोगों के सामने इस समस्या को उठा रहे थे लेकिन किसी ने कभी गंभीरता नहीं दिखाया। इसरार अहमद के ब्लाक प्रमुख बनने के बाद इस समस्या की खबर सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी तो ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि अशफाक अहमद ने समस्या का संज्ञान लिया और क्षेत्र पंचायत से सामुदायिक शौचालय के निर्माण का निर्णय लिया, लोगो का कहना है कि वर्षो से शिकायत के बाद भी जो काम नही हुआ वह अशफाक अहमद ने कर दिखाया। अगर मन मे जनता के हित के लिए विकास कार्य करने की भावना हो तो जरुरी नही है कि आप किसी के शिकायत का इन्तजार किया जाय। पिछले ढाई वर्ष के कार्यकाल में वर्षो से लम्बित कार्यो को बगैर किसी भेदभाव के अशफाक अहमद ने पूरा किया है। राजनीतिक दुर्भावना के चलते जो लोग तंज कस रहे थे या फिर जो लोग राजनीतिक विरोधियो के इशारे पर अशफाक अहमद के खिलाफ सोशल मीडिया पर तरह-तरह से आलोचना कर रहे थे। आज वह भी अशफाक अहमद के कार्य को देखकर सराहना कर रहे हैं।

अशफाक अहमदं के विकास कार्यों की हो रही तारीफ

हिस्ट्रशीटर समेत पांच बदमाशों को गिरफ्तार करने में पुलिस को मिली बडी कामयाबी

गिरफ्तार बदमाशों के खिलाफ कई थानों में दर्ज हैं विभिन्न आपराधिक मुकदमे

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले के कई थानों में विभिन्न आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे पांच बदमाशों को गिरफ्तार करने में पुलिस को बडी सफलता हासिल हुई है। गिरफ्तार बदमाशो ने एक लालगंज कोतवाली का हिस्ट्रीसीटर भी है। गिरफ्तार बदमाशों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर शनिवार को पुलिस ने जेल भेज दिया है।

कोतवाली लालगंज का प्रभार देख रहे प्रशिक्षणाधीन आईपीएस अमृत जैन को शुक्रवार को जलेसरगंज इलाके में कुछ बदमाशों के इकटठा होकर किसी आपराधिक घटना को अंजाम दिये जाने की योजना बनाने की सूचना मिली। इस पर आईपीएस अमृत जैन ने स्वाट टीम व कोतवाली पुलिस फोर्स के साथ बदमाशों की घेराबंदी शुरू की। इसकी भनक लगते ही फायरिंग करते बदमाश भागने लगे थे। लेकिन तगडी घेराबंदी करते हुए पुलिस ने हिस्ट्रीसीटर सलमान पुत्र मकबूल निवासी ककरहिया खानापटटी को गिरफ्तार करने मे सफलता हासिल की। इसके बाद पुलिस ने दबिश देकर हिस्ट्रीसीटर सलमान के चार अन्य साथियों लीलापुर थानान्तर्गत हदिराही निवासी सुनील पुत्र मेवालाल, ओरी का पुरवा सगरा सुंदरपुर निवासी सुनील वर्मा पुत्र दारा वर्मा तथा सगरा सुंदरपुर निवासी अभिषेक वर्मा पुत्र स्व. श्यामसुंदर वर्मा व लालगंज कोतवाली के पूरे वंशी निवासी लवकुश वर्मा पुत्र दर्शन वर्मा को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की। आईपीएस अमृत जैन ने बताया कि गिरफ्तार किये गये बदमाशों पास से एक तमंचा दो खोखा व दो जिन्दा कारतूस, दो नाक की कील, नौ चोरी के मोबाइल, चार चोरी गयी बाइकें तथा तेईस हजार तीन सौ रुपए की नकदी की बरामदगी हुई है। गिरफ्तार किये गये बदमाश गैंग बनाकर लूट चोरी, छिनैती, आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे थे। इनके खिलाफ लालगंज कोतवाली के साथ ही सांगीपुर, लीलापुर, महेशगंज थानों में भी आपराधिक मुकदमें दर्ज हैं। इनके गैंग की लीडर सलमान कोतवाली लालगंज का हिस्ट्रीसीटर है। पुलिस गिरफ्तार किये गये बदमाशों के दो साथियों जलेसरगंज निवासी सददाम व ककरहिया निवासी दिलशाद की तलाश में जुटी हुई है। पुलिस को मिली इस बड़ी कामयाबी पर एसपी सतपाल अंतिल, एएसपी पश्चिमी रोहित मिश्र ने पीठ थपथपाई है।

हौदेश्वरनाथ गंगा नदी में नाव पलटने से चारों को पुलिस ने पानी में कूदकर बचाया

ड्यूटी पर मौजूद रहे पुलिस कर्मियों को लोगों ने स्वागत करते हुए मिठाई खिलाई

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जिले के हथिगवां थाना क्षेत्र के अंतर्गत हौदेश्वर नाथ मंदिर किनारे श्रावण मास का मेला चल रहा है जिसमे जनपद रायबरेली निवासी पवन कुमार (21) वर्ष पिंटू कुमार (22) वर्ष अंकिता (19) वर्ष दर्शन व घूमने आए थे।

ये लोग वोट पर सवार होकर नाविक विनय निषाद के साथ गंगा नदी मे बोटिंग के दौरान अचानक नाव पलट गई जिसमे सवार चारों लोग पानी मे डूबने लगे शोर मचने पर मंदिर ड्यूटी में तैनात मुख्य आरक्षी नागेंद्र अवस्थी, फायरमैन दिलीप कुमार कांस्टेबल प्रवीण कुमार कांस्टेबल मानवेंद्र कांस्टेबल विपिन द्वारा तत्काल अपनी जान की परवाह न करते हुए बगैर वर्दी की गरिमा और कर्तव्य को सर्वोपरि मानते हुए करीब 500 मीटर दूर तक पानी में बह रहे चारों लोगों को सुरक्षित बचा लिया।

मंदिर पर मौजूद दर्शनार्थी तथा मंदिर प्रशासन द्वारा सभी जवानों को माला पहना कर मिठाई खिलाई गई। अंकिता, जिसे पुलिस बल द्वारा बचाया गया) थानाध्यक्ष संतोष सिंह सहित सभी पुलिस बल को राखी बांध कर बहन की रक्षा हेतु शुभकामनाएं दी गई। इस मौकें पर भारी संख्या मे मेले मे मौजूद लोगो ने हथिगवा पुलिस की सराहना किया।

हथिगवां प्रभारी संतोष सिंह व जाबाज पुलिस कर्मियों का स्वागत करते दर्शनार्थीगण।

खबर संक्षेप

राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति के लिए 18 सितम्बर तक करें ऑनलाइन आवेदन

कौशाम्बी। राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना परीक्षा 2024-25 दिनांक 05 नवम्बर 2023 को प्रदेश के सभी जनपदो में निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर आयेजित किया जाना है। यह जानकारी जिला विद्यालय निरीक्षक ने देते हुए बताया कि परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन 18 सितम्बर 2023 तक किया जा सकता है। ऑनलाइन आवेदन के अतिरिक्त डाक द्वारा या अन्य किसी माध्यम से आवेदन स्वीकार्य नही किये जायेंगे। परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन करने तथा परीक्षा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

पिता ने पुत्र के साथ मिलकर बेटी को उतारा मौत के घाट

दिनदहाड़े बालिका की हत्या से इलाके में दहशत आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

नेवादा कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के मुजफ्फरपुर टिकरी गांव में शनिवार को दिनदहाड़े पिता ने अपने बेटो के साथ मिलकर अपनी ही बेटी को कुल्हाड़ी से काट डाला है जिससे बेटे की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई है दिनदहाड़े हत्या की घटना के बाद गांव क्षेत्र में सनसनी फैल गई लोग घरों के भीतर घुस गए लोगों के दरवाजे बंद हो गए मामले की सूचना पुलिस को मिली तो पुलिस अधीक्षक अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्राधिकारी चायल समेत कई थाने की फोर्स घटनास्थल पर पहुंची बेटी की हत्या करने के बाद भाग रहे पिता पुत्र को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है बालिका के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मामले में मुकदमा दर्ज कर पुलिस आरोपियों पर कठोर कार्रवाई कर रही है। घटनाक्रम के मुताबिक सराय अकिल थाना क्षेत्र के मुजफ्फरपुर टिकरी गांव की प्रीति सिंह उम्र लगभग 17 वर्ष पुत्री मनराखन सिंह गांव के बच्चा सोनकर पुत्र केश लाल सोनकर से प्रेम करती थी दोनों प्रेमी युगल छिप-छिपकर मिलते थे यह बात प्रीति सिंह के परिजनों को खराब लगती थी गैर बिरादरी के लड़के से मिलने के लिए परिजनों ने कई बार प्रीति सिंह को मना किया लेकिन प्रेम में दीवानी प्रीति सिंह ने बच्चा सोनकर से मिलना नहीं बंद किया इसी बात से आक्रोशित परिजनों ने शनिवार को प्रीति सिंह को समझने का प्रयास किया लेकिन प्रीति मानने को तैयार नहीं थी लोक लाज का हवाला देते हुए प्रीति सिंह के पिता मनराखन सिंह ने अपने बेटों के साथ मिलकर प्रीति सिंह पर कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ हमला कर दिया दिनदहाड़े घटी घटना को देखने के बाद ग्रामीणों की रूह कांप गयी लेकिन किसी का साहस नहीं था कि वह प्रीति सिंह को बचाने के लिए आगे बढ़ सके कुल्हाड़ी के लगातार वार से प्रीति सिंह की घटनास्थल पर तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई है घटनास्थल पर चारों ओर खून बिखर गया दिनदहाड़े गांव में हत्या की घटना के बाद भयभीत ग्रामीणों ने दरवाजा बंद कर लिया ग्रामीण घर के भीतर घुस गए विरोध करने का किसी ने साहस नहीं किया मामले की सूचना थाना पुलिस को मिली पुलिस ने पूरे प्रकरण की जानकारी आला अधिकारियों को दी दिनदहाड़े बालिका की हत्या की जानकारी मिलते ही पुलिस अधीक्षक बृजेश श्रीवास्तव अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्राधिकारी चायल सहित भारी फोर्स घटना स्थल पर पहुंची हत्या के बाद मौके से भाग रहे पिता पुत्र को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है बालिका केशव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है गांव में भय एवं दहशत का माहौल है।

न्यूज झरोखा

कड़ा थाना में एसडीएम और सीओ ने सुनी समस्याएं कुल 6 मामले आये 4 का मौके पर किया निस्तारण

कड़ा कौशाम्बी। शनिवार को कड़ा धाम थाने में थाना दिवस का आयोजन हुआ समाधान दिवस में पहुंच कर फरियादियों ने अधिकारियों के सामने अपनी समस्याएं सामने रखी थाना समाधान दिवस में एसडीएम सिराथू सौम्य मिश्रा व क्षेत्राधिकारी सिराथू अवधेश विश्वकर्मा ने फरियादियों की समस्याओं को सुना समाधान दिवस के अवसर पर कुल 6 मामले सामने आये जिसमें 4 मामलों का अधिकारियों ने मौके पर ही निस्तारण कर दिया शेष मामलों के निस्तारण के लिए राजस्व कर्मियों और पुलिस को निर्देशित किया गया है उप जिलाधिकारी ने लेखपालों को निर्देश देते हुए कहां कि जमीन संबंधित मामले का निस्तारण टीम बना कर करे इस मौके पर कडाधाम थाना अध्यक्ष आशुतोष सिंह, उपनिरीक्षक विजय शंकर मौर्य,रणजीत सिंह, अलीपुर चौकी इंचार्ज,राकेश कुमार सिंह,मिश्रीलाल चौधरी, विक्रम सिंह,राजू सहित कड़ा धाम पुलिस बल मौजूद रही।

थाना समाधान दिवस में नायब तहसीलदार सौरभ कुमार सिंह और थाना प्रभारी ने सुनी फरियादियो की समस्या

कौशाम्बी। थाना चरवा में शनिवार को थाना समाधान दिवस के अवसर पर नायब तहसीलदार सौरभ कुमार सिंह व नव नियुक्त चरवा थाना प्रभारी विनोद कुमार सिंह ने लोगों की समस्याओं को सुना। इस दौरान कुल 7 शिकायते प्राप्त हुए जिसमें से 4 राजस्व के मामले से संबंधित और 3 पुलिस सम्बन्धित मामले सामने आए। पुलिस सम्बन्धित मामलों का मौके पर ही निस्तारण किया गया और राजस्व के मामलों को गंभीरता से लेते हुए राजस्व विभाग के आला अधिकारियों को स्थांतरित करते हुए जांच के आदेश देते हुए जल्द से जल्द निस्तारण करने के निर्देश दिए गए हैं, बाकी मामलों को संबंधित विभागों को भेज दिया गया। नायब तहसीलदार सौरभ कुमार सिंह ने कहा कि थाना समाधान दिवस का आयोजन आमजन की समस्याओं के तत्काल समाधान के लिए ही किया जाता है। अधिक से अधिक पीड़ित लोगों को इसका लाभ उठाना चाहिए। राजस्व और पुलिस विभाग से संबंधित शिकायतों का निस्तारण आपसी सामंजस्य से सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही नही होनी चाहिए। चरवा थाना प्रभारी विनोद कुमार सिंह ने कहा कि पुलिस को आमजन के साथ सामंजस्य बनाकर काम करना चाहिए। थाने में आए हुए फरियादियों से सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए। इस अवसर पर सैय्यद सराय चौकी इंचार्ज अयोध्या कुमार, बरियांवा चौकी इंचार्ज रवि शंकर यादव, सब इंस्पेक्टर गिरीश कुमार , सब इंस्पेक्टर श्री भगवान राम , समस्त पुलिस बल, समेत कानूनगो एवम समस्त हल्का के लेखपाल थाना समाधान दिवस के अवसर पर मौजूद रहे। साथ ही साथ चरवा थाना क्षेत्र इलाके के तमाम गणमान्य लोग और फरियादी समाधान दिवस में उपस्थित रहे।

समाधान दिवस में नायब तहसीलदार अंकिता पाठक ने सुनी फरियादियों की समस्या

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना में शनिवार को समाधान दिवस पर नायब तहसीलदार सिराथू अंकिता पाठक व इंस्पेक्टर कोखराज राकेश कुमार ने फरियादियों की समस्याओं को सुना और जमीन से जुड़े विवादित मामलों को पुलिस बल का सहयोग लेकर निपटारा कराने को निर्देशित किया अधिकारियों ने कहा कि राजस्व के मामले में पुलिस का सहयोग लेकर के मामले का निस्तारण करने से मौके में शांति व्यवस्था बनी रहती है समाधान दिवस के अवसर पर 12 फरियादियों ने अपनी समस्याएं अधिकारियों के सामने रक्खी जिसमें मौके पर तीन मामले का निस्तारण किया गया वही बाकी मामलों में टीम के साथ निस्तारण को निर्देशित किया गया इस मौके पर चौकी प्रभारी सिंघिया राम नारायण सिंह चौकी प्रभारी शहजाद पुर परमेश लेखपाल लोकनाथ पाण्डेय ,दिलीप कुमार,मान सिंह,ज्ञान पाल, अनिल कुमार, देवेंद्र सिंह, नरेंद्र सिंह, साहित्य इलाके के तमाम गणमान्य लोग और फरियादी समाधान दिवस में उपस्थित रहे

थाना पहुंचकर सीओ ने सुनी फरियादियों की समस्याएं

चायल कौशाम्बी। समाधान दिवस का आयोजन पिपरी थाने में शनिवार को हुआ पिपरी थाना में आयोजित थाना समाधान दिवस में सी.ओ चायल योगेन्द्र कृष्ण नारायण पहुंचे और उन्होंने फरियादियों की समस्याओं को सुना मौके पर पांच फरियादियों ने अपनी समस्याएं अधिकारियों को बताई जमीन संबंधी मामलों को निस्तारण के लिए क्षेत्राधिकारी ने राजस्व और पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारित करने का निर्देश दिया है पिपरी थाना के तिलगोड़ी व चायल चौकी के नौवापुर गांव के विवादित मामले के निस्तारण के लिए राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारण के लिए तत्काल मौके पर भेजे गए हैं क्षेत्राधिकारी ने कहा कि इस मामले का निस्तारण तत्काल किया जाए उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि समाधान दिवस के शिकायतों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी समाधान दिवस के शिकायती पत्रों का गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण कर फरियादियों को संतुष्ट किया जाए इस मौके पर राजस्व कर्मियों सहित थाना अध्यक्ष पुलिस चौकी इंचार्ज सिपाही और क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

नगर पंचायत कड़ाधाम दारानगर अध्यक्ष पद के पुनः मतदान के लिए याचिका दाखिल, प्रत्याशियों को भेजा सम्मन

कौशाम्बी। नगर पंचायत कड़ा धाम दारानगर के अध्यक्ष पद के लिए भाजपा की मंडल अध्यक्ष श्रीमती दीपा श्रीवास्तव को पार्टी की प्रत्याशी बनाया गया था। चुनाव में अनियमितता एवं फर्जीवाड़ा पाए जाने के कारण भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्रीमती दीपा श्रीवास्तव ने पुनः मतदान के लिए जनपद न्यायालय कौशांबी में चुनाव याचिका दाखिल की जनपद न्यायालय ने चुनाव याचिका स्वीकार करते हुए सभी प्रत्याशियों को सम्मन भेजा है।जिला जज कौशांबी द्वारा नगर पंचायत कड़ा धाम के अध्यक्ष पद के लिए सभी प्रत्याशियों को सम्मन भेजने पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं में खुशी की लहर है।

पूर्व विधायक के स्कूल को बदनाम करने की रची गई साजिश का हुआ पदार्फाश

ट्विटर पर झूठी शिकायत भेजने वाले की बढ़ी मुसीबत पुलिस कर सकती है जल्द गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता के स्कूल मां गायत्री मेमोरियल कौशांबी प्रेसीडेंसी स्कूल एंड कॉलेज भरवारी को फिर बदनाम करने के प्रयास की साजिश समाज विरोधी लोगो द्वारा किया गया लेकिन शिक्षा विभाग के अधिकारी और पुलिस की जांच के दौरान विद्यालय की बेदाग छवि उभर कर सामने आई है और झूठी शिकायत करने वाले लोगों के चेहरे बेनकाब हो गए हैं 5 महीने पहले घर में लगी बच्चे की चोट की फोटो ट्विटर में वायरल कर विद्यालय को बदनाम करने के प्रयास किए गए थे लेकिन जांच के दौरान शिकायत झूठी पाई गई जिस पर ट्विटर पर झूठी शिकायत करने वाले लोगों के विरुद्ध पुलिस मुकदमा दर्ज कर जल्द गिरफ्तार कर सकती है। जानकारी के मुताबिक आराध्य द्विवेदी पुत्र देवदत्त द्विवेदी निवासी चरवा मां गायत्री मेमोरियल कौशांबी प्रेसीडेंसी स्कूल एंड कॉलेज परसरा भरवारी में कक्षा 3 का छात्र है समाज विरोधी लोगों ने ट्विटर के माध्यम से अधिकारियों को शिकायत करते हुए आरोप लगाया कि विद्यालय के शिक्षक द्वारा छात्र की बेरहमी से पिटाई की गई है जिससे उसे चोट आई है ट्विटर में चोट की फोटो भी वायरल की गई मामले को शिक्षा विभाग और पुलिस विभाग के अधिकारियों ने संज्ञान लिया और पुलिस के साथ शिक्षा विभाग के अधिकारी जांच करने के लिए शनिवार को विद्यालय परिसर में पहुंचे जहां उन्होंने छात्र आराध्य द्विवेदी और उसके पिता से बयान लिया स्कूल में पढ़ने वाले छात्र को सामने बुलाया गया उसके चेहरे में कोई चोट के निशान नहीं है जबकि ट्विटर में छात्र की जो फोटो लगाई गई है उसमें चोट के निशान दिखाई पड़ रहे हैं स्कूल में पढ़ने वाले छात्र आराध्य द्विवेदी और उनके पिता ने शिक्षक द्वारा पिटाई की घटना से इनकार किया है ट्विटर में शिकायत के समय बच्चे की जो फोटो लगाई गई है जिसमें चोट दिखाई पड़ रही है बच्चों को सामने बुलाया गया बच्चों के चेहरे पर किसी प्रकार के चोट का निशान नहीं है जांच अधिकारियों के सामने छात्र और उसके पिता ने शिक्षक द्वारा पिटाई की घटना से पूरी तरह से इनकार किया है विद्यालय की प्रधानाचार्य सीमा पवार ने कहा की साजिश के तहत विद्यालय को बदनाम करने की कोशिश की गई है लेकिन विद्यालय को बदनाम करने वालों के चेहरे बेनकाब हो गए हैं और विद्यालय को झूठी तरह से बदनाम करने वाले लोगों द्वारा झूठा ट्विटर भेजकर पुलिस और अधिकारियों को परेशान करने के मामले में आरोपियों पर कार्यवाही की जाए झूठी शिकायत भेज कर पूर्व विधायक के विद्यालय को बदनाम करने वाले लोगों पर मुकदमा दर्ज कर पुलिस जल्द गिरफ्तार कर सकती है।

धोखाधड़ी की आरोपी प्रधानाचार्य को वर्षों बाद नहीं गिरफ्तार कर सकी कोखराज पुलिस।

अखंड भारत संदेश

जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा आरोपित 42 लाख 89 हजार 042 रुपए गबन का आरोप प्रधानाचार्य नीलम पर है

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्य नीलम के विरुद्ध अदालत के निर्देश पर 8 सितंबर 2022 को मुकदमा अपराध संख्या 549 सन 2022 धारा 419, 420 ,467,468,471,409 के तहत धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज करने के बाद आरोपी प्रधानाचार्य को गिरफ्तार करना शायद थाना पुलिस भूल गई है कस्तूरबा गांधी बालिका इंटर कॉलेज के उप प्रबंधक महेश कुमार की याचिका की सुनवाई करते हुए भ्रष्टाचार के मामले में अदालत ने कोखराज थाना पुलिस को मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दिया था अदालत के निर्देश पर धोखाधड़ी भ्रष्टाचार की आरोपी प्रधानाचार्य नीलम के विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा तो दर्ज कर लिया लेकिन धीरे-धीरे साढ़े ग्यारह महीने का समय बीत गए हैं लेकिन प्रधानाचार्य नीलम के विरुद्ध दर्ज मुकदमे में कोखराज पुलिस रत्ती भर आगे नहीं बढ़ सकी है जबकि प्रधानाचार्य नीलम कस्तूरबा गांधी बालिका इंटर कॉलेज भरवारी में मौजूद रहती है थाने से 3 किलोमीटर दूर की विवेचना और साक्ष्य एकत्रित करने में कोखराज पुलिस के विवेचक को साढ़े ग्यारह महीने का समय बीत चुके हैं लेकिन अभी तक भ्रष्टाचार के आरोप में पुलिस ने साक्ष्य एकत्रित कर आरोपी प्रधानाचार्य नीलम को गिरफ्तार कर जेल नहीं भेजा है जिससे कोखराज पुलिस के निष्पक्ष विवेचना पर सवाल खड़े हो रहे हैं जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा आरोपित 42 लाख 89 हजार 042 रुपए गबन का आरोप प्रधानाचार्य नीलम पर है पुलिस की लापरवाही से विद्यालय की रकम की वसूली प्रधानाचार्य नीलम से नहीं हो पा रही है।

सड़क हादसे में घायल सिपाही की इलाज के दौरान मौत

3 वर्ष से कौशांबी में तैनात सिपाही वर्तमान में 112 डायल में कर रहा था ड्यूटी

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली के बस स्टाप के पास अज्ञात ट्रक ने सिपाही को टक्कर मार दी जिससे सिपाही गंभीर रूप से घायल हो गया मौके पर पहुंचे कोतवाल और पुलिस अधिकारी घायल सिपाही को इलाज के लिए प्रयागराज ले गए इलाज के दौरान स्वरूप रानी अस्पताल प्रयागराज में घायल सिपाही की मौत हो गई है मृतक सिपाही मूल रूप से रायबरेली जनपद के सालोन थाना क्षेत्र के पुरेरनी किठावा गांव का रहने वाला है वर्ष 2011 में सिपाही की भर्ती हुई थी। जानकारी के मुताबिक सिपाही बलबीर सिंह यादव पुत्र जगदीश प्रसाद मूल निवासी पुरे रनी किठावा थाना सालोंन जनपद रायबरेली लगभग 3 वर्षों से कौशांबी जिले में तैनात था इन दिनों 112 डायल में हेडकांसटेबल के रूप में वह कार्यरत थे आज शनिवार की दोपहर बाद सैनी बस स्टॉप के पास अज्ञात ट्रक ने सिपाही को टक्कर मार दिया जिससे सिपाही गंभीर रूप से घायल हो गए आसपास रहे लोगों और कोतवाली पुलिस ने नजदीकी अस्पताल में घायल सिपाही को दिखाया किंतु गंभीर स्थिति देख डॉक्टरों ने प्रयागराज ले जाने की सलाह दिया पुलिस ने घायल सिपाही को कसिया स्थित अस्पताल में भी दिखाया किंतु डॉक्टरों ने वहां से भी जवाब दे दिया और प्रयागराज ले जाने की सलाह दी पुलिसकर्मी घायल सिपाही को प्रयागराज के स्वरूप रानी अस्पताल ले गए जहां इलाज के दौरान सिपाही की मौत हो गई है सिपाही की मौत की जानकारी मिलने के बाद पुलिस कर्मियों और सिपाही के जानने वालों में शोक की माहौल है घटना की सूचना सिपाही के परिजनों को दे दी गई है।

भदोही के युवक की सड़क हादसे में कौशांबी में मौत

एक अन्य घटना में तीन लोग घायल

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज क्षेत्र में दो अलग-अलग सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई है और तीन लोग घायल हैं पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक भदोही जनपद का रहने वाला बताया जाता है घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है। घटनाक्रम के मुताबिक नितिन सिंह उम्र 30 वर्ष पुत्र घनश्याम सिंह निवासी जनपद भदोही शनिवार को बाइक से घर भदोही जा रहे थे नितिन सिंह जैसे ही कोखराज थाना क्षेत्र के टोल प्लाजा के पास पहुंचे किसी वाहन ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया जिससे बाइक समेत नितिन सिंह सड़क पर गिर पड़े और घटनास्थल पर तड़प तड़प कर उनकी दर्दनाक मौत हो गई हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पुलिस पहुंची है ग्रामीणों की भीड़ लग गई है मृतक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और हादसे की सूचना मृतक के परिजनों को पुलिस ने दे दी है। दूसरी घटना कोखराज थाना क्षेत्र के पेट्रोल पंप के पास की है शनिवार की दोपहर एक बाइक से तीन लोग जा रहे थे जैसे ही कोखराज पेट्रोल पंप के पास पहुँचे तेज रफ़्तार चार पहिया वाहन ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी है जिससे बाइक सवार बाइक समेत सड़क पर गिर पड़े हैं हादसे में तीनों लोग गंभीर घायल हो गए हैं स्थानीय लोग और पुलिस की मदद से एंबुलेंस बुलाकर घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है खबर लिखे जाने तक घायलों का नाम पता नहीं मिल सका है।

कृषि की नवीनतम तकनीकी को कृषकों तक पहुंचाया जाए : मुख्य विकास अधिकारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी द्वारा कार्यालय कक्ष में केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार की प्राथमिकता कार्यक्रम-उ0प्र0 मिलेट्स पुनरोद्धार, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत कार्यक्रम एवं सब मिशन आन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन (आत्मा) कार्यक्रम की गवर्निंग बोर्ड की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिये प्राचीन काल से भारतीय आहार का प्रमुख भाग रहें, श्री अन्न (मिलेट्स) के उपभोग के प्रति कृषकों को जागरूक किया जाए धान, गेहूँ दलहनी फसलों में क्षेत्र आच्छादन तथा उत्पादकता में वांछित वृद्धि कर कुल उत्पादन में वृद्धि करने का प्रयास किया जाए। इसके साथ ही उन्होंने मृदा की उर्वरकता को बनाये रखते हुए उत्पादकता में वृद्धि तथा कृषि की नवीनतम तकनीकी को कृषकों तक पहुँचाने एवं प्रसार तंत्र को सहयोगी विभागों के माध्यम से क्रियान्वित करने के निर्देश दियें बैठक में उप कृषि निदेशक सत्येन्द्र तिवारी, जिला कृषि अधिकारी मनोज गौतम, भूमि संरक्षण अधिकारी, जिला कृषि रक्षा अधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, मत्स्य विकास अधिकारी, उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी, उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी एवं लीड बैंक मैनेजर सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

सैनी कोतवाली क्षेत्र में दिनदहाड़े दो बाइक चोरी

सिराथू सर्किल में मोटर साइकिल चोर चुस्त, क्षेत्रीय पुलिस सुस्त

अझुवा कौशांबी। सिराथू सर्किल में इन दिनों मोटर साइकिल चोर गिरोह सक्रिय है,पुलिस केवल रिपोर्ट दर्ज करने तक सीमित रह गई है आज शनिवार को मनबढ़ चोरों ने कोतवाली से चंद कदम की दूरी तहसील परिसर और सैनी सब्जी मंडी से मोटरसाइकिल चोरी कर पुलिस के इकबाल को चुनौती दी ।पहला मामला सैनी सब्जी मंडी का है जहां राहुल सोनकर पुत्र स्व. फूलचंद्र सोनकर निवासी चक खोदायगंज थाना मंझनपुर सब्जी लेने आया था घर वापस जाने के लिए खड़ी की हुई मोटरसाइकिल के पास पहुंचा जहां अपनी पल्सर बाइक गायब पाया भुक्तभोगी ने पुलिस को सूचना दिया पुलिस ने कागजी कोरम पूरा किया दूसरा मामला सिराथू तहसील परिसर का है जहां श्रवण कुमार की यूपी73 0506 पल्सर बाइक को पीड़ित के चोर देखते देखते हेलमेट और अंगौछा फेंक कर बाइक को लेकर फरार होते देखता रह गया दोनो पीड़ितों ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

चरवा कोतवाल ने सिपाहियों के साथ किया पैदल गस्त

कौशाम्बी। चरवा कोतवाली का चार्ज जब से कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने संभाला है चरवा क्षेत्र में पुलिस की गस्त बढ़ गई है चरवा कोतवाल प्रतिदिन पुलिस टीम के साथ क्षेत्र में पैदल गस्त कर कानून व्यवस्था की जानकारी ले रहे हैं अपराध और अपराधियों को कड़ी चेतावनी दे रहे हैं गस्त के दौरान कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने क्षेत्र के लोगों से कहा है कि संदिग्ध लोगों की सूचना थाना पुलिस को दें उन्होंने कहां कि भय मुक्त समाज बनाने में पुलिस हमेशा तत्पर है पैदल भ्रमण के दौरान उन्होंने व्यापारियों से कहा कि वह दुकानों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जिससे अपराधियों की गतिविधियों का पता लगाने में आसानी हो सके उन्होंने चरवा चौराहे के व्यापारियों से कहा कि वह सार्वजनिक स्थल सड़क पर वाहनों को खड़ा ना करें निर्धारित स्थान पर वाहन खड़ा करें जिससे यातायात की समस्या ना उत्पन्न हो।

संपादक की कलम से

कृषि नीति के बुने जाल में उलझा है देश

आधे किसानों को सब्सिडी नहीं मिलती है क्योंकि या तो वे भूमिहीन या पट्टेदार हैं और इस प्रकार उस भूमि से बंधे नहीं हैं जिस पर वे खेती करते हैं। कृषि नीति को लेकर जो जाल हमने बुना है उसने हमें उलझा दिया है जिसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो गया है। बाजार बेहतर ढंग से कार्य कर सकें इसके लिए हमें बड़े पैमाने पर सुधार करने की आवश्यकता है। इसमें राज्य की बहुत कम घुसपैठ और किसान को बाजार प्रक्रिया में भाग लेने और इससे लाभ उठाने के लिए अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता है। केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि वह इस साल अतिरिक्त दो लाख टन प्याज खरीदेगी। इससे इस साल बफर स्टॉक का लक्ष्य तीन लाख टन से बढ़कर पांच लाख टन हो जाएगा। खास बात यह है कि यह घोषणा 40 फीसदी निर्यात शुल्क लगाए जाने के फैसले के एक दिन बाद आई है। सीधे शब्दों में कहें तो सरकार ने निर्यात को प्रभावी ढंग से घटाकर स्थानीय आपूर्ति में वृद्धि की जिससे कीमतें गिर गईं और फिर वह अपने बफर स्टॉक को बढ़ाने के लिए सस्ते प्याज का भंडारण कर रही है। क्या इससे बाजार तंत्र में दखलदांजी की बू नहीं आती? क्या ऐसा नहीं लगता कि इससे प्याज उत्पादक किसान सरकार को कम कीमत पर प्याज बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं? क्या यह सत्ता का दुरुपयोग नहीं है? एक पूर्व कृषि मंत्री ने यह कहकर निर्यात कर की आलोचना की है कि इससे निश्चित रूप से किसानों को नुकसान पहुंचेगा। ये पूर्व मंत्री एक ऐसे राज्य से आते हैं जो देश के एक तिहाई प्याज की आपूर्ति करता है। किसान पहले से ही निर्यात कर के खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं लेकिन इस आंदोलन का फायदा नहीं हुआ। वैसे कृषि उत्पादों के बाजार तंत्र में इस तरह के मनमाने हस्तक्षेपों की किसानों को आदत है। इस सप्ताह प्याज की महंगाई दर 19 प्रतिशत है। यह दर सरकार के लिए चिंताजनक है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि घरेलू बजट में प्याज का हिस्सा बहुत थोड़ा होता है पर प्याज की कीमतें नेताओं की आंखों में आंसू ला सकती हैं और इतिहास गवाह है कि प्याज की कीमतों की अनियमितता के कारण सरकारें गिरी हैं। मोदी सरकार द्वारा सितंबर 2020 में संसद में प्रस्तावित कृषि कानूनों को याद करें। इन तीन कानूनों में से एक में कीमतों को पूरी तरह से नियंत्रण मुक्त करने और स्टॉकिंग सीमा को हटाने का प्रस्ताव किया गया था। इसके अलावा, निर्यात या आयात पर मनमाने ढंग से प्रतिबंधों को नियंत्रण मुक्त करने की भी पेशकश थी। जब कृषि कानून पेश किए गए थे तो उसी सप्ताह बांग्लादेश में प्याज के निर्यात कार्गो ले जा रहे जाने वाले कई ट्रकों को सीमा पर रोक दिया गया था जिसके कारण किसानों को प्याज की कीमतों में वृद्धि का लाभ नहीं मिल सका। एक तरफ निर्यात रोकने और दूसरी तरफ कृषि बाजारों को नियंत्रण से मुक्त करने की मांग जैसी ये मिश्रित कार्रवाइयां बेईमानी के संकेत देती हैं। अभी जब हम टमाटर की अत्यधिक बढ़ी हुई कीमतों से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं तो उन परिस्थितियों में शायद प्याज पर वर्तमान निर्यात कर एक निरोधक उपाय है। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एनसीसीएफ) और भारतीय राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ (नेफेड) अपने बफर स्टॉक में पहले ही 15 लाख टन से अधिक टमाटर खरीद चुके हैं। टमाटर की कीमत 200 रुपये प्रति किलो तक बढ़ने के कारण वे इन्हें रियायती दरों पर बेच रहे हैं। इस सब्सिडी का भुगतान कहां से किया जाता है? मुद्रास्फीति की भड़की आग को बुझाने के लिए भारत ने नेपाल और शायद अन्य देशों से भी टमाटर का आयात किया है। कितना टमाटर आयात किया है, इसके बारे में जानकारी नहीं है। खुदरा मुद्रास्फीति 7.5 प्रतिशत पर चल रही है जो भारतीय रिजर्व बैंक की उदार सीमा 6 प्रतिशत से काफी ऊपर है।

बिहार में 8 लाख नौकरियों का कॉल और व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था की भरमार

अशोक भाटिया

सत्यजीत रे की 1972 की फिल्म प्रतिद्वंदी के सबसे यादगार दृश्यों में से एक में, नायक से एक नौकरी के साक्षात्कार के दौरान उसके "जीवन में लक्ष्य" के बारे में पूछा गया था। उनका जवाब था, "नौकरी ढूंढने के लिए"। पांच दशक बाद, ऐसा प्रतीत होता है कि रियल और रील का मिश्रण हो गया है, क्योंकि देश को ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा है, जब बड़ी संख्या में नागरिक नौकरी की तलाश कर रहे हैं, लेकिन उन्हें कोई नौकरी नहीं मिल रही है। हालफिलहाल बिहार शिक्षक भर्ती के लिए बंपर भर्तियां निकली हैं। ऐसे में इसकी परीक्षा में करीब 1 लाख 70 हजार से ज्यादा सीटों पर 8 लाख अभ्यर्थी शामिल होने के लिए आ गए । ऐसे में बिहार के साथ-साथ कई अलग-अलग राज्यों के अभ्यर्थी इसमें हिस्सा ले रहे हैं। बताया जाता है कि बिहार में 1 लाख 70 हजार 461 शिक्षकों की बहाली होनी है। इनमें 80 हजार शिक्षकों की नियुक्ति प्राथमिक स्कूलों में होनी है। 57 हजार 618 भर्तियां उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में होनी है और 32 हजार 916 शिक्षकों के पद माध्यमिक स्कूलों में भरे जाने हैं। इसके लिए बिहार लोक सेवा आयोग बिहार के कई शहरों में 2 चरणों में परीक्षा करवानी थी । गुरुवार को इम्तेहान का पहला दिन था। इसके बाद शनिवार को फिर परीक्षा होनी थी । करीब पौने दो लाख पदों के लिए 8 लाख से ज्यादा युवाओं ने फॉर्म भरा था । परीक्षा के लिए पूरे बिहार में 859 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे ।

परीक्षा से पूर्व ही रात 12 बजे से बिहार के अलावा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों से परीक्षार्थी पटना पहुंचने लगे थे। रात को पटना रेलवे स्टेशन का एक नंबर प्लेटफॉर्म खचाखच भरा हुआ था। इनमें से कुछ लोग ऐसे थे, जिन्हें पटना शहर में होटल नहीं मिला, या मिला भी तो इतना महंगा कि उसका किराया दे पाना इनके लिए मुश्किल था। इसलिए ये लोग रात गुजारने के लिए रेलवे स्टेशन पर ही ठहरे, जबकि कुछ लोग ऐसे थे, जो दूसरे राज्यों से पहले पटना पहुंचे। उनका सेंटर पटना के आसपास के शहरों में था, उन्हें वहां पहुंचना था लेकिन न पटना में ठहरने की जगह थी, न आगे जाने के लिए कोई साधन था। इसलिए वे भी सुबह होने के इंतजार में स्टेशन पर ही रुक गए। आलम ये था कि लोग प्लेटफॉर्म पर चादर डालकर बैठे रहे, लेटे रहे। नौकरी की उम्मीद में बड़ी संख्या में लड़कियां और महिलाएं भी पहुंची थीं। उनके साथ परिवार के सदस्य भी थे। कुछ महिलाओं की गोद में छोटे-छोटे बच्चे थे। सबको रात स्टेशन पर ही काटनी पड़ी। पटना में सबसे ज्यादा 40 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे । इसलिए पटना में भीड़ सबसे ज्यादा थी। जब हर तरफ अफरा तफरी मची तो पटना के डीएम चंद्रशेखर सिंह का कहना था कि सरकार का काम इम्तेहान करवाना है, लेकिन उम्मीदवारों के ठहरने का कोई इंतजाम कराना सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, और न ही प्रशासन को सरकार की तरफ से इस तरह का कोई निर्देश मिला है। पटना जैसा हाल जहानाबाद और आरा में भी था। होटल मालिकों ने कमरों के किराये बढ़ा दिये। मुजफ्फरपुर में बारिश हो रही थी, छात्र सड़क पर थे, किसी तरह परीक्षा केंद्र पहुंचे तो वहां भी पानी भरा हुआ था। आलम ये था कि नौकरी की उम्मीद में पहुंचे लड़के लड़कियां पानी में भींगते हुए, जूते चप्पल हाथ में लेकर, दो-दो फीट पानी से गुजर कर परीक्षा केंद्र पहुंचे। नालंदा में 32 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। यहां सुबह से बारिश भी हो रही थी। परीक्षा केंद्रों के आसपास के इलाके में पानी भरा हुआ था जिसकी वजह से ट्रैफिक जाम हो गया। सुबह जब हजारों युवा परीक्षा केंद्रों के लिए निकले तो उन्हें बारिश, जलभराव और ट्रैफिक जाम, तीनों का सामना करना पड़ा। कई परीक्षार्थी वक्त पर नहीं पहुंच पाए। इन लोगों को परीक्षा केंद्र के हॉल में घुसने से रोक दिया गया। बहुत से नौजवान तो वहीं बैठकर रोने लगे। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने माना कि परीक्षा देने वालों की संख्या ज्यादा है, इसलिए दिक्कतें हुई, लेकिन बड़ी बात ये है कि उन्होंने बिहार के लोगों से नौकरी का जो वादा किया था, उसे पूरा कर रहे हैं, इसकी तारीफ होनी चाहिए। बिहार भाजपा के अध्यक्ष सम्राट चौधरी का कहना है कि जब 80 हजार स्टूडेंट्स पहले ही रळएळ की परीक्षा पास कर चुके हैं, तो फिर उन्हें नौकरी देने के लिए इढरउ की तरफ से परीक्षा क्यों कराई जा रही है, इस परीक्षा का कोई मतलब ही नहीं है। जिन्होंने रळएळ की परीक्षा पास की है, उन्हें सीधे नौकरी मिलनी चाहिए। मैं ये सब देखकर आहत हूं, कि नौकरी के लिए इम्तिहान देने आए लड़के लड़कियों को इस कदर बदइंतजामी का सामना करना पड़ा। किस बेहाली में एग्जाम देने पड़े। समझ नहीं आया कि अधिकारियों की संवेदना कहां मर गई थी। कार्यकुशलता भले ही न हो लेकिन इंसानियत तो होनी चाहिए।पटना के आलावा जहानाबाद, आरा, नालंदा, हाजीपुर जैसे कई शहरों में अफरा-तफरी मची । रेलवे स्टेशनों पर, बस अड्डों पर, मंदिरों में, सड़कों पर, जबरदस्त भीड़ रही , जैसे कोई मेला लगा हो। हर जगह लोग चादर बिछाकर बैठे हुए थे। किसी शहर में युवाओं को सिर छुपाने की जगह नहीं मिल रही है। हजारों युवा स्टेशन पर बैठे रहे , कुछ मंदिर में रुके हैं, कोई बस स्टेशन पर चादर बिछाकर वक्त काट रहा है और बहुत से छात्र तो परीक्षा केंद्र के आसपास सड़क पर ही बैठे हैं। होटलों में जगह नहीं रही , इतने होटल हैं भी नहीं कि इतने सारे युवाओं के ठहरने का इंतजाम हो सके। सरकार ने कोई इंतजाम किया नहीं, टेंट तक नहीं लगवाए कि परीक्षा देने आए पहुंचे छात्र धूप और बारिश से बचने के लिए उनका सहारा ले सकें। इसी चक्कर में ज्यादातर लड़के लड़कियों ने प्लेटफॉर्म पर ही रात गुजारी। इन नौजवानों और उनके परिवार वालों की तकलीफ देखकर ही अंदाजा लगा सकते हैं कि सरकार और नेता कितने संवेदनहीन हैं, अफसर कितने बेपरवाह हैं और भीड़ की तस्वीरें देखेंगे तो समझ आएगा कि बेरोजगारी का आलम क्या है।

पटना की हालत पर अफसरों से, मंत्रियों से सवाल पूछे गए तो जवाब मिला कि सरकार सिर्फ इम्तेहान करवाती है, परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था करती है, सरकार का काम परीक्षा देने के वालों को ठहराने का इंतजाम करवाना नहीं हैं। बात सही है। लेकिन सवाल ये है कि सरकारी नौकरी के लिए फॉर्म भरवाए गए, युवाओं से फीस ली गई। सरकार को ये पता था कि कितनी संख्या में उम्मीदवार आने वाले हैं। तो फिर क्या ये देखना सरकार का काम नहीं है कि अगर उम्मीदवार आएंगे तो रहेंगे कहां ? क्योंकि परीक्षा सिर्फ एक दिन नहीं हैं, तीन दिन तक इम्तहान होने हैं। अलग-अलग शिफ्ट में होने हैं। सोचिए, जिन छात्रों ने पूरी रात प्लेटफॉर्म पर जाग कर गुजारी हो, वो अगले दिन परीक्षा केंद्र तक किस हाल में पहुंचेंगे, फिर कैसे परीक्षा देंगे? और अगले दिन के इम्तहान के लिए चौबीस घंटे कहां गुजारेंगे? नीतीश कुमार के सुशासन की पटना रेलवे स्टेशन का हाल देखकर समझा जा सकता है । चूंकि सुबह दस बजे पहली शिफ्ट का इम्तहान था इसलिए एक रात पहले से ही छात्र पटना पहुंचने लगे, और कुछ ही घंटों में पटना रेलवे स्टेशन पर हजारों की भीड़ जमा हो गई। क्या अपने देश के नौजवानों के प्रति बिहार के नेताओं और अफसरों की कोई जिम्मेदारी नहीं है? घर जब कोई बच्चा परीक्षा देने जाता है तो माता पिता उसे रात में आराम से सुलाते हैं, सुबह दही-पेडा खिलाकर, भगवान के आगे हाथ जोड़कर परीक्षा के लिए भेजते हैं। बिहार में स्टेशन पर रात बिताकर, बुरी तरह धक्के खाकर, बिना खाए पिए परीक्षा में बैठने वाले ये युवक युवतियां कितने मजबूर, कितने बेबस होंगे, कितने दुखी होंगे, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। क्या नका गुनाह ये है कि ये शिक्षक बनना चाहते हैं? शिक्षकों की भर्ती तो दूसरे राज्यों में भी होती है, वहां भी परीक्षाएं होती हैं, लेकिन इस तरह के हालात तो कभी नहीं बनते। आखिर बिहार में ही ऐसा क्यों होता है?

गौरतलब यह भी है कि आज तक बिहार में पौन दो लाख शिक्षकों के पद खाली क्यों हैं? कब से खाली हैं? अचानक एक साथ इतने पदों की भर्ती क्यों करनी पड़ी कि 8 लाख लोग परीक्षा देने पहुंच गए? असल में पहले बिहार में शिक्षकों की भर्ती सेन्ट्रल टीचर्स एलिजिबिलिटी टेस्ट और स्टेट टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट में रैंकिंग के आधार पर होती थी। लाखों नौजवान ये परीक्षा पास करके नियुक्ति पत्र मिलने का इंतजार कर रहे थे। 6 साल से नीतीश की सरकार ने भर्ती नहीं की और इस साल अचानक फैसला कर दिया कि अब सीटेट या एसटैट के जरिए भर्ती नहीं होगी। शिक्षकों की भर्ती इढरउ के जरिए की जाएगी। इसके खिलाफ छात्रों ने कई बार आंदोलन किया, पुलिस की लाठियां खाईं लेकिन नीतीश कुमार अपनी ज़िद पर अड़े रहे। चूंकि तेजस्वी यादव ने 10 लाख नौकरियां का वादा कर दिया था, इसलिए चुनाव पूर्व आनन-फानन में शिक्षकों की भर्ती शुरू की गई। पौने दो लाख पदों के लिए परीक्षा का आयोजन कि?ा गया। आठ लाख से ज्यादा नौजवानों ने फॉर्म भर दिया। सरकार ने इतनी बड़ी संख्या में नौजवानों को परीक्षा केंद्र तोआवंटित कर दिए लेकिन उनके लिए कोई और इंतजाम नहीं किया। बड़ी बात ये है कि रेलवे ने छात्रों की संख्या को देखते हुए 5 स्पेशल ट्रेन चलाने का फैसला किया लेकिन नीतीश कुमार की सरकार सोती रही और नतीजा ये हुआ कि हजारों लोग स्टेशन पर रात गुजराते दिखे। हजारों छात्र ऐसे थे जो बारिश में भीगकर, कई-कई किलोमिटर पैदल चलकर परीक्षा केंद्र तक पहुंचे, लेकिन उनमें से बहुतों को घुसने नहीं दिया गया। क्या कोई बताएगा कि बिहार में परीक्षा देने आए इन नौजवानों के साथ इस बदसलूकी का जिम्मेदार कौन है? मंत्री और अफसर जो चाहें बहाना बनाएं, छात्र-छात्राएं इम्तिहान देने के लिए बिहार आए, उनके रहने-ठहरने का इंतजाम और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है, जिसमें नीतीश कुमार की सरकार पूरी तरह फेल हुई।

उपलब्धि को फीका करती घृणा

भारत के चन्द्रयान-3 के बुधवार की शाम को चन्द्रमा पर सफलतापूर्वक उतरने से बहुत पहले ही उसकी कामयाबी लगभग निश्चित समझी जा रही थी साथ ही यह भी तय माना जा रहा था कि इसकी सफलता से (या कहें कि असफल होने पर भी) राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक- तीनों ही तरह के आपसी मतभेद सामने आ जाएंगे। इस उपलब्धि के लिये छीना-झपटी होने का पूर्वानुमान था और यह भी पहले से ही सोच लिया गया था कि इसका उपयोग अपने राजनैतिक विरोधियों और अलग तरह की धार्मिक आस्था रखने वाले लोगों या समूहों के लिये किया जायेगा; पर यह सब इतनी जल्दी होगा, यह नहीं सोचा गया होगा। वैज्ञानिक उपलब्धियां किसी एक देश की नहीं वरन समग्र मानव के ज्ञान व प्रतिभा की देन मानी जाती है। वैज्ञानिक विकास किसी एक देश का नहीं बल्कि वैश्विक होता है। इसलिये विज्ञान सम्बन्धी विचारों और शोधों-आविष्कारों का प्रतिफल दुनिया भर को मिलता है; पर भारतीयों ने अपनी इस उपलब्धि को बहुत संकीर्ण तो बना ही दिया है, उसका उपयोग वे परस्पर नफरत फैलाने के लिये वैसा ही कर रहे हैं जैसा कि धर्म, राजनीति या सामाजिक विचारों का, विशेषकर हाल के वर्षों में करते आ रहे हैं। ऐसा कर-के हम न सिर्फ इस बड़ी उपलब्धि को छोटा बना रहे हैं वरन देश-दुनिया के तरक्की पसंद व वैज्ञानिक चेतना से युक्त वर्गों के बीच स्वयं का कद भी घटा रहे हैं।

चन्द्रयान-3 की सफलता से यह तो साबित हो गया है कि हमारे देश के वैज्ञानिकों की प्रतिभा असीम है और वे अपनी उपलब्धियों का झंडा सर्वोच्च ऊंचाइयों तक फहराना चाहते हैं, लेकिन दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी लोग हैं जो अपनी संकीर्णताओं से ऊपर उठना ही नहीं चाहते। वे नफरत के कीचड़ में गहरे धंसे हुए ही संतुष्ट हैं। अमेरिका, रूस व चीन जैसी सबसे बड़ी अंतरिक्ष शक्तियों के समकक्ष आने के बाद भी हम इस कामयाबी को उसी चश्मे से देख रहे हैं जिसका एक लेंस राजनैतिक विचारों का है तो दूसरा मजहबी है। वैज्ञानिक उपलब्धि को वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसने की बजाय ऐसे लोग चन्द्रयान-3 की सफलता को घृणा बढ़ाने का एक औजार बना रहे हैं। विज्ञान इंसानों को संकुचित विचारों से बाहर निकालने का काम करता है लेकिन लगता है कि भारत में विज्ञान जैसी विधा का भी उपयोग परस्पर नफरत बढ़ाना ही हो गया है। इसलिये इस उपलब्धि पर जो लोग झूम रहे हैं वे अपने मजहब और राजनैतिक विचारों के कारण, न कि विज्ञान में कोई रुचि या विश्वास के चलते। नफरत फैलाने व विरोधी विचारधारा के लोगों को नीचा दिखाने की जल्दबाजी देखिये कि अभी चन्द्रयान-3 ने अपना काम चांद की सतह पर ठीक से प्रारम्भ भी नहीं किया था और आनन-फानन में सोशल मीडिया पर इस कामयाबी को अपनी झोली में डालने के लिये वे लोग उतर पड़े जो मानते हैं कि विकास 2014 के बाद ही हुआ है। कहा जा रहा है कि 'देश की वैज्ञानिक प्रतिभा का सही इस्तेमाल अब कहीं जाकर प्रारम्भ हुआ है।' इसके पहले भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन (इसरो) के अस्तित्व को नकारना तो उनके लिये सम्भव नहीं था लेकिन बहुत चालाकी बरतते हुए संस्थान के आगे बढ़ने का श्रेय विक्रम साराभाई को दिया गया- माइनस जवाहरलाल नेहरू का नैरेटिव गढ़ते हुए। यह जानते हुए भी कि इसरो उन्हीं की देन है लेकिन उन्हें श्रेय न देकर वे अपने उन राजनैतिक आकाओं को खुश करना चाहते होंगे जिन्होंने हाल ही में दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू संग्रहालय का ही नाम बदल डाला है। एक पूरा समूह बुधवार की शाम से विरोधी विचारधारा, खासकर कांग्रेस के शासनकाल व उसकी उपलब्धियों पर पिला पड़ा हुआ है। हालांकि ये लोग इस बात का जवाब नहीं दे पा रहे हैं कि अगर भारत सरकार की देश के वैज्ञानिक विकास में इतनी ही रुचि है तो अंतरिक्ष विज्ञान विभाग के 2023 के बजट में 32 प्रतिशत की कटौती क्यों की गयी है? जिसके कारण चन्द्रयान-3 और आदित्य एल-1 जैसी परियोजनाओं को 12500 करोड़ रुपये कम मिले। यह उससे पिछले साल की तुलना में 8 फीसदी कम राशि थी। अगर बात सियासी मतभेदों तक सीमित होती तो बहुत दिक्कत नहीं थी क्योंकि कांग्रेस मुक्त नारे के साथ आई मौजूदा सरकार हर कदम पर पूर्ववर्ती सरकारों को नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं छोड़ती जो मानती है कि 2014 के पहले कुछ विकास ही नहीं हुआ था। इस उपलब्धि का सबसे दुखद दुरुपयोग वैसा ही हो रहा है जिसकी आशंका थी और जिसका देश आदी हो चुका है। नफरतियों ने चांद पर चन्द्रयान के उतरने को एक मजहब के अनुयायियों पर जीत के रूप में पेश कर दिया है। इस आशय के मीम, संदेश और कार्टून सोशल मीडिया पर खूब वायरल किये जा रहे हैं कि 'कुछ देशों के तो केवल झंडों पर चांद है लेकिन भारत ने तो चांद ही फतह कर लिया है।' ये तो बहुत थोड़े से उदाहरण हैं। इस सफल चन्द्रयान-3 मिशन की आड़ में परस्पर वैमनस्य व घृणा का सैलाब ही सोशल मीडिया बह रहा है। सभी को यह समझना होगा कि यह उपलब्धि पूरी तरह भारतीय तो है ही, सामूहिक भी है। किसी धर्म या राजनैतिक विचारधारा से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। वैज्ञानिक शोध सार्वभौमिक होते हैं जिन पर किसी मजहब या राजनीति से कोई लेना-देना नहीं होता। यदि हम अपनी इस महान उपलब्धि को इस प्रकार से सीमित करेंगे तो हमें इसके प्रति अन्य देशों से सम्मान की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। पहले हम तो इस कामयाबी का सम्मान करना सीखें। यह उपलब्धि देश की मेधा और समर्पण का एक बड़ा हासिल है और यह किसी एक वर्ग की नहीं समग्र मानव की उपलब्धि है। उसे वैसा ही लिया जाना चाहिये।

क्या 'विकास' से बच पाएंगे हिमालयी राज्य?

प्रमोद भार्गव

रेल परियोजनाओं के अलावा यहां बारह हजार करोड़ रुपये की लागत से बारहमासी मार्ग निर्माणाधीन हैं। इन मार्गों पर पुलों के निर्माण के लिए भी सुरंगें बनाई जा रही हैं, तो कहीं घाटियों के बीच पुल बनाने के लिए मजबूत स्तंभ बनाए जा रहे हैं। हालांकि सैनिकों का इन सड़कों के बन जाने से चीन की सीमा पर पहुंचना आसान हो गया है, लेकिन पर्यटन को बढ़ावा देने के लिहाज से जो निर्माण किए जा रहे हैं, उन पर पुनर्विचार की जरूरत है। लगता है, 2013 की केदारनाथ त्रासदी से लेकर हिमाचल और उत्तराखंड में हो रही मौजूदा तबाही तक, नीति-नियंताओं ने कोई सबक नहीं लिया है। नतीजतन चार दिन की बारिश, 112 बार हुए भूस्खलन और पांच बार फटे बादलों से जो बबार्दी हुई उसमें 71 लोग मारे गए। इस मानसून में अब तक हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में 327 लोगों को आपदाओं ने लील लिया,1442 घर जलधाराओं में विलीन हो गए और 7170 करोड़ रुपए की अचल संपत्तियां धराशायी हो गईं। हिमाचल में एक साथ करीब 950 सड़कों पर आवाजाही बंद पड़ी है। बद्री-केदारनाथ राजमार्ग भी ठप्प है। इस तबाही के असली कारण समूचे हिमालय क्षेत्र में बीते एक दशक से पर्यटकों के लिए सुविधाएं जुटाने के परिप्रेक्ष्य में 'जल-विद्युत संयंत्र' और रेल परियोजनाओं की जो बाढ़ आई हुई है, वह है। इन परियोजनाओं के लिए हिमालय क्षेत्र से रेल गुजारने और कई छोटी हिमालयी नदियों को बड़ी नदियों में डालने के लिए सुरंगें निर्मित की जा रही हैं। बिजली परियोजनाओं के लिए भी जो संयंत्र लग रहे हैं, उनके लिए हिमालय को खोखला किया जा रहा है। इस आधुनिक औद्योगिक और प्रौद्योगिकी विकास का ही परिणाम है कि आज हिमालय ही नहीं, हिमालय के शिखरों पर स्थित पहाड़ दरकने लगे हैं। हिमाचल प्रदेश के समरहिल स्थित शिवबाड़ी मंदिर में जो तबाही दिखी, वैसी ही पिछले साल उत्तराखंड के चमोली जिले के जोशीमठ में भी दिखाई दी थी। इस शहर ने कई अप्रिय कारणों से नीति-नियंताओं का ध्यान अपनी ओर खींचा था। 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) द्वारा जारी उपग्रह तस्वीरों ने बारह दिनों में जोशीमठ के 5.4 सेंटीमीटर धंस जाने की चिंता जताई थी। इन प्रामाणिक सच्चाईयों को छिपाने के लिए 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' और उत्तराखंड सरकार ने 'इसरो' समेत कई सरकारी संस्थानों को निर्देश दिए थे कि वे मीडिया के साथ जानकारी साझा न करें। नतीजतन 'इसरो' की बेवसाइट से धरती के धंसने के चित्र हटा दिए गए। सरकार का यह उपाय भूलों से सबक लेने की बजाय उन पर धूल डालने जैसा था। जब धरती को हिलाकर हिमालय का पारिस्थितिकी तंत्र नाजुक बना दिया गया है और घरों में दरारें पड़ने के साथ आधारतल तक धंस रहे हैं।

चन्द्रयान-3 : बना रहे साइंटिफिक टेम्परामेंट

ब्रह्मांड के सबसे खूबसूरत तथा अब तक ज्ञात एकमात्र मानवीय बस्ती वाले ग्रह अर्थात धरती से अपने सबसे नजदीक के खगोलीय पड़ोसी चन्द्रमा को लक्षित कर 14 जुलाई को दागे गये चन्द्रयान-3 ने आखिरकार बुधवार की शाम अपनी यात्रा के 42वें दिन शाम 5 बजकर 45 मिनट पर लैंडिंग की प्रक्रिया प्रारम्भ की। ठीक 6 बजकर 4 मिनट पर करोड़ों देशवासियों का सपना पूरा करते हुए उसके लैंडर ने चांद के सतह को छू लिया। उस वक्त वहां सुबह थी। वैसे तो चन्द्रयान-3 ने पृथ्वी के उपग्रह या चांद कहे जाने वाले इस उपग्रह की ओर बढ़ते हुए प्रारम्भिक चरण से ही सफलता के संदेश दे दिये थे क्योंकि उसके सारे उपकरण एवं सारी प्रणालियां बिलकुल ठीक काम कर रही थीं। पुराने अनुभवों से समृद्ध हुए और पिछली खामियों से सबक लेते हुए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) की प्रतिभा व ज्ञान के प्रतीक चन्द्रयान-3 ने अपनी इस कामयाबी से आधुनिक भारत के निमार्ताओं की दूरदर्शिता एवं वैज्ञानिक सोच का फिर से लोहा भी मनवाया है।

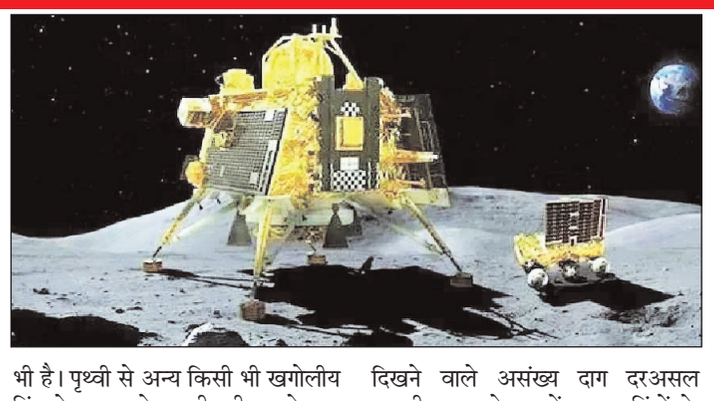

करीब साढ़े चार अरब वर्ष पहले पृथ्वी से मंगल गृह के आकार के एक बड़े ग्रह के टकराने से, जिसे खगोल वैज्ञानिकों ने 'थियाइ नाम दिया है, पृथ्वी से बड़ी मात्रा में मैटर पिघलकर द्रव्य के रूप में अंतरिक्ष में फैल गया। आपस में जुड़ते और गुरुत्वाकर्षण के कारण करोड़ों वर्षों तक पृथ्वी की लगातार परिक्रमा करते हुए पृथ्वी के उस साथी उपग्रह का निर्माण हुआ जिसे आज हम चांद या चंद्रमा के नाम से जानते हैं और जो एक ओर तो विविध कला-विधाओं में रुचि रखने वालों के लिए कभी प्रेरणा तो कभी उपमा या कभी अलंकार के रूप में काम करता है। दूसरी तरफ वह खगोल वैज्ञानिकों व भौतिकशास्त्रियों के लिये जीवन व अनेक जटिल सिद्धातों को हल करने का जरिया भी है। पृथ्वी से अन्य किसी भी खगोलीय पिंड के मुकाबले इसकी दूरी सबसे कम है- केवल 3,84,400 किलोमीटर। इसका व्यास पृथ्वी का एक चौथाई है और पृथ्वीवासियों के लिये आसमान में सूर्य के बाद यह सबसे चमकदार निकाय है- बावजूद इसके कि उसकी खुद की रोशनी नहीं है और वह सूर्य की रोशनी के परावर्तित होने से हमें दिखता है। उस पर दिखने वाले असंख्य दाग दरअसल उसकी सतह से लाखों उल्का पिंडों के टकराने से बने हैं जिसने बड़े गड्ढों का निर्माण तो किया ही है, उसे काफी हद तक गोलाकार बनने में मदद भी मिली है। पृथ्वी का यह एकमात्र उपग्रह (चांद) बेहद ठंडा है और उसका गुरुत्वाकर्षण बहुत कम है। यहां वायुमंडल अनुपस्थित है और पृथ्वीवासियों को इसका बहुत कम हिस्सा दिखलाई पड़ता है। चांद का दक्षिणी हिस्सा कभी भी सूर्य के सामने न आने से वहां और भी ज्यादा ठंड है। यहां तापमान -203 से -243 डिग्री सेल्सियस तक होता है। वैसे वैज्ञानिकों का मानना है कि वहां बड़ी मात्रा में ठोस रूप में पानी मौजूद है। अब तक जितने भी मून मिशन में गये हैं वे सारे उन हिस्सों पर उतरे हैं जो सूर्य के सामने होते हैं लेकिन चन्द्रयान-3 दक्षिणी हिस्से में उतरा है। यह भारतीय वैज्ञानिकों की विशेष उपलब्धि है। ऐसे अनेक कारणों से चन्द्रमा एवं चन्द्रयान-3 लोगों की उत्सुकता का कारण रहा है और हर व्यक्ति इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है। पृथ्वी के साथ ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड की रचना के कारकों और भविष्य को जानने का मानव के लिये सबसे नजदीक का जरिया चंद्रमा ही है। पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत की जानकारी से लेकर भविष्य में पृथ्वीवासियों के लिये वैकल्पिक मानव बस्तियों की सम्भावना टटोलने तक के लिये खगोलशास्त्री व वैज्ञानिक लम्बे समय से चांद को निहारते रहे हैं। इसके बारे में वैज्ञानिक समझ ज्ञान का पैमाना रहा है।

इस मिशन का बड़ा महत्व इस लिहाज से भी है कि इस सफलता ने भारत को अमेरिका, रूस और चीन जैसे गिनती के देशों की श्रेणी में बैठाया है। इसका श्रेय निसंदेह भारत के सार्वजनिक उपक्रमों के सिरमौर कहे जाने वाले इसरो के वैज्ञानिकों को जाता है। उनकी कड़ी मेहनत, ज्ञानार्जन की उत्कंठा, मेधा और चेतना ने सभी भारतीयों को आज यह महान उपलब्धि दिलाई है।

इस मिशन के बारे में आगे भी खूब चर्चा होती रहेगी और सम्भव है कि इसका श्रेय लेने की छीना-झपटी भी हो, परन्तु यह ऐसा अवसर है जब हमें अपने राष्ट्रीय चरित्र से उस गुम होते फिनोमेना को पुनर्जाग्रत करने का संकल्प लेना होगा जिसका उल्लेख भारतीय संविधान में 'साइंटिफिक टेम्परामेंट' के नाम से जाना जाता है और देश में इसे निर्मित करना सरकार का दायित्व माना गया है। आधुनिक भारत के निमार्ता व प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने केवल यह शब्द (साइंटिफिक टेम्परामेंट) ही नहीं दिया बल्कि इस भावना के अनुकूल समाज बनाने में इसरो जैसी संस्थाएं दीं एवं डॉ. विक्रम साराभाई, सतीश धवन आदि से लेकर एपीजे अब्दुल कलाम जैसे राकेट वैज्ञानिकों को निखरने एवं उन्हें अपनी प्रतिभा के श्रेष्ठ प्रदर्शन करने का माहौल दिया। देश की इस वैज्ञानिक चेतना की विरासत को बनाये रखने में सारी सरकारों ने मदद की लेकिन पिछले कुछ समय से विज्ञान की जगह आस्था और अंधविश्वास ने ली है तथा जिसे मौजूदा सरकार राजनैतिक कारणों से पूरा बढ़ावा दे रही है।

पशुपतिनाथ की पूजा करके एशिया कप खेलने पाकिस्तान पहुंची नेपाली क्रिकेट टीम

काठमांडू। पहली बार एशिया कप खेलने जा रही नेपाली क्रिकेट टीम ने कप्तान रोहित पौडेल के साथ पाकिस्तान रवाना होने से पहले पशुपतिनाथ मन्दिर में दर्शन किये। पाकिस्तान और श्रीलंका में 30 अगस्त से होने जा रहे एशिया कप क्रिकेट में भाग लेने के लिए नेपाली क्रिकेट टीम मुल्तान पहुंच चुकी है। नेपाली क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों ने पाकिस्तान रवाना होने से पहले अपने कोच मोंटी देसाई के साथ काठमांडू के पशुपतिनाथ मन्दिर में विशेष पूजा की। मन्दिर के तरफ से सभी खिलाड़ियों और कोच को रूद्राक्ष की माला प्रसाद के रूप में दी गई। यह पहली बार है जब नेपाली क्रिकेट टीम ने किसी एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में खेलने के लिए क्वालीफाई किया है। पाकिस्तान और श्रीलंका में 30 अगस्त से होने जा रहे एशिया कप क्रिकेट में भाग लेने के लिए नेपाली क्रिकेट टीम मुल्तान पहुंच चुकी है। एशिया कप का पहला मुकाबला नेपाल और पाकिस्तान के बीच मुल्तान में ही खेला जाने वाला है। नेपाल का दूसरा मुकाबला भारत के साथ 4 सितम्बर को श्रीलंका के कैंडी में खेला जाएगा।

भारतीय महिला हॉकी 5 टीम ने मलेशिया पर 7-2 से जीत के साथ विश्व कप क्वालीफायर की शुरुआत की

नई दिल्ली। भारत ने ओमान में मलेशिया के खिलाफ 7-2 की शानदार जीत के साथ महिला एशियाई हॉकी 5 विश्व कप क्वालीफायर में अपने अभियान की शुरुआत की। हॉकी 5 में प्रत्येक टीम में पांच-पांच खिलाड़ी होते है और इसका मैदान नियमित फील्ड हॉकी से छोटा होता है। भारत के लिए कप्तान नवजोत कौर (तीसरे, 28वें), अक्षता ढेकाले (चौथे), मरियाना कुजूर (17वें), मोनिका डी. टोप्पो (12वें, 20वें) और महिमा चौधरी (28वें) ने गोल किये। मलेशिया ने वान वान (सातवें) और अजीज जफिराह (11वें) गोल करने में सफल रही। भारतीय टीम ने मैच की शुरुआत से ही दबदबा बनाना शुरू कर दिया था। मैच के तीसरे और चौथे मिनट में नवजोत और अक्षता के गोल से टीम ने 2-0 की बढ़त बना ली।

मलेशिया ने वान और जफिराह के गोल से मैच में वापसी करते हुए स्कोर 2-2 कर दिया। भारत ने इसके बाद जवाबी हमला तेज किया और मोनिका के गोल से टीम ने मध्यांतर से पहले 3-2 की बढ़त बना ली। भारत ने मैच के दूसरे हाफ में खेल की गति को बढ़ाने पर ध्यान दिया और टीम को इसका फायदा भी मिला। मरियाना और मोनिका ने तीन मिनट के अंदर दो गोल कर मैच पर भारतीय पकड़ को मजबूत कर दिया। महिमा और नवजोत ने 28 मिनट में दो गोल कर भारतीय टीम की बढ़त को 7-2 कर दिया। भारतीय टीम का अगला मुकाबला जापान से है।

सेरेना विलियम्स फिर बनी मां, एलेक्सिस ओहानियन ने दूसरे बच्चे को दिया जन्म

वाशिंगटन। दिग्गज टेनिस प्लेयर सेरेना विलियम्स दूसरी बार मां बन गई है। सेरेना के पति एलेक्सिस ओहानियन ने सोशल मीडिया पर पूरे परिवार की फोटो साझा कर लिखा है- आपका स्वागत है, आदिरा रिवर ओहानियन । मैं यह बताते हुए आभारी हूं कि हमारा घर

प्यार से भर गया है। एक खुश और स्वस्थ नवजात लड़की। एक खुश और स्वस्थ मां यहां हैं। मैं कृतज्ञ महसूस कर रहा हूँ। ञ्जसेरेनाविलियम्स आपने अब मुझे एक और अतुलनीय उपहार दिया है - आप जीएमओएटी हैं। मेरी पत्नी और हमारी बेटी की देखभाल करने वाले सभी अद्भुत चिकित्सा कर्मचारियों को धन्यवाद। मैं उस पल को कभी नहीं भूलूंगा जब मैंने @olympiaohanian को उसकी छोटी बहन से मिलवाया था। उन्होंने अपनी पोस्ट को एक उद्धरण के साथ समाप्त कियाः आपकी शांति एक नदी की तरह होती, आपकी भलाई समुद्र की लहरों की तरह होती।

भारतीय पुरुष ब्लाइंड क्रिकेट टीम आईबीएसए विश्व खेलों के फाइनल में, पाकिस्तान से होगा सामना

बर्मिंघम। भारतीय पुरुष ब्लाइंड क्रिकेट टीम अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर बांग्लादेश को 7 विकेट से हराकर यहां चल रहे इंटरनेशनल ब्लाइंड स्पोर्ट्स फेडरेशन (आईबीएसए) वर्ल्ड गेम्स 2023 के फाइनल में प्रवेश कर लिया।

विश्व खेलों के सेमीफाइनल मैच में भारत ने बांग्लादेश को निर्धारित 20 ओवरों में 144/6 रनों पर रोक दिया और फिर 18 गेंद शेष रहते लक्ष्य हासिल कर लिया। फाइनल में भारत शनिवार को पाकिस्तान से भिड़ेगा। पिछले सप्ताह जब दोनों टीमों ने अपना विश्व खेल अभियान शुरू किया था तब पाकिस्तान ने भारत को 18 रन से हराया था।

भारत अब चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से बदला लेने की कोशिश करेगा क्योंकि दोनों टीमें आईबीएसए विश्व खेलों में दूसरी बार आमने-सामने होंगी।

मैच में पहले बल्लेबाजी करने उतरी बांग्लादेश की शुरुआत अच्छी रही और टीम ने पहले नौ ओवर में 2 विकेट पर 62 रन बना लिए। भारतीय गेंदबाजों ने लाइन और लेंथ कड़ी रखी और बांग्लादेश के बल्लेबाजों को खुलकर नहीं खेलने दिया।बांग्लादेश के लिए अच्छी बल्लेबाजी कर रहे आशिकुर रहमान 13वें ओवर में रन आउट हो गए, जिससे टीम का स्कोर 88/3 हो गया। इसके बाद एम आरिफ हुसैन और एस इस्लाम ने बांग्लादेश की पारी को संभाला और 56 रन की साझेदारी की। भारत ने बांग्लादेश को 150 रन से ऊपर नहीं जाने दिया और आखिरी ओवर में तीन विकेट लेकर टाइगर्स को 144/6 पर रोक दिया।

145 रनों का पीछा करते हुए, भारत ने तीसरे ओवर में पहला विकेट खो दिया, जब सिर्फ 17 रन बने थे। इसके बाद सुनील रमेश और नरेशभाई बालूभाई तुमदा ने 68 रन की साझेदारी करके भारत को लक्ष्य तक पहुंचाया।

आधी दूरी तक भारत का स्कोर 90/2 था और अंतिम 10 ओवरों में 55 रन और चाहिए थे। इसके बाद एनबी तुम्दा और दुर्गा राव टोम्पाकी ने 17वें ओवर में भारत को लक्ष्य तक पहुंचा दिया। वहीं, भारतीय महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम ने भी फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है और खिताबी मुकाबले में शनिवार को टीम एजबेस्टन क्रिकेट स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया का सामना करेगी।

बीडब्ल्यूएफ विश्व चैंपियनशिप : एचएस प्रणय फाइनल में, विश्व के नंबर 1 विक्टर एक्सेलसन को हराया

कोपेनहेगन। एचएस प्रणय ने मौजूदा चैंपियन, दुनिया के नंबर 1 और मौजूदा पुरुष बैडमिंटन के निर्विवाद सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी विक्टर एक्सेलसन के खिलाफ शानदार जीत दर्ज कर अपना पहला बीडब्ल्यूएफ विश्व चैम्पियनशिप पदक पक्का कर लिया। 31 वर्षीय भारतीय ने अपने लगातार तीसरे क्वार्टरफाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त डेनमार्क के एक्सेलसन को 13-21, 21-15, 21-16 से हराकर पहली बार सेमीफाइनल में प्रवेश कियाऔर भारत के लिए एक पदक पक्का कर दिया। यह मैच 68 मिनट तक चला। सफलता और परिमाण दोनों ही दृष्टि से यह प्रणय के करियर की

सबसे बड़ी जीतों में से एक है।

उनके पदक ने यह सुनिश्चित कर दिया कि 2011 के बाद से हर विश्व चैंपियनशिप में भारत के पदक जीतने का सिलसिला जारी रहेगा। दिन की शुरुआत में दूसरी वरीयता प्राप्त सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी-चिराग शेट्टी के बाहर होने के बाद प्रणय टूर्नामेंट में इकलौते भारतीय बचे हैं। बीडब्ल्यूएफ विश्व चैंपियनशिप में सेमीफाइनल में पहुंचने वाले खिलाड़ियों के पदक पक्के हैं।

अपने करियर के अब तक के सर्वश्रेष्ठ सीज़न का आनंद ले रहे नौवें वरीय प्रणय 68 मिनट तक चले मैच के दौरान लगातार, चतुर और संयमित रहे। एक गेम में पिछड़ने के बाद, जहां एक्सेलसन का दबदबा था, उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी की गलतियों का फायदा उठाया और मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन को हराने के लिए पूरी तरह से केंद्रित रहे। पहला, दूसरा तथा तीसरा गेम हारने के बाद वह फिर से एकजुट हुए और जीत के साथ वापसी की। फाइनल में जगह बनाने के लिए वह पिछले साल के रजत पदक विजेता और तीसरी वरीयता प्राप्त कुनलावुत विटिडसार्न से खेलेंगे।

एमओसी ने तेजस्विन शंकर के लिए पोल वॉल्ट लैंडिंग पिट की खरीद को दी मंजूरी

नई दिल्ली। युवा मामले और खेल मंत्रालय (एमवाईएएस) के मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने आगामी एशियाई खेलों की तैयारी के लिए राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता तेजस्विन शंकर को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में पोल वॉल्ट के लिए एक लैंडिंग पिट की खरीद के लिए वित्तीय सहायता को मंजूरी दे दी है। मंत्रालय की विज्ञप्ति

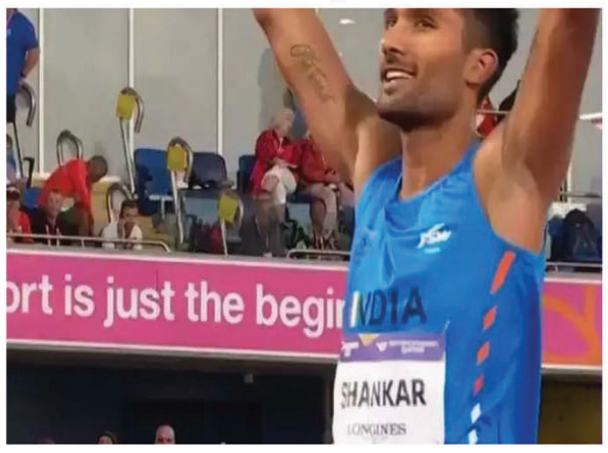

में कहा गया, 'तेजस्विन, जिन्होंने एशियाई खेलों 2022 की ऊंची कूद और डेकाथलॉन स्पर्धाओं के लिए क्वालीफाई किया है, अगले महीने एशियाई खेलों तक विशेष रूप से पोल वॉल्ट पिट का उपयोग करेंगे। प्रतियोगिता के बाद, जेएलएन स्टेडियम में अभ्यास करने वाले सभी एथलीटों द्वारा इस पिट का उपयोग किया जा सकता है। लैंडिंग पिट (10 मीटर × 6.8 मीटर × 81), पिट के लिए रेन कवर और उसके लिए शिपिंग लागत को टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) फंडिंग के तहत कवर किया जाएगा। तेजस्विन के अलावा, एमओसी ने ब्राजील के रियो डी जनेरियो में पिस्टल शूटर राही सरनोबत के प्रशिक्षण और भागीदारी के लिए वित्तीय सहायता को भी मंजूरी दी है।

राही 2 सितंबर से रियो में प्रशिक्षण लेंगी, इसके बाद 19 सितंबर तक आईएसएसएफ रियो विश्व कप में भाग लेंगी। टॉप्स उन्हें और उनकी फिजियोथेरेपिस्ट ऐश्वर्या देशपांडे के हवाई किराया, बोर्डिंग/आवास शुल्क, स्थानीय परिवहन लागत, राही की रेंज, प्रशिक्षण शुल्क, हथियार भंडारण शुल्क, वीज़ा और बीमा शुल्क, और प्रवेश शुल्क सहित अन्य शुल्क का वहन करेगा।

टॉप्स यूरोप में बैरल परीक्षण और ग्रिप अनुकूलन के लिए राही के प्रस्तावों और म्यूनिख, जर्मनी में नील ग्रिप बनाने (पकड़ अनुकूलन) के लिए शूटर अभिदन्या अशोक पाटिल के अनुरोध को भी वित्तपोषित करेगा। राही के साथ, एमओसी ने आईएसएसएफ रियो विश्व कप में भाग लेने के लिए निशानेबाज एलावेनिल वलारिवन के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है। मंत्रालय ने कहा कि टॉप्स उनके विमान किराया, स्थानीय परिवहन लागत, ग्रिप अनुकूलन शुल्क, हथियार सर्विसिंग परिवर्तन, कस्टम शुल्क, गन परमिट शुल्क और गोला बारूद लागत सहित अन्य खर्चों को कवर करेगा।

टेबल टेनिस खिलाड़ियों स्वस्तिका घोष और पायस जैन के लिए टॉप्स 20 दिनों के लिए कोच क्रि जियान जियान के तहत जापान में कई टूर्नामेंट और प्रशिक्षण में उनकी भागीदारी के लिए धन देगा। पैडलर का हवाई किराया, आतिथ्य लागत और आवास लागत सहित अन्य खर्चों को भी कवर किया जाएगा।

मप्र की पैरा कैनो खिलाड़ी प्राची ने रचा इतिहास, पेरिस पैरालंपिक के लिए किया क्वालीफाई

भोपाल। मध्य प्रदेश की होनहार पैरा कैनो खिलाड़ी प्राची यादव ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। प्राची ने जर्मनी के ड्युसबर्ग में आयोजित पैरा कैनो वर्ल्ड चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन कर पेरिस पैरालंपिक के लिए क्वालीफाई कर लिया है। इसके अलावा पूजा ओझा ने अपने इवेंट में रजत पदक जीता है लेकिन यह पैरालंपिक इवेंट नहीं था। भारत के सभी टीम और खिलाड़ियों ने फाइनल तक पहुंचकर भारत का नाम रोशन किया है। इस चैंपियनशिप में पैरा इवेंट में 45 देशों की टीमें भाग ले रही हैं।

भारत की प्राची यादव केएल 2 ए इवेंट के फाइनल मुकाबले में पानी में उतरी थी, उन्होंने इसमें शानदार प्रदर्शन किया और चौथा स्थान पाया। प्राची भले ही पदक जीतने में

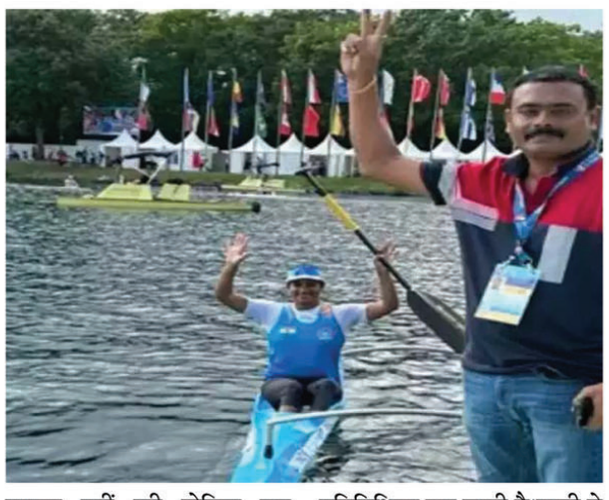

सफल नहीं रही लेकिन वह पेरिस पैरालंपिक के लिए क्वालीफाई करने में सफल रही है। इस वर्ल्ड चैंपियनशिप में शीर्ष छह खिलाड़ियों को पैरालंपिक का टिकट मिलता है। प्राची इससे पहले टोक्यो पैरालंपिक में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी है।प्राची ने अपनी इस उपलब्धि पर कहा कि मैं अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हूं, थोड़ा और मेहनत करती तो पदक जीत सकती थी, अब नजरें एशियन गेम्स के दो पदकों पर हैं। पैरालंपिक के लिए एक साल का समय है। कड़ी मेहनत कर देश के लिए पदक जीतने का प्रयास करूंगी।

उन्होंने कहा कि पिछली वर्ल्ड चैंपियनशिप में 10वें स्थान पर रहते हुए टोक्यो का सफर तय किया था। टोक्यो में मैं आठवें स्थान पर रही थी, इस बार चौथे स्थान पर रहते हुए पेरिस जा रही हूं तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है।

प्राची ने कहा कि भारतीय पैरा टीम के मुख्य कोच मयंक ठाकुर व मप्र अकादमी के कोच पीयूष कांति बरोई ने पूरा सहयोग दिया है। उल्लेखनीय है कि भारतीय टीम 19 अगस्त को भोपाल से रवाना हुई थी। भारतीय टीम ने भोपाल के छोटे तालाब पर लगभग दो माह तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारतीय पैरा कयाकिंग एंव कैनाइंग के चेयरपर्सन और मुख्य कोच मयंक ठाकुर के मार्गदर्शन में टीम ने तैयारी की थी।

विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप: नीरज चोपड़ा ने फाइनल के लिए किया क्वालीफाई

बुडापेस्ट। भारत के 'गोल्डन बॉय' नीरज चोपड़ा ने हंगरी के बुडापेस्ट में प्रतिष्ठित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों के भाला फेंक फाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया है।

ग्रुप ए क्वालीफायर में रखे गए, ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज ने अपने पहले प्रयास में 88.77 मीटर का सीजन का सर्वश्रेष्ठ थ्रो दर्ज किया, जो 83.00 मीटर के क्वालीफाइंग मार्क को पार कर गया। इस जबरदस्त थ्रो के साथ, नीरज ने 2024 पेरिस ओलंपिक के लिए भी क्वालीफाई कर लिया हैविश्व के शीर्ष क्रम के भाला फेंक खिलाड़ी के रूप में चैंपियनशिप में जाने वाले नीरज

ने अपना दूसरा और तीसरा प्रयास नहीं किया। बुडापेस्ट 2023, विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के 19वें संस्करण, में पुरुषों की भाला फेंक प्रतियोगिता फाइनल का क्वालीफाइंग कट 83.00 मीटर निर्धारित किया गया है। पिछले साल, 25 वर्षीय टोक्यो ओलंपिक पदक विजेता ने यूजीन में विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीता था।नीरज पहले ही ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। वह डायमंड लीग विजेता भी हैं। होने वाले फाइनल में कम से कम 12 खिलाड़ी उतरेंगे।

सत्ताईस भारतीय एथलीट बुडापेस्ट 23 में 15 स्पर्धाओं में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 19 से 27 अगस्त तक हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में आयोजित की जा रही है।

पूर्व डब्ल्यूडब्ल्यूई चैंपियन विंडहैम रोटुंडा उर्फ ब्रे व्याट का 36 साल की उम्र में निधन

वाशिंगटन। पूर्व डब्ल्यूडब्ल्यूई चैम्पियन विंडहैम रोटुंडा, जिन्हें ब्रे व्याट के नाम से जाना जाता था, का महज 36 साल की उम्र में निधन हो गया।

चीफ कंटेंट अधिकारी पॉल 'ट्रिपल एच' लेवेस्क ने सोशल मीडिया पर रोटुंडा के निधन की जानकारी दी। लेवेस्क ने ट्वीट किया, अभी डब्ल्यूडब्ल्यूई हॉल ऑफ फेमर माइक रोटुंडा का फोन आया, जिन्होंने हमें दुखद खबर दी कि हमारे डब्ल्यूडब्ल्यूई परिवार के आजीवन सदस्य विंडहैम रोटुंडा - जिन्हें ब्रे व्याट के नाम से भी जाना जाता है - का आज अप्रत्याशित रूप से निधन हो गया। हमारी संवेदनाएं उनके परिवार के साथ हैं और हम उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इस समय हर कोई उनकी निजता का सम्मान कर रहा है।' व्याट को प्रशंसकों के बीच उसी समय पहचान मिल गई जब उन्होंने अपनी 'व्याट फैमिली' से डेब्यू किया। ल्यूक हार्पर, एरिक रोवन और ब्रॉन स्ट्रोमैन के साथ, रोटुंडा ने एक उल्लेखनीय यात्रा शुरू की जो उन्हें विभिन्न डब्ल्यूडब्ल्यूई कार्यक्रमों के साथ-साथ सभी 'रेसलमेनिया' के सबसे भव्य मंच पर ले गई।

आरंभिक दिनों में, रोटुंडा ने अपने चरित्र को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित किया जो एक ताकतवर व्यक्ति था। 2014 में,

व्याट परिवार ने छह सदस्यीय टैग टीम प्रतियोगिता में 'शील्ड' पर कब्ज़ा किया। 22 मिनट तक चली और दर्शकों को अपने पैरों पर खड़ा करने वाली प्रतियोगिता में, व्याट परिवार विजयी हुआ और हर गुजरते दिन के साथ रोटुंडा के करियर को नई ऊंचाइयों पर ले गया। अपने चरम पर पहुंचने के बाद अगले पांच साल उनके लिए अनुकूल नहीं रहे. उनकी लोकप्रियता धीरे-धीरे कम हो गई और इन वर्षों में व्याट परिवार बिखर गया। भले ही 2017 में, रोटुंडा ने पांच अन्य पुरुषों - जॉन सीना, एजे स्टाइल्स, द मिज़, डीन एम्ब्रोज़ और बैरन कॉर्बिन को हराकर डब्ल्यूडब्ल्यूई चैंपियनशिप जीती, फिर भी उनका करियर नीचे की ओर बढ़ने से नहीं रुका। लेकिन साल 2019 में, रोटुंडा ने तब सुर्खियां बटोरीं जब उन्होंने अपने किरदार को फिर से पेश किया और 'फीन्ड' के रूप में रिंग में आए।

शुभंकर शर्मा अखिल भारतीय जूनियर गोल्फ चैंपियनशिप : केटेगरी ए में अरिंदम सुदन जीते

नोएडा। जेपी ग्रीन्स विशटाउन में करवाए गए शुभंकर शर्मा अखिल भारतीय जूनियर गोल्फ चैंपियनशिप श्रृंखला के दूसरे पड़ाव में 90 से अधिक एमेच्योर गोल्फरों ने भाग लिया। भारतीय गोल्फ संघ (आईजीयू) के तत्वावधान में करवाए गए इस एक दिवसीय टूर्नामेंट में लड़कों और लड़कियों की ए से ई तक 12 विभिन्न केटेगरी थीं।

नोएडा में आयोजित जूनियर गोल्फ चैंपियनशिप पांच शहरों की सीरीज का हिस्सा है जिसका फाइनल चंडीगढ़ में खेला जाएगा। फाइनल के विजेताओं को इस साल के अंत में अबू धाबी में भारत के टॉप पेशेवर गोल्फर में शामिल शुभंकर शर्मा के साथ खेलने का मौका मिलेगा। पार-67 कोर्स पर 18 होल में दो-ओवर 69 का कार्ड खेलने के बाद अरिंदम सुदन ने पहले प्लेऑफ होल में आर्यवीर खोड़ा को हराकर केटेगरी ए का खिताब जीता। लड़कियों के वर्ग में हुनर बरार ने 74 का कार्ड जमा कर खिताब जीता। करण मेहतो ने पांच

अंडर 62 का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए बिक्रम सिंह पर एक स्ट्रोक की जीत के साथ एमेच्योर वर्ग की ट्रॉफी जीती।

फाइनल के विजेताओं को इस साल के अंत में अबू धाबी में भारत के टॉप पेशेवर गोल्फर में शामिल शुभंकर शर्मा के साथ खेलने का मौका मिलेगा।

जिया कोचर ने 74 का कार्ड खेलकर लड़कियों का खिताब अपने नाम किया। कार्तिक सिंह चार अंडर 63 के शानदार प्रयास के साथ केटेगरी बी में रणवीर मित्रू (65) और भावेश निर्वाण (65) को दो शॉट से हराकर विजेता बने। पर्णिका शर्मा ने लड़कियों का 'बी' खिताब जीतने के लिए एक अंडर 66 का रिकॉर्ड बनाया। केटेगरी सी में, अनी शंकर (73) ने चैतन्य पांडे (74) पर एक स्ट्रोक की जीत के साथ लड़कों का खिताब अपने नाम किया। 69 राउंड के बाद लड़कियों में शांभवी चतुर्वेदी ने बाजी मारी। शौर्यवीर नारायण (69) ने केटेगरी डी लड़कों का खिताब जीता, जबकि आन्या डंडरियाल (73) ने लड़कियों का खिताब जीता। केटेगरी ई नौ होल के लिए खेला गया जिसमें रेयांश अहलावत (35) विजेता बने। अविराज कालिया (37) उपविजेता रहे और भव्य रतन (46) दूसरे उपविजेता रहे। लड़कियों का ताज रेहाना मलिक ने जीता।

पाकिस्तान के अपराधी समूह ने ग्रीस में किया अपहरण, नेपाल में वसूली फिरौती, चार गिरफ्तार

काठमांडू। ग्रीस में पाकिस्तान के अपराधी समूह ने नेपाल की एक युवती और दो युवकों को छोड़ने के एवज में नेपाल में फिरौती वसूली। इस खुलासा केन्द्रीय अनुसंधान ब्यूरो (सीआईबी) ने किया है। सीआईबी ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है।

सीआईबी के अनुसार रोजगार के सिलसिले में नेपाल से ग्रीस गए दो युवकों और एक युवती को अगवा कर इस समूह ने यातनाएं दी। उनके परिवार को व्हाट्स ऐप पर कॉल कर छोड़ने के लिए फिरौती की रकम मांगी। परिवार वालों ने इन गुर्गों को काठमांडू में 21 लाख 75 हजार रुपये दिए। सीआईबी के एसपी श्याम महतो ने बताया कि तीनों सीजनल वीजा पर रोजगार के लिए सर्बिया गए थे। वहां काम न मिलने पर अवैध रूप से ग्रीस पहुंच गए थे।

सीआईबी के एसपी श्याम महतो के अनुसार पीड़ित परिवारों से जानकारी मिलने के बाद फिरौती की रकम वसूलने वालों धनकुटा जिला के 32 वर्षीय शिवराज कुंवर, काठमांडू के 56 वर्षीय रामेश्वर अर्याल, कपिलवस्तु के 32 वर्षीय प्रकाश बेलवासे और पर्वत जिला के 32 वर्षीय दिल बहादुर थापा को गिरफ्तार कर लिया गया है। फिलहाल अपराधी समूह ने तीनों को छोड़ा नहीं है। नेपाली युवती और युवकों की रिहाई के लिए इंटरपोल के जरिए ग्रीस के होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट से संपर्क किया गया है।

ब्रिटिश संग्रहालय के निदेशक ने दिया इस्तीफा, अपनी देखरेख में कलाकृतियों की चोरी से आहत

लंदन। लंदन के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक ब्रिटिश संग्रहालय के निदेशक ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है, जबकि शनिवार को यह बात सामने आई कि चुराई गई 2,000 कलाकृतियों में से कुछ बरामद कर ली गई हैं। बता दें कि ब्रिटिश संग्रहालय में हजारों बहुमूल्य कलाकृतियां प्रदर्शित हैं, इनमें से कुछ भारत की हैं। हार्टविग फिशर ने अपने इस्तीफे की घोषणा करते हुए कहा कि अब यह स्पष्ट हो गया है कि संग्रहालय ने आशंकित चोरी के बारे में चेतावनियों का व्यापक रूप से जवाब नहीं दिया और इसकी जिम्मेदारी अंततः उन्हीं की है। संग्रहालय के न्यासी बोर्ड के अध्यक्ष जॉर्ज ओसबोर्न ने शनिवार को मीडिया को बताया कि हमने पहले ही चोरी की गई कुछ वस्तुओं को फिर से प्राप्त करना शुरू कर दिया है। ओसबोर्न ने कहा, हमारा मानना है कि हम लंबे समय से चोरी का शिकार होते रहे हैं और स्पष्ट रूप से उन्हें रोकने के लिए और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। फिशर का इस्तीफा उस घटना के एक सप्ताह से अधिक समय बाद सामने आया है, जिसमें संग्रहालय के एक भंडार कक्ष से कई खजाने चोरी हो जाने के बाद संग्रहालय के एक कर्मचारी को कानूनी कार्रवाई लंबित रहने तक निलंबित कर दिया गया था। फिशर ने कहा, पिछले कुछ दिनों से मैं ब्रिटिश संग्रहालय से चोरी की घटनाओं और उनकी जांच की विस्तार से समीक्षा कर रहा था। उन्होंने कहा, यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश संग्रहालय ने 2021 में चेतावनियों और अब पूरी तरह से सामने आई समस्या के जवाब में उतनी व्यापक प्रतिक्रिया नहीं दी जितनी उसे देनी चाहिए थी।

ब्रिटेन में भारतीय मूल के व्यक्ति को हुई जेल, प्रतिबंधित ड्रग्स की तस्करी का आरोप

लंदन। ब्रिटेन की राष्ट्रीय अपराध एजेंसी (एनसीए) के नेतृत्व में एक जांच के बाद ब्रिटेन में प्रतिबंधित ड्रग्स की तस्करी की साजिश का दोषी पाए जाने पर भारतीय मूल के एक व्यक्ति और उसके साथी को 12-12 साल कैद की सजा सुनाई गई। 37 वर्षीय संदीप सिंह राय और 43 वर्षीय बिली हेयरे एक संगठित अपराध समूह (ओसीजी) से संबंधित है। दोनों को मेक्सिको से एक कार्गो विमान के जरिये ब्रिटेन में 30 किलो कोकीन और 30 किलो एम्फैटेमिन की तस्करी के लिए जिम्मेदार ठहराया गया। दोनों ने शुरुआत में ए-क्लास की प्रतिबंधित ड्रग्स की आपूर्ति की साजिश के आरोपों से इनकार किया था, लेकिन इस साल की शुरुआत में वॉल्वरहैम्प्टन क्राउन कोर्ट में मुकदमा शुरू होने से ठीक पहले उन्होंने अपनी दलीलों में खुद को दोषी मान लिया। इसके बाद शुक्रवार को उसी अदालत में उन्हें अपराधों के लिए सजा सुनाई गई। एनसीए ऑपरेशंस मैनेजर क्रिस डुप्लॉक ने कहा, राय और हेयरे मेक्सिको से ब्रिटेन में ए-क्लास के ड्रग्स की तस्करी करने के एक जटिल प्रयास के पीछे शामिल थे। उन्होंने कहा, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर हमने उन्हें नहीं रोका होता, तो वे और अधिक ड्रग्स लाने के लिए बार-बार इस मार्ग का उपयोग करते।

इमरान की पत्नी का सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा, जेल में खान की जान को खतरा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के लिए जेल में जान का खतरा है। यह अंदेशा जताते हुए इमरान की पत्नी बुशरा बीबी ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर किया है। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान दुनिया भर से मिले उपहारों को अवैध तरीके से बेचने से जुड़े तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में तीन साल की जेल की सजा काट रहे हैं। इमरान खान को पांच साल के लिए राजनीति से भी अयोग्य घोषित कर दिया गया है। उनकी पत्नी बुशरा बीबी ने बीती 22 अगस्त को अटक जेल में इमरान खान से मुलाकात की थी। इसके बाद उन्होंने पाकिस्तान सरकार को पत्र लिख कर जेल में इमरान खान की जान को खतरा बताया था। इसके बाद भी कोई कार्यवाही न होने पर बुशरा बीबी ने पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर आरोप लगाया है कि उनके पति को जेल में गंभीर

खतरा है। हलफनामे में बुशरा बीबी के हवाले से लिखा गया है कि जब वह अटक जेल में इमरान खान से मिलने पहुंचीं तो उन्हें बेवजह इंतजार कराया गया और काफी मुश्किलों के बाद मिलने की अनुमति दी गई। हलफनामे में इमरान खान के हवाले से बताया गया है कि वह पाकिस्तान में संविधान और कानून के शासन की लड़ाई के लिए कोई भी बलिदान देने के लिए तैयार हैं। हलफनामे के अनुसार, जेल में इमरान खान की सेहत में गिरावट आई है और इससे उनके जीवन को गंभीर खतरा हो सकता है। जेल में रहने के दौरान इमरान खान का वजन काफी कम हो गया है। हलफनामे के अनुसार, 70 साल से ज्यादा उम्र के व्यक्ति की सेहत में इस तरह की गिरावट गंभीर खतरा हो सकती है। हलफनामे में सुप्रीम कोर्ट से इमरान के बिगड़ते स्वास्थ्य और उनके जीवन के खतरे पर ध्यान देने की अपील की गई है।

भारतीय मूल के राष्ट्रपति उम्मीदवार थर्मन शनमुगरत्नम का दावा, गैर-चीनी प्रधानमंत्री के लिए तैयार सिंगापुर

सिंगापुर। सिंगापुर में राष्ट्रपति चुनाव अगले सप्ताह होने वाले हैं। इस चुनाव में भारतीय मूल के उम्मीदवार थर्मन शनमुगरत्नम ने दावा किया है कि सिंगापुर एक गैर-चीनी प्रधानमंत्री के लिए तैयार है। सिंगापुर के पूर्व उपप्रधानमंत्री थर्मन ने इसे चीनी मूल की आबादी के प्रभुत्व वाले देश में समाज की प्रगति का एक प्रतीक बताया।

राष्ट्रपति पद के लिए अपना दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक चुनावी बैठक के दौरान थर्मन ने कहा कि सिंगापुरवासी लोगों को समग्रता से देखते हैं। यदि कोई ऐसा व्यक्ति सामने आता है, जो प्रधानमंत्री के लिए बेहतर उम्मीदवार है, तो उस व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाया जा सकता है। मेरा मानना है कि वे ऐसा कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह एक

समाज के रूप में सिंगापुर की प्रगति का प्रतीक है। सिंगापुर किसी गैर-चीनी प्रधानमंत्री के लिए किसी भी समय तैयार है। 66 वर्षीय थर्मन ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का हवाला देते हुए कहा कि नस्लवाद हर जगह राजनीति में एक कारक है। हालांकि, 40 या 50 साल पहले के विपरीत आज सिंगापुरवासी सभी कारकों को देखते हैं, न कि केवल नस्लवाद को। सिंगापुर के पूर्व उपप्रधानमंत्री थर्मन ने राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने के लिए जुलाई में सत्तारूढ़ पीपुल्स एक्शन पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। सिंगापुरवासियों को एक सितंबर को 9वें राष्ट्रपति के लिए मतदान करना है। अर्थशास्त्री थर्मन ने यह भी कहा कि केवल सरकारी नीतियां सिंगापुर को एक निष्पक्ष और बेहतर स्थान नहीं बना सकती हैं। उन्होंने कहा कि इसके बजाय चीजों को अधिक गहराई तक ले जाना चाहिए और सिंगापुर के विकास का अगला चरण उन चीजों पर ध्यान देना है, जिन्हें मापा नहीं जा सकता है।

बांग्लादेश के रंगपुर में 50,000 लोग बाढ़ में फंसे

ढाका। बांग्लादेश के रंगपुर कम से कम 50,000 लोग बाढ़ में फंस गए हैं। शनिवार को हो रही भारी बारिश से स्थिति और गंभीर हो गई है। तीस्ता नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स में यह जानकारी दी गई है। मीडिया रिपोर्ट्स में बांग्लादेश जल विकास बोर्ड (बीडब्ल्यूडीबी) के नियंत्रण कक्ष के हवाले से कहा गया है कि शनिवार सुबह 6 बजे तीस्ता नदी दलिया बिंदु पर खतरे के स्तर से 10 सेंटीमीटर और रंगपुर के कौनिया बिंदु पर खतरे के स्तर से 33 सेंटीमीटर ऊपर बह रही थी। रंगपुर के कौनिया और गंगाचरा उप जिला के चार क्षेत्र के अधिकतर गांव जलमग्न हो गए हैं। कम से कम 25 गांवों के घरों में पानी भर गया है। लोगों ऊंचे स्थानों और बीडब्ल्यूडीबी के बांधों के पास शरण ली है। शनिवार को तीस्ता बैराज के सभी 44 गेट खोल दिए गए हैं।

रूस ने किया साफ, जी-20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने भारत नहीं जाएंगे पुतिन

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन अगले माह भारत में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे। अगले महीने, नौ व दस सितंबर को भारत में जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। भारत के पास इस वर्ष जी-20 की अध्यक्षता का जिम्मा है। भारत इस समय जी-20 की मेजबानी कर रहा है।रूस की ओर से शुक्रवार को औपचारिक घोषणा की गयी कि अगले महीने भारत में होने वाले जी-20 सम्मेलन में राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन शामिल नहीं होंगे। पुतिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा कि राष्ट्रपति पुतिन भारत में सितंबर में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए यात्रा की योजना नहीं बना रहे हैं। फिलहाल उनका मुख्य जोर एक विशेष सैन्य अभियान पर है।

दरअसल, भारत में इस समय जी-20 शिखर सम्मेलन की तैयारियां जोरों से चल रही हैं। सम्मेलन को लेकर भारत ने सभी जी-20 सदस्य देशों, आमंत्रित देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के नेताओं को निमंत्रण भेजा था। अमेरिका सहित कई राष्ट्राध्यक्षों

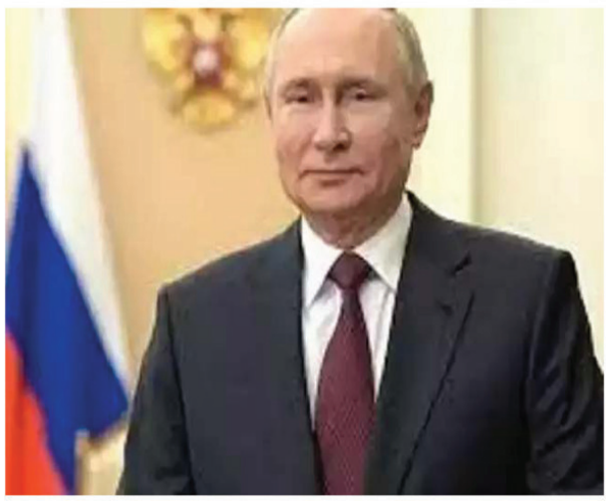

की ओर से सम्मेलन में भारत जाने की पुष्टि हो चुकी है, किन्तु इस बात की पुष्टि नहीं हो पा रही थी कि पुतिन शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे या नहीं। यह समूह दुनिया की प्रमुख बीस विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर सरकारी मंच है। ये बीस देश वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85 फीसदी, वैश्विक व्यापार का 75 फीसदी से अधिक और विश्व जनसंख्या का लगभग दो-तिहाई प्रतिनिधित्व करते हैं। इस समूह में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूके, अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) शामिल हैं।

नेपाल ने सोना तस्करी केस की जांच में इंटरपोल के जरिये भारत, हांगकांग, चीन से मदद मांगी

काठमांडू। नेपाल के केन्द्रीय अनुसंधान ब्यूरो (सीआईबी) ने चीन के नागरिकों के हांगकांग से एक क्विंटल सोने की तस्करी कर नेपाल के रास्ते भारत में भेजे जाने को लेकर इंटरपोल की मदद ली है। नेपाल की इंटरपोल शाखा ने हांगकांग, चीन और भारत की इंटरपोल शाखा से इस केस से जुड़े लोगों के बारे में जानकारी साझा करने को कहा है।

सीआईबी की प्रमुख एआईजी किरण बज्राचार्य ने बताया कि इस केस में त्रिदेशीय नेक्सस दिख रहा है। हांगकांग से चीन के नागरिकों द्वारा सोने की खेप भेजा जाना। नेपाल को ट्रांजिट के रूप में प्रयोग करना और नेपाल से सोने की खेप को भारत भेजना। बज्राचार्य ने कहा कि इस तस्करी के पूरे नेक्सस का पता लगाने के लिए बीजिंग के इंटरपोल सहित हांगकांग के सब डिविजन ऑफिस तथा भारत के नेशनल सेंट्रल ब्यूरो (एनसीबी) से पत्राचार किया गया है।

सीआईबी प्रमुख ने बताया कि हांगकांग से फर्जी कंपनी बनाकर वहां से ब्रेक शू के जरिए नेपाल में सोने की तस्करी की

जाती रही है। हांगकांग से उस कंपनी से संबंधित लोगों के बारे में जनकारी मांगी गई है। उल्लेखनीय है इस केस में नेपाल में अब तक चीन के 12 नागरिकों की गिरफ्तारी हुई है। इन नागरिकों के पास भारत के आधार कार्ड मिलने से खुफिया एजेंसियों के कान खड़े हो गए हैं। इस तस्करी से जुड़े कुछ भारतीय मूल के व्यापारी यहां से फरार हो गए हैं।बताया गया है कि पकड़ी गई खेप के अलावा हांगकांग से आया करीब 733 किलोग्राम सोना नेपाल के रास्ते भारत पहुंच चुका है। नेपाल में जिस फर्जी कंपनी के नाम पर सोने की खेप मंगवाई जाती थी उसके कस्टम और एक्सपोर्ट इम्पोर्ट कागजात में पिछले तीन महीने में 1700 किलोग्राम सामान मंगवाए जाने का रिकार्ड है। अब तक पकड़े गए आरोपितों में सभी ने सोना को भारत में भेजे जाने की बात स्वीकारी है।

सीतारमण ने ब्रिटेन की व्यापार मंत्री से निवेश और एफटीए पर की चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को ब्रिटेन की व्यापार मंत्री केमी बडेनोच से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय निवेश और मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर चर्चा हुई। वित्त मंत्रालय ने एक्स पोस्ट पर कहा कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और ब्रिटेन की व्यापार मंत्री केमी बडेनोच की यहां मुलाकात हुई। दोनों नेताओं ने विचारों का आदान-प्रदान किया। बैठक के दौरान दोनों मंत्रियों ने आपसी हितों के द्विपक्षीय निवेश और व्यापार मुद्दों पर चर्चा की।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

प्रिगोझिन की मौत के एक दिन पहले रूस के उप रक्षामंत्री के लीबिया में वैगनर लड़ाकों से मिलने की खबर

मॉस्को। रूस में व्लादिमिर पुतिन के खिलाफ बगावत करने वाले निजी सेना वैगनर के मुखिया येवगेनी प्रिगोझिन की मौत की गुत्थी सुलझने का नाम नहीं ले रही है। अब यह जानकारी सामने आई है कि प्रिगोझिन की मौत के एक दिन पहले लीबिया में वैगनर लड़ाकों से रूस के उप रक्षामंत्री यूनुस बेक येवकुरोव मिले थे।

रूस की राजधानी मॉस्को के उत्तर में एक निजी विमान के

लीबिया में वेगनर लड़ाकों के साथ रूसी उप रक्षा मंत्री की बैठक की बात सामने आ रही है। बैठक की जानकारी रखने वाले लीबिया के एक अधिकारी के अनुसार बेंगाजी में हुई बैठक में रूस के उप रक्षा मंत्री यूनुस-बेक येवकुरोव ने मंगलवार को पूर्वी लीबिया के कमांडर खलीफा हफ्तार से कहा कि वैगनर के लड़ाके एक नए कमांडर को रिपोर्ट करेंगे। साथ ही आश्वस्त किया कि वैगनर लड़ाके देश में रहेंगे लेकिन मॉस्को के नियंत्रण में रहेंगे। जून में हुए विद्रोह के बाद एक सैन्य बैठक होना यह संकेत था कि मॉस्को का इरादा वैगनर समूह को छोड़ने का नहीं है। अब जब प्रिगोझिन की मौत हो गई है तो वैगनर और उसके द्वारा पूरे यूरोप, मध्य पूर्व और अफ्रीका में रूस के लिए बनाए गए सैन्य अभियान का भाग्य अधर में लटक गया है। हालांकि, वैगनर ने खुद को स्थापित करने के लिए यूक्रेन में कई बड़ी लड़ाइयां लड़ी हैं। उसने सीरिया, लीबिया, मध्य अफ्रीकी गणराज्य और माली में गृहयुद्ध लड़े और विद्रोह भी किया। इस दौरान उसने सोने की खदानों और तेल क्षेत्रों पर भी कब्जा किया।